मनोजमञ्जरी

श्रीगणेशायनमः ।

कवित्त ।

रोहनीरमन की मरीची सी सुखद सीरी सोहिनी सरस महामोहिनी के थल सी । श्रीपति सुकबि बाल रवि के किरिन ऐसी मदन मुकुर सी अमल गङ्गाजल सी ॥ ग्वालि गरबीली तेरे गात की गुराई चपलानि की निकाई ऐसी लागत सहल सी । माखन महल सी पराग के चहल सी गुलाब के पहल सी नरम मखमल सी ॥ १ ॥

गोरी गरबीली उठी ऊंघत उघारे गात देव कवि नील पट लपटी कपट सी । भानु की किरिन उदैसान कन्दरा तें छूटि शोभ छवि कीनी तम तोम पै दपट सी ॥ सोने की सलाका स्याम पेटी तें लपेटी कढ़ि पन्ना तें निकासी पोखराज के झपट सी । नील घन तड़िता सु धाय धुंध धूंधर तें धाय कर धसी दावा पावक लपट सी ॥ २॥

किरिन सी कढ़ि आई अङ्गना उघारे गात

कवि पजनेस छैल छिति पै छहरि गो। उझकि झपाक मुख फेर प्यारे रुख ओर हेरि हरि हरखि हिमञ्चल पै अरिगो ॥ आधो मुख मलत अबीर तें मुकेस हाय नख रेख चिन्हित उरोजन पै भरिगो। मानो अर्ध चन्द्र को प्रकाश अर्ध चन्द्रिका पैं ह्वैके चन्द्र चूड़ चन्द्रचूड़ पै बगरिगो॥३॥

छहरै छबीली छटा छूटि छिति मण्डल पै उमग उजेरी महा ओज उजबक सी। कवि पजनेस कंज मंजुलमुखी के गात उपमाऽधिकात कल कुन्दन तबक सी॥ फैली दीप दीप दीप दीपति दिपति जाको दीपमालिका की रही दीपक दबक सी। परत न ताब लखि मुख महताब जब निकसी सिताब आफताब के भभक सी॥ ४॥

घूंघट खुलत उभै उलट परैगो देव उद्धम मनोज जग जुद्ध जूट परै गो। को कहै अलीक बात सो कहै सरोख सिव लोक तिहूं लोक की लुनाई लूटि परै गो। दैयन दुराय मुख नूतन तरैयन को मण्डल औ मटक चटक टूट परै गो।

तो चितै सकोच सोच मद मुरछा ह्वै एरी छोर
तें छपाकर छता सो छूटि परै गो ॥ ५ ॥

गहरी गुराई तें प्रथम चूरि चामीकर च-
म्पक के ऊपर वहुरि पांव रोप्यो है। तीसरे अ-
मल अरविन्द आभा बस करि हँस करि तड़िता
को तोयद में तोप्यो है ॥ भनत कविन्द तेरे
मान समै सौतें कहा सुरवनितान को गुमान
जात लोप्यो है। मेरे जान आली आज ऐंड़ भरो
तेरो मुख सौंहें तान भौंहें री कलानिधि पै
कोप्यो है ॥ ६ ॥

सुखमा के सिंधु को सिँगार के सुमन्दर तें
मथि के सुरूप सुधा सुख सों निकारे हैं। करि
उपचारे तासों स्वच्छता उतारे तासें सौरभ सो-
हाग श्री सुहास रस डारे हैं ॥ कवि रसरङ्ग
ताको सत जो निथारे तासों राधिका बदन बेस
बिधि ने सँवारे हैं। बदन सँवारि कै जो हाथ
धोय डारे सोई जल भयो चन्द कर झारे भये
तारे हैं ॥ ७ ॥

कोमलता कञ्ज तें गुलाब तें सुगन्ध लै कै
चन्द सों प्रकास लै कै उदित उजेरो है। रूप

रति आनन सों चातुरी सुजानन सों नीर लै निवानन सों कौतुक निवेरो है ॥ ठाकुर बिचारि कै बनायो बिधि कारीगर रचना निहारि कान्ह होत चित चेरो है। सोने सों सुरङ्ग लै सवाद लै सुधा को बसुधा को सुख लूटि कै बनायो मुख तेरो है ॥ ८ ॥

आनँद को कन्द वृषभानुजा को मुखचन्द लीला ही तें मोहन के मानस को चोरे है। दूजो तैसो रचिबे को चाहत बिरञ्चि नित ससि को बनावे अजौं मन को न भोरे है ॥ फेरत है सान आसमान पै चढ़ाय फिर पानिप चढ़ाइबे को बारिध में बोरे है। राधिका के आनन के सम ना बिलोकि बिधि टूक टूक तोरे पुनि टूक टूक जोरे है ॥ ९ ॥

अँग अरसौं हैं छवि अधरन सौं हैं चढ़ी आलस की भौंहें धरे आभा रति रोज की। सुकवि कलस तैसे लोचन पगे हैं नेह जिनमें निकाई अरुनोदय सरोज की ॥ आछी छवि छाकि मंद मंद मुसकान लागी विचल बिलोकि तन भूखन के फौज की । राजे रदमंडली कपोल

मंडली मे मानो रूप के खजाने पर मोहर मनोज की ॥ १० ॥

कैला भई कोयल कुरङ्ग बार कारे किये कूटि कूटि केहरी को लङ्क लङ्क दहलो। जरि जरि जम्बू नद मूंगा बदरङ्ग होत अंग फाट्यो दाड़िम त्वचा भुजङ्ग बदलो ॥ एरी चन्दमुखी तू कलंकी कियो चन्दहू को बोले ब्रजचन्द सो किसोर आप अदलो। छार मुण्ड डारै गजराज ते पुकार करै पुण्डरीक डूब्यो री कपूर खायो कदलो ॥ ११ ॥

हिमकर बैरी और हाथी औ हरिन हरि खञ्जरीट बैरी तेरो मीन औ मराल री। कदली कपूर फेर कोकिल की बैरिनि तू दाड़िम बँधूक बिम्ब बैरी है सेवार री ॥ चम्पा सम्पा चञ्चरीक कीर कंबु हीरा लाल जमुना औ सौति बैरी कुन्दन औ व्याल री। एते सबै बैरी तेरे एक हितू श्याम तेरे श्यामहूं ते बैर तेरो ह्वै है कौन हाल री ॥ १२ ॥

सुखमासदन भूरिभूषित बदन जाको सोहत सलोनो चारु चन्दहू तें चोखो सो। छाड़ि

कुंज मंजु घेरि रहैं भौंर पुंज पाय अङ्ग वारो सौरभ समूह अनजोखो सो ॥ बचन बिलास वेस जाको हनुमान कहै रातो दिन रहत पियूषहू पै रोखो सो । छवि सों अपार बैठी भीतर अगार तऊ वार वार होतो वीर बीजुरी को धोखो सो ॥ १३ ॥

सवैया ।

मद मैन सों यों अलसानी लसै जनु जागी भले भरि जामिनी है । मृदु बैन सुनै हनुमान कहै कहा कोकिल मंजु कलामिनी है । चकचौंध सी लागै लखे अँखियां तब कैसे कहौं रति कामिनी है ॥ परजंक पै सोहै सोहाग भरी यों मनो थिर ह्वै रही दामिनी है ॥ १४ ॥

ललना मुख इन्दु तें दूनो लसै अरविन्द वसै चख वार सी लै । मुसकानि मनोहर ज्योति महा कहि मिश्र जुबान सुधारसी लै ॥ तन ओप करै दुति चम्पक लोप सची सकुचै प्रति पारसी लै । कहि आवै न रूप सिपारसी यातें दिखावै लला कर आरसी लै ॥ १५ ॥

छूटी चिकैं परी प्यारी जहां परजंक तें फैलि

रही प्रभा भूपर। लै बरजोरी करी पजनेस बसीकरसी तसवीर वधू पर॥ हा सखी पीन पयोधर पै नख लागे लला ललचात तिहूं पर। मानो खराद चढ़ी रवि की किरिनैं उड़ी आन सुमेर के ऊपर॥ १६॥

चन्द कलङ्की कहा करिहै सर कोकिल कीर कपोत लजाने। विद्रुम हेम करी अहि केहरि कञ्जकली औ अनार के दाने॥ मीन सरासन धूम की रेख मलूक सरोवर कंबु भुलाने। ऐसी भई नहिं है जग में नहीं होयगी नारि कहा कवि जाने॥ १७॥

जासु की दीपति दीप तें सौ गुनी दामिनि कुंदन केसरी आइका। काम की खानि सदा मृदुबानि सनेह छकी छिति में छवि छाइका॥ अङ्ग अनूपम को बरनै सब अंगन पीतम को सुखदाइका। मानो रची छवि मूरति मोहिनी श्रीधर ऐसी बखानत नाइका॥ १८॥

गति मन्द यों जाकी मजा की लखै हँसी होत गयन्द के चाल की है। मुख हेर कै चन्द

लजोई रहै रुचि को कहै कछु कमाल की है ॥ हनुमान नखावली पै तिय के अवली परै फीकी प्रवाल की है । दवि दामिनी जात प्रभा निरखे कितनी छवि मंजु मसाल की है ॥ १६ ॥

को रति है अरु कौन रमा उमा छूटी लटैं निचुरै गुंदी मोती । हाय अनूठे उरोज उठे भये मैन तुठे अरु और है को ती ॥ त्यौंकवि ग्वाल नदी तट न्हाय खड़ी लड़ी रूप की सुन्दर ज्योती । मोरति नार मरोरति भौंहन चोरति चित्त निचोरति धोती ॥ २० ॥

कवित्त ।

कोऊ कहै है कलङ्क कोऊ कहै सिंधुपङ्क कोऊ कहै छाया है तमोगुन के भास को । कोऊ कहै मृगमद कोऊ कहै राहुरद कोऊ कहै नीलगिरि आभा आस पास को ॥ भञ्जन जू मेरे जान चन्द्रमा को छील विधि राधे को बनायो मुख सोभा के बिलास को । ता दिन तें छाती छेद भयो है छपाकर के वार पार दीखत है नीलिमा अकास को ॥ २१ ॥

खरी खराड तीसरे रँगीली रंगरावटी में तकि

ताकी ओर छकि रह्यो नँदनन्द है। कालिदास वीचन दरीचन ह्वै झलकत छवि की मरीचन की झलक अमन्द है॥ लोक देखि भरमै कहां धौं यह घर में सु रगमग्यो जगमग्यो ज्योतिन को कन्द है। लालन की माल है कि ज्वालन की जाल कि चामीकर चपला कि रबि है कि चन्द है॥ २२॥

प्यारी तुव अङ्गनि की उमगी सुबास सोई लागी हरि चंदन में इन्दरा के घर में। मालती लताबन में सेवती गुलाबन में मृगमद घनसार अम्बर अगर में॥ उछल अछेह छबि छाई पुनि छिति पर देखियत सोई मन मानिक मुकर में। चंपक बनी में चिरागन की अनी में चारु चंद की कला में चपला में चामीकर में॥ २३॥

वह जो प्रकाशमान लागत बिभावरी में ये तो आठो जामहूं बिमल ज्योति धारिये। वाके अङ्क राजत कलङ्क रङ्क राव सदा याके हृदये में बसै मोहन मुरारिये॥ वाको बपु छीन दिन-प्रति अवलोकियत याके अंग पूरन प्रभा सों प्रेम प्यारिये। कहै कबिराम छबिधाम प्रान

प्यारी ये जू राधे मुखचंद पै शरद चंद वारिये ॥

सुन्दर बदन राधे सोभा को सदन तेरो बदन बनायो चारवदन बनाय कै। ताकी रुचि लेन को उदित भयो रैनपति राख्यो मति मूढ़ निज कर बगराय कै ॥ कहै कवि चिंतामनि ताहि निसि चोर जानि दियो है सजाय पाकसासन रिसाय कै। यातें निसि फेरि अमरावती के आस पास मुख में कलङ्क मिस कालिमा लगाय कै ॥ २५ ॥

जो पै मुख प्यारी को बताऊं चारु चंद सो मैं तो पै रहै रातही मैं ज्योतिन के जोहिनी। याको तो दिवाकर के तेजहू तें तेज तेज जो पै कहूं भानु तो न रैन होय मोहिनी ॥ ग्वाल कवि याते मुख सुखमाहिं मुख है जू सो मुख सो सोई अति आनँद की बोहिनी। आंख ते न देखी सुनी कान ते न ऐसी जोति जैसी वृषभानु की दुलारी मनमोहिनी ॥ २६ ॥

सोभा पुञ्ज सानी राधा रानी को सुमुख देख चौक चतुरानन सुचित्त में सराहै है। मेरी सृष्टि रचना में चारु एक चंद्रमा है देखो सम है

न याके बुद्धि यों उमाहै है ॥ कहै तोषहरि तौले तबहीं तुला पै दोऊ एक तो अचल दूजो नभ अवगाहै है। सोच सरमाय कै सु मानो तारो तोमन को नाय नाय तामे ताहि तुल्य कियो चाहै है ॥ २७ ॥

कामिनी मदन गज गामिनी बिलोकि आई दामनी न पाई है गुराई गोरे गात सी। बिधु मानसर तें सरद ससिकर तें रसेस के मुकर तें अधिक अवदात सी ॥ श्रीपति सुजान परखत हरखत मन नैनन को सितासी नवल नव बात सी। जाही हारि जात सी जुही बिदारि जात सी बिकास बारिजात सी सुवास पारिजात सी ॥

टारि जात अलि की नेवारिन के आरि जात लागि जाति सहज बयारि जाके तन की। श्री· पति सुजान जाही जूथिका बिदारि जाति म- हिमा बिगारि जात खारिजात बन की। झारि जाति मालती गुलाब मद मारिजात सौरभ उ- तारि जात केतकी सुघन की। बारिजात तगर अगर धूप हारि जात राह पारिजात पारिजात के सुमन की ॥ २९ ॥

वारि जात वारि जात पारिजात पारिजात मालती विदारि जात सौधन की झरी सी। माखन सी मैन सी मुरार मखमल सम कोमल सरस तरु फूलन की छरी सी॥ गहगही गरुई गुराई गोरी गोरे गात श्री पति बिलौर सीसी ईंगुर सौं भरी सी। बीज थिर धरी सी कनक रेख करी सी प्रवाल दुति हरी सी ललित लाल लरी सी॥ ३०॥

गोरी महा भोरी तेरे गात की गुराई देखि दिन दिन दामिनी की छाती होति खुधा सी। श्रीपति कमल की कसानी मखमल की बटखसानी लाल की ललाई लागे मुधा सी॥ सोम निदरत सी प्रकाश को हरत जोम रोम रोम छुरत छपायन की छुधा सी। सुखमा को ऐन मद शीतल को चैन मई पीवन को मैनमई नैनन को सुधा सी॥ ३१॥

एहो ब्रजराज एक कौतुक बिलोको आज भानु के उदै में वृषभान के महल पर। बिनु जलधर बिनु पावस गगन धुनि चपला चमंकै चारु घनसार थल पर॥ श्रीपति सुजान मन

मोहन मुनीसन को सोहै एक फूल चारु चंचला अचल पर। तामें एक कीर चोंच दाबे है नखत जुग शोभित है फूल श्याम लोभित कमल पर ॥ ३२ ॥

घनसार दीपक सिखा सी चपला सी चारु चंपक लता सी नव भानु की विभा सी है। नैनन चकोरन को सींचत सुधा सी कलानिधि की कला सी मुख सुखमा प्रकासी है ॥ लखि ललचान्यो रूप करत बखान जान्यो श्रीपति सुजान काशी नगर निवासी है। शंभु सालिका सी सुरपाल बालिका सी बाल माल लाख कासी हरतालिका उपासी है ॥ ३३ ॥

चोंथतें चकोरे चहुं ओरे जानि चन्द्रमुखी रही बचि डरनि दसन दुति दम्पा के। खोलि जाते बारही बिलोकि बेनी बनिता की गुही जो न होती तो कुसुम सर कम्पा के ॥ राम जी सुकबि ढिग भौंहें ना धनुष होतीं कीर कैसे छाड़ते अधर बिम्ब झम्पा के। दाख के से झोरा झलकत ज्योति जोबन की भौंर चाटि जाते जो न होती रंग चम्पा के ॥ ३४ ॥

वदन सुधा करै उघारत सुधा करै प्रकाश वसुधा करै सुधा करै सुधा करै । चरन धरा धरै मृनालज धरा धरै सु ऐसे अधरा धरै ये विम्ब अधरा धरै ॥ पैने दृग हा करै निहारत कहा करै सु बेनी कविता करै त्रिबेनी समता करै । सुरति में सी करै सुमोहनै बसी करै बिरञ्चि हू जसी करै सु सौतिन मसी करै ॥ २५ ॥

मदन तुका सी किधौ राधे कुन्दका सी मनो कञ्ज कलिका सी कुच जोरी हबिका सी है । गांसी भरी हांसी सुखमासी मोह फांसी मद जोवन उजासी नेह दीया की सिखा सी है । जाकी रति दासी रस रासि है रमा सी कौन तिलोत्तमा ऐसी रूप सदन विकासी है । काम की कला सी चपलासी कबिनाथ किधौ चम्पक लता सी चारु चन्द्रिका प्रकासी है ॥ २६ ॥

कुन्दन से अङ्ग नव जोबन तरङ्ग राजै उरज उतंग लङ्क छीन छवि देत है । बादले की सारी दर दामन किनारीदार बदन की ज्योतिमानो हूमन ससेत है ॥ सोमनाथ निरखि सुजान अँगिरान प्यारी दोऊ कर जोरि मुख मोरि

हित चेत है ॥ मदन मलाह के सलाह सों उछाह भरी मानो रूप सागर को ठाढ़ी थाह लेत है ॥ ३७ ॥

आनन की उपमा जो आनन को चाहै तऊ आन न मिलैगी चतुरानन बिचारे को। कुसुम कमान के कमान को गुमान गयो करि अनुमान भौंह रूप अति प्यारे को ॥ गिरधर-दास दोऊ देखि नैन वारिजात बारिजात बा-रिजात मान सर वारे को। राधिका को रूप देखि रति को लजात रूप जात रूप जातरूप जातरूप वारे को ॥ ३८ ॥

गोरी के हथोरी शिव कवि मेहँदी के बिंदु इन्दु ती को गयो जाके आगे लगै फीको है। अँगुठा अनूप छाप मानो ससि आयो आप कर कंज के मिलाप पात तजि हीको है॥ आगे और आंगुरी अँगूठी नीलमनि जुत बैठो मनो चाय भरो चेटुआ अली को है। दबि कै छला सों कोमलाई सों ललाई दौरि जीतत चुनी को रँग छोर छिगुनी को है ॥ ३९ ॥

उज्जल अखण्ड खण्ड सातयें महल महा-मण्डल चवारो चन्दमण्डल की चोटहीं। भीतरहू लालन की जालनि बिशाल जोति बाहिर जुन्हाई जगी जोतिन के जोटहीं॥ बरनति बानी चौंर ढारति भवानी कर जोरे रमा रानी ठाढ़ी रमन की ओटहीं। देव दिगपालनि की देवी सुखदाइन ते राधा ठकुराइन के पायन पलोटहीं॥ ४० ॥

देव महा सुन्दरी त्रिलोक सुन्दरी के दृग वृन्दारक वृन्दनि को मन्दर उदार होत। लागत चरन सरनागत नरन अनुरागत अरुन रूप उपमा अपार होत॥ देखि देखि दीन दुखी होत वसुधाधिप बुधाधिपति ऊपर सुधा सहस्र धार होत। एक ओर कुटिल कटाच्छ ही की कोर कोटि लच्छ रच्छ ससपच्छ जरे लखि छार होत॥४१॥

आई बरसाने तें बुलाई बृषभानुसुता निरखि प्रभानि प्रभा भानु की अथै गई। चक्र चकवानि के चुकाए चक्र चोटिन सो चौंकत चकोर चकचौंधी सों चकै गई॥ नन्द जू के नन्द जू के नैननि अनन्द मई नन्द जू के म-

न्दिरनि चंद मई कै गई। कुञ्जनि कलिनमई कुञ्जन अलिनमई गोकुल की गलिन नलिनमई कै गई॥ ४२॥

गोरे मुख गोहरें सु हँसत कपोल बड़े लोचन बिलोल बोल लोने लीन लाज पर। शोभा लागे लाल लखि शोभा कवि देव छबि गोभा सों उठत रूप शोभा के समाज पर॥ बादले की सारी दरदासन किनारी जगमगी जरतारी झीनी झालरि के साज पर। मोती गुहे कोरनि चमक चहुं ओरनि ज्यों तोरनि तरैयन की तानी द्विज-राज पर॥ ४३॥

फटिक सिलानि सों सुधार्यो सुधा मन्दिर उदधि दधि को सो अधिकाइ उमगै अमंदु। बाहिर तें भीतर लौं भीति ना दिखैये देव दूध को सो फेन फैल्यो आंगन फरसबंदु॥ तारा सी तरुनि तामें ठाढ़ी झिलमिल होति मोतिन की जोति मिल्यो मल्लिका को मकरन्द। आरसी से अम्बर में आभा सी उँज्यारी लागै प्यारी राधि-का को प्रतिबिम्ब सो लगत चन्द॥ ४४॥

जोतिन के जूहनि दुरासद दुरूहनि प्र-

काश के समूहनि उजासनि के आकरनि । फटिक अटूटनि महारजतकूटनि मुकतमनि जूटनि समेटि रतनाकरनि ॥ छूटि रही छीन्ह जग लूटि रही दुति देव कमलाकरनि फूटि दीपति दिवाकरनि । नभ सुधासिंधु गोद पूरन प्रमोद ससि सामुद विनोद चहूं कोद कुमुदाकरनि ॥ ४५ ॥

छीर की सी लहरि छहर गई छिति मांह जामिनी की ज्योति भामिनी को मानु ऐंठो है। ठौर ठौर छूटत फुहारे मानो मोतिन के देव वनु पाको सनु काको न अमैठो है ॥ सुधा को सरोवर सो अम्बर उदित ससि मुदित मराल मानो पैरिबे को पैठो है। बेल के बिमल फूल फूलत समूल मनो गगन ते उड़ि उड़गन जनु बैठो है ॥ ४६ ॥

मांग सिँदुरारी तन तरुन अरुन जोति बेंदी रवि बन्यो छवि पुंज उघरतु है। सघन जघन कुच सकुच दुवीच दव्यो उचकि उचकि लङ्क लचक्यो परतु है ॥ जोबन बनक बने तन में तनक देव भूषन कनक मनि आभा उभरतु है।

बेसरि को मोती सुधाबिन्दु सो चुवत मुख इन्दु सो उवतु बूड़ि बूड़ि उछरतु है ॥ ४७ ॥

आनन समान प्यारो कहै कवि हनुमान उपमान आनन मो चित्त में पगत है। सारस को सारस न देखियतु आठो जाम आरस मैं आरस सुभांइ उमगत है। अूपर न भूपर न बिरच्यो बिरञ्चि दूजो भा न ऐसो भान सैं महान जो जगत है। छिप्र बसुदाकर सु मोच्यो जसुदाकरसुधाकरसुधाकर सुधाकरलगत है ॥४८॥

कैधों सप्तरिषिन के मखन की सिद्धि पुञ्ज हैस हंस चखन के मनिन की जोत है। चपल चमक की चहूंधा चक चौंधें कौंधे नेक हँसे दाड़िम दसन दुति होत है। जगरमगर जागे सगरबगर चारु चाहि चाहि चक्रित चकोरन की गोत है। दुगुनो दिनेस तें चतुरगुनो चन्दहू तें हनुमान प्यारी तेरो आनन उदोत है ॥ ४९ ॥

पलका तें पद भौन भूमि पै धरत नेक झलका परत ततकाल पग तल मैं। नाइनि गुलाब झांवों झांवत जो, हरे झांई परे आनन भँवाई परे बल मैं ॥ हनुमान कसमीर आदि तैं अलेपतहू जबी

रहै आपने ही अंग परिमल मैं । सुरजा में नाग-
जा में नागजा में जलजामे सुकुमार देखी वृष-
भानुजा सकल मैं ॥ ५० ॥

बांकी चारु चन्द्रिका बिराजै भाल बांकी
खौरि वांकी भौंह चञ्चल चितौन चख बांकी है ।
वांकी नकबेसरि मधुर मुसक्यानि बांकी कहै
हनुमान बांकी अधरललाकी है ॥ सुख रासि
भूखन सिंगार चन्द्रकला कीन्हे बांकी परजङ्क
बैठी मूरि करुना की है । झुकि झुकि झूमि झूमि
झांकी करैं देव वधू कहैं अनुपम सिरी राधिका
की झांकी है ॥ ५१ ॥

कर जोरे किन्नरी तिलोत्तमा तँमोर लीन्हे
चौंर चतुराननी करत छवि छाकी है । छत्र लै
नछत्रपतिनी हूं नचै रंभा ठाढ़ी मकर पताकी
वारी कलपलता को है ॥ जमलाना राधिका सी
कमला है हनुमान कौन कहै रसना फनेस हू
की थाकी है । तलातल वितल रसातल महातल
की अतल सुतल कीने पगतल ताको है ॥ ५२ ॥

अँमर अतर चोवा अँवर सो चुनि चुनि
ल्याइ सहचरी सोंधो जाति न्यारी न्यारी को ।

सुबरन संपुटनि आनी है रतन मनि पुहुप समूह देव आने वन क्यारी को ॥ मन्द हास सुन्दरी के भए सब मन्ददुति चन्दहू तें उदित अमन्द दुति प्यारी को। पूनो सो नखत जाल नूनो सो मसाल पुञ्ज सहजहीं दूनो दुति पून्यो की उज्यारी को ॥ ५३ ॥

सोने में सुरंग सब वैसई लसत अंग जग मग जोबन जवाहिर सो संग तास। रूप तरु कण्ठ काम कन्दुक से सोहैं कुच चन्द्रमा से आनन अमन्द दुति मन्द हास। सोभा की निकाई देव काम की निकाई हू ते नीके भए भूषन भ्रमर भ्रमैं आस पास। चौगुनी चटक तन चीर की चटक हू तें सौगुनी सुगन्ध तें शरीर की सहज बास ॥ ५४ ॥

चोवा सों चुपरि केशवेसरी सुरङ्ग अङ्ग केसरि उबटि अन्हवाई है गुलाब सों। अतर तिलौंछि आछे अम्बर लै पोंछि ओंछि छतिया अँगौछि हँसि हँसि रस भाव सों ॥ कटि मृगराज कैसी मुख है मयङ्क मानो तीखे दृग देव गति सीखी मृग साव सों । पैन्हे पीरो चीर चारु

चौकी पर ठाढ़ी भई चान्दनी सी प्यारी पै उँ-
ज्यारी महताब सों ॥ ५५ ॥

भोजन कै भामिनी भवन बीच ठाढ़ी भई चूनी मे चरन चारु चौकी रङ्ग मेज पर । पन्नन के पानदान पानन की बीरी भरि नीरी करि दीन्ही लीन्ही मन को मजेज पर ॥ फूलन के हार भरे भौंरन के भार देव आली पहिराए ते सो-हाए तन तेज पर । सौ सौ ससि को सो आस पास तें उदो सो करि आनि बैठी सीसा के म-हल सोंधी सेज पर ॥ ५६ ॥

सहज विलोकि फँसि जात मन कैसी होइ मन्द मुसुकानि वानी फूल से झरे परैं । द्विज वलदेव रंग भीने मे सहसगुनो जीवन को लाभ लहि हरखि हरे परैं ॥ सुचि सुकुमार प्रभा मार से सरल भई राजित सुगन्ध परिमल कितरे परैं। ससि सम आनन को जानन प्रमानन पै सानन विलोकि मृग कानन डरे परैं ॥ ५७ ॥

जाने भेद कविताई गौरव गहे रहत परम प्रसन्न मुख हास छवि छ्वै रह्यो । द्विज बलदेव कहैं कञ्चन लतासी चारु चन्द ज्यों उदित भ-

रिरूप रस च्वै रह्यो ॥ आलस कछुक अँगिराय भोलिसी करत बलित बसीकरन बीजबर व्वै रह्यो। आई है तरुनताई याहि तें उचौहें कुच सुबुधि सुगन्ध को प्रकाश अंग ह्वै रह्यो ॥ ५८ ॥

राजत रंगीली रंगभौन रसमाती तहां जागत झरोखन तें जोतिन को वृन्द है। ज्वालामुखी मन्दिर प्रसिद्ध सो दिखात वहां कैधौं स्वर्ग सैल की गुहा में प्रभा कन्द है ॥ भन रघुनाथ लोग लखत बिचारें मन तारागन चन्द है कि भानु है कि कुन्द है। चन्दहू तें दूनी दीप्ति कान्द सदा पूनी सम होत है न ऊनो सुख बाला बाल चन्द है ॥ ५६ ॥

मृदु मखतूल तूल कमल गुलाब फूल मखमल सेज पै सम्हारे पाय धरती। कच कुच भारन सों दर चलहारी वेग धारत में कज्जल महावर को डरती ॥ भनै रघुनाथ है स्वरूप सुख सोभा धाम निज मृदुता सों रति रम्भा को निदरती। अति सुकुमारी प्राणप्यारी रति रङ्ग समै कैसे प्राणप्यारे को निसङ्क अङ्क भरती ॥६०॥

सुन्दर सुरङ्ग नैन सोभित अनङ्ग रङ्ग अङ्ग

अङ्ग फैलत तरंग परिमलके। वारन के भार सु-
कुमारि को लचत लङ्क राजै परजङ्क पर भीतर
महल के ॥ कहै पद्माकर विलोकि जन रीझैं
जाहि अम्बर अमल के सकल जल थल के ।
कोमल कमल के गुलाबन के दल के सुजात
गड़ि पायन बिछौना मखमल के ॥ ६१ ॥

मारी नरतारी सीस भारी छबिवारी प्यारी
न्यारी जोति होति कछू रति सी छपाय जात ।
सुधि बिसराय ललचाय मुसुक्याय नाथ नेह रा-
पिबे को हिये भूमि सी नपाय जात ॥ हेम की
सी वेली अलबेली जो धरत डग कांपि जात
लङ्क उर सङ्कन कँपाय जात । दबि जात दा-
मिनि दबकि जात चंद शोभा तपि जात बाम
काम अंगनि समाय जात ॥ ६२ ॥

केसरि कलित पचतोरिया ललित लाल
लहँगा लसत लङ्क लोने पर घेरदार । जगमगे
जड़ित जड़ाऊ पग पायजेब पङ्कज प्रभनि प्रभा
पांवड़े गड़ेरदार। सदानंद सुंदर सघन घुघुरारे
कच कंचुकी पै डारे अहिकारे मनो फेरदार ॥
ऐंड़दार ऐननि मरोरदार तोरदार करत कजा
की कजरारे नैन कोरदार ॥ ६३ ॥

चंद प्रतिबिम्ब ऐसो जानि परै जाके आगे नाथ छवि आनन अनूप ब्रह्मरानी के। लोचन कुरंग जलजात मीन खञ्जन के रञ्जन रसीले मद भञ्जन भवानी के ॥ और सब अंग की नि-काई मैं कहां लों कहौं अंगन की जोड़ कौन राधा ठकुरानी के। प्यारी के चलत ऐसे लसत धरा में जैसे पांवड़े परत हैं बनात सुलतानी के ॥ ६३ ॥

जोवन उँजारी प्यारी बैठी रंग रावटी में सुख की मरीचैं वो दरीचैं बीच झलकैं। भूधर सुकवि बांकी भौंहैं मन मोहैं खरी खञ्जन सी आखैं मन रञ्जन वै पलकैं ॥ सीसफूल बेंदी बंदी बीरी और बंदन की चंदन की छवि हिये बीच बीच झलकैं। कोरवारी चूनरी चकोरवारी चि-तवनि मोरवारी बेसर मरोरवारी अलकैं ॥ ६४ ॥

भृकुटी तनी की लट नागिन फनी की देव प्यारे लखि नीकी लगै फूल्यो कंज फीको है। मैन कसनी को नैन बान की अनी को चोखे चैन रजनी को हौस हुलसन नीको है ॥ रूपरस नीको कहा रसा रमनी को गजगति गमनी को

सीव जीव मुरनी को है। बेनी बंद नीको रुख हास मंद नीको मुख चंदहू ते नीको वृषभान नंदनी को है ॥ ६५ ॥

गरव गुरज पै चढ़ाई तोप कोप करि सौतिन जखीरा कियो जोवन जमा को है। भनत कविन्द अभरन भार भारी भट नूपुर नगारे नौबतीन को झमा को है ॥ मैंन गढ़पति आगे लड़े नैन सैन दैकै छूटत कटाच्छ बान लागैं उर जाको है। हांको चहुघां को करि प्यारो लेन चाहै प्यारी तेरो रूप गढ़ ग्वारियर हू ते बांको है ॥ ६६ ॥

रात हरी चांदनी बिलोकिवे को रनिवास सगरी बुलाई मोद मन्दिर मैं भरि गो। रघुनाथ ता समै की सोभा की समाज देखि रीझि रही मोपै न बखान कछु करि गो ॥ घूंघट के खुलत दुलहिनी के आनन ते दसहू दिसान मैं प्रकाश ऐसो अरि गो। ढरिगो गुमान तम सौतिन के जी को भटू तारन समेत तारापति फीको परि-गो ॥ ६७ ॥

अङ्ग तेरो केसर सो करिहां केसरी कैसी

केसन की सर कैसे करि सकै को तमै । कहै कबि गङ्ग आछे छबि सों छबीले नैन नीलेज न लिन ऐसे नाहीं देखे होत मैं ॥ अहे हे अहीरी तू धौं इहौ कछु जानति है काके भाग औतरी है तो सी तेरे गोत मैं । तरुनी तिलक नन्द-लाल त्यों तिलक ताकि तो पर हौं वारौं तिल तिल कै तिलोतमैं ॥ ६८ ॥

कवि पजनेस पुन्य परम बिचित्र भूमि केतिक फनूस झाड़ जोतें जरै ज्वाला सी । करत प्रदोष ब्रत पूजन किसोरी गोरी ढेरें करि आरती उजेरें सील साला सी ॥ सुकुर नवीन तें निहारि वर बिन्द नीको भिदुरावली सदीपदान वहु बाला सी । मानो व्योम गंगा की गँभीर धीर धरा धसी दीपक चढ़ावे देवकन्या दीप माला सी ॥ ६९ ॥

रङ्ग भरी रस भरी सुन्दर सुगन्ध भरी सुख भरी पैन ऐन नैन मैनका सी है । दर्पन सी देह तैसी नेह की नई नवेली ब्रज बनितान ऐसी सुरपुर बासी है ॥ आलम सुकबि लोने सोने के सरोजहीं तें फूलही के भारे भर पान की लता-

सी है। चन्दन चढ़ाय चारु चांदनी सी छाय रही चन्द्रमा सी मोती सी चमक चन्द्रमा सी है ॥ ७० ॥

चारु मुख चन्द ते अमन्द कला दीपति है रूप सुधा वृन्दन के वुन्द फुटि के रहे। चिरगंध गलित मदन्ध अन्ध चञ्चरीक मन्दिर के अन्दर चहूंधा जुटिके रहे ॥ घूंघट के पट में लपेट रह्यो जात जाल सौतिन विसाल विष घूंटि घूंटि के रहे। एक छिन अच्छन छबीली छबि देखनि को गैलनि में छोह भरे छैल छुटि के रहे ॥ ७१ ॥

अङ्ग नई जोति लै बरङ्गनो विचित्र एक आंगन में अङ्गना अनङ्ग कैसी ठाढ़ी है। छबि की सी उजियारी गोरे तन सेत सारी सौतिन के माल सों जुन्हैया जनु बाढ़ी है ॥ आलम सो आली वनमाली चल देख द्युति कनक सुगढ़ की सी रूप गुन गाढ़ी है। देह की दमक वाके चीर की चमक मानो छीरनिधि मथि कैधों चन्द मथि काढ़ी है ॥ ७२ ॥

सोरह कला को चन्द पूरन मुखारविन्द सोरह सिङ्गार किये सोरह वरस की। आभरन

बारह कनक बानी बारह की बारहो चरन चूमि चोप कंज रस की ॥ आठो दन्त चौकनसों आठो अङ्ग हीरा हार आठहू बरंगना सो बिधिना सरस की। चार खग चार मृग चार फल कीसी छबि चार भुज आरत निकाई है दरस की ॥७३॥

जमुना के आगमन मारग में मारुतन भौंरन को भीरनि पट से लखि पाये हैं। सन्तन सुकबि सुख खान पदमिनी तेरे रूप के तरङ्गनि अनंग दरसाये हैं ॥ बाहर काढ़न कहैं तोसों ते अयानी कौन लैहै बदनामी घेर घर घर छाये हैं। पट की लपट लपटति ता दिना ते आज मनो उन गलिन गुलाब छिरकाये हैं ॥ ७४ ॥

हारहो के भार उर भार ना सँभारे नारि अलप अहार रस बस के अहार है। सीरेते सिरात ताते ताती ह्वैह्वै जाति डोलै पौन के परस प्यारी पान की सी डार है ॥ कहै कबि आलम न रतिहू न रम्भा औन मैन का घृताची ऐसी रूप को अपार है। बानिक बिचित्र और चित्र मैं न ऐसी कोऊ चित्र लिखि पूतरी जियाई करतार है ॥ ७५ ॥

लहलही लहरैं लुनाई की उदित अंग उचके कुचन कैसी कंचुकी यों गचकी । मन्द पग धरति मरु करि गयन्द गति चन्द्रमुखी चांदनी चकित चाह सचकी ॥ कैसे घनश्याम वह बाम वन धाम आवे घाम के लगे ते कामलता जाति पचकी । अति सुकुमार सिसकत भार हारन के बारन के भार कई बार लंक लचकी ॥ ७६ ॥

पलिका ते पांय जो धरति धाम धरनी में छाले परे पग मांझ पैंड़के गवन तें । लीनै जो तमोल तौ तो ताप आवै बलि भद्र होत है अरुचि पान पीक अचवन तें ॥ बारन के भार और चीरहू के तम भार यातें नहीं बाम होती वाहिरे भवन तें । लागे जो समीर तौ तो पूर परै सौतिन के फूल ज्यों उड़त अलि पंख के पवन तें ॥ ७७ ॥

चरन धरै न भूमि विहरै जहांही तहां फूले फूल फूलन बिछाई परजङ्क है। भार के डरन सुकुमार चारु अंगन में अंग ना लगावै राज केसर को पङ्क है ॥ कवि मतिराम लखि बातायन वीच मुख आतप मलीन होत बदन मयंक

है। कैसे सुकुमारि वह बाहिर बिजन आवै बि-
जन बयारि लगे लचकत लङ्क है ॥ ७८ ॥

इति छबि वर्णन ॥

—※※※—

अथ केलि कला वर्णन ॥

नथ की चलन कल किङ्किनी कलन हिय
हार की हलन छबि उरज उतंग की। लंक की
लचक परजंक की मचक इत उत की हचक रंग
रचक सुसंग की ॥ स्वेद की झलक भरि नेह की
छलक कबिराम जू ललक कोक मदन बिहङ्ग की।
जोम की जमक बिपरीत की गमक तहां तिय की
हुमक अरु कुमक-अनङ्ग की ॥ १ ॥

दम्पति सुरति बिपरीत में रमत सब कोक
की कलानि के अखिल अवधारे हैं। भनत क-
बिन्द बिहसत बतरात सतरात अंग अंगन अनंग
रंग भारे हैं। उचटी ललाट तें समेत बेंदी मांग
मोती पर्यौ केस पासन इमि उरझारे हैं। बदन
नछत्र पति छत्रपति हुकुम ते कूदे मनो तम पै
सितारे बांधि तारे हैं ॥ २ ॥

रति बिपरीत रंग रसिक बिहारी संग अंग
देखे प्यारी के अनंग हरषत है। आसन बिधान

के विवेकन बलित चाल त्यों हीं लाल कोक की कलानि करषत है ॥ भनत कबिन्द्र हार टूटे श्रम जल छूटे सौतिन को भीजत सोहाग सरषत है । मांग मोती माल छ्वै छ्वै श्याम पै सुढार गिरे इंदु मानो तम पर तारे बरषत है ॥ ३ ॥

प्यारी बिपरीत रति करै प्यारे पीतम सों दुहुंन के अंगन अनंग हेर हरखै । भनत कबिन्द वेनी पीठही पै परी डोलै पन्नगी सुबाहु हेम बल्लकी सो करखै ॥ नख रद खण्डन चतुर नारि चुंवन कै सीवी करै पीवै त्यों न सीवी प्रेम परखै । भाल ते उचटि स्वेदकन परै कुचन पै इंदु मानो ईस पै सुधा के बुन्द बरखै ॥ ४ ॥

सजल जलद पर दामिनी लसत कैधों कामिनी को रूप रतिपति सो हरत है । बदन सुरत पिय सुख सो जुरत कैधों कमल के फूल सों कलानिधि मिलत है ॥ मण्डन सुकवि श्रम स्वेद तें सलिल होत देह तें निकसि निज नेह पिगलत है । टूट टूट मोती सीस फूलते गिरत कैधों मेरे जान तरनि तरैया उगलित है ॥ ५ ॥

नीति रति कामहिं करति रस रीति तहां

प्रीतम ते दुहू रचि विपरीत रति है। मची सि-
सकार रसना की झनकार जहां संभु मुख च-
न्द्रमा की छवि छलकति है॥ कटि लफि लफि
लचकत कुच भारन सों हारन तें ओरै उर ओप
उलहति है॥ पीठ पर वेनी मृगनैनी के लुरत
मानो नागिनी सुमेरु के सिला पै लहरति है।६।

सांवरे रसिक रस वस विपरीत रची प्यारी
के लजीहैं नैन मन को हरत हैं। मन्द मन्द मे-
खला की धुनि सुनि दत्त कवि चेटुआ मरालन
के मन पकरत हैं। झूमती हैं अलकैं छबीली मुख
ऊपर यों मानो बाल व्याल सुधा चन्द ते भरत
हैं। टूट टूट श्रम जल बुन्द यों परत मानो कनक
लता तें मुक्ताहल झरत हैं॥ ७॥

फैलि रहे चहूं दिसि चिकुर समूह घन बर-
षत सलिल सुमन बुन्द भारी है। टूट उछलत
मुकताहल बलाक दल भूषन सबद मोर घोर
अनुकारी है॥ प्रफुलित गात सब ललित कद-
म्बन वदम्बन के अङ्ग इंदु वधू छवि धारी है।
आनँद वितान मई लता उलहत मानो प्यारी
विपरीत रति पावस निकारी है॥ ८॥

लचकै ललित लङ्क मचकैं उरोज ऊंचे हचकै हमेल तिय हियन परै परै। नैनन को चाप धरे मंद सुख सांस करै फिर फिर अङ्क भरे मिलत गरै गरै ॥ श्रीपति सुहात बारिजात से बदन पर रूप सरसात रूरें मुकता लरै लरै। मेरे जान कातिक को पूरन मयंक पर चहुंघां नखत माल गेरत हरै हरै ॥ ६ ॥

सौ करन प्रिया को बसी करन पी को श्रम सी करन सोचियत पति सुख भूल कै। मेखला के रव मान मेख लागे देवन के सुखदेव नूपुर झलक तैसे झूल कै ॥ श्यामा के लजौहैं नैन सोहैं श्याम नैनन के खुलत मुदित त्यों त्यों खुलत अतूल के। जान कै उदैज इंदु भासमान को समान कोस मानो होति इन्दीवर फूल फूल के ॥ १० ॥

छूटत लपट लपटत फिर छूट छूट थकत न दोऊ विहरत बड़ी बेर के। लङ्क लचकत अङ्क भरत निसङ्क परजङ्क पर राखि मुकताहल के ढेर के ॥ ता समै कहत संभु गोरी के गरे ते टूट छूट चलो सुरत करत फेर फेर के। कुच बीच अटको विराजत है हार मानो धसी गङ्गधार फेर सिखर सुमेर के ॥ ११ ॥

लागी है रचन विपरीत रति बाल वह मानि के वचन निज वालम सपथ को। कोक की कलानि माहि सिव कवि प्रेम बस पूरन मनोरथ करति मनमथ को ॥ खसित उझकि झकि श्रवन समीपन तें जटित जवाहिर तखौना वहु गथ को। मानहुं अकास ते प्रजास कर आस पास टूट्यो टूक ह्वै है चक्र चन्द्रमा के रथ को ॥ १२ ॥

रगमगी सेज पर जगमगी शोभा चारु मनिमय मन्दिर मयूखन अथाह की। उदै नाथ तामे प्रान प्यारी अरु प्यारे लाल कोक की कलान केलि करत सराह की ॥ किङ्किनी की धुनि तैसी नूपुरन नाद सुनि सौतिन के बाढ़त खिखाद पीर दाहकी। त्रिभुवन जीति के उछाह की बजत मानो नौबत रसिली मनमथ पातसाह की ॥ १३ ॥

राधा बन माली संग करत अनंग ऐस घिरत चहूंघां बास फूलन के ढेर को। उदै नाथ सुकवि सोहाई सखी श्रौनन की किङ्किनी झनक काम नौबत के जेर की ॥ सौतिन को हार चारु लटको कुचन पर अटको यों डोलो करै शोभा

घन घेर की। पांत पांत ह्वै कर नछत्र सब देत मानो पुन्य हेतु पूरन प्रदच्छिना सुमेर की ॥ १४ ॥

रति विपरीत रची दम्पति गुपति अति मेरे जान मान भय मनमथ नेजे तें। कहै पद्माकर पगी यों रस रंग जामे खुल गे सुअंग सब रंगन अमेजे तें ॥ नीलमनि जटित सुबेंदा उच्च कुच पै पस्यौ है टूट ललित ललाट के मजेजे तें। मानो गिस्यो हेमगिरि शृङ्ग पै सुकेलि करि काढ़ि के कलङ्क कलानिधि के करेजे तें ॥ १५ ॥

बाल वैस बाल कोक रति में कुसल अति कीनी रति पति बिपरीत को उनोत है। वपुकर नाह सुक नैन मूंदे बलिभद्र देखें मुख सुख भयो मोद को उदोत है। एते में पकार दोऊ पानतान राखे भाखे मृदु मृदु बैन जैसी कूजत कपोत है। टूटो मोती मांग ते सिंदूर भरो राजै अति मानो तारा मण्डल ते तारापात होत है॥ १६ ॥

कवि पजनेस केलि मन्दिर चिराक माल पन्नन के परम प्रभा सी प्रभा फूटि फूटि। हीरन जटित जेवदार परजङ्क पर दोऊ रहे रति विपरीत सुख लूटि लूटि ॥ दुरद दुरेफन के दर ते

ढरत स्वच्छ सुमन गुलाब दल छबि जुत छूटि छूटि। प्रफुलित कंज दल दीरघ दृगी के मृदु मुख महताब तें परे से परें टूटि टूटि ॥ १७ ॥

कवि पजनेस केलि मधुप निकेत नव दर सुख दिव्य घरी घटिका लटी की है। विधु पर बेख चक्र चक्र रवि रथ चक्र गोमती के चक्र चक्रताक्रत घटी की है॥ नीवी तट त्रिवली बली पै दुति कोस तुण्ड कुण्डली कलित लोम लतिका बुटी की है। उपटी की टीकी प्रभा टीकी बधूटी की नाभि टीकी धूर्जटी की वो कुटी की संपुटी की है॥ १८ ॥

पौन सो उसास आसु बुन्द बारिधारा स्वेद बक पांति मोती लर कारी घटा केस है। नग पुखराज पन्ना मानिक औ नीलम की जगमग जोति जुरि धनुष सुरेस है॥ गरजन आहि कण्ठ ठनक मयूर धुनि चपला चमक टीका टिकुली सुवेस है। मेरे जान लाल आज प्रथम समागम सो प्यारी तेरे आनन पै पावस प्रवेस है॥ १९ ॥

बाम अलबेली श्याम सङ्ग केलि मन्दिर में ठानी विपरीत रीत सुखद इकान्त पाय। छूटे बार टूटे हार विलुलित भो सिँगार तन को न है सँभार छाको रति रङ्ग छाय॥ रसिक बिहारी प्रान प्यारी छवि प्यारी लगै चन्दन की बेंदी मिली गोरे मुख ना लखाय। मैन मदमत्त भुज भरत अनँग जङ्ग ज्यों ज्यों मद लाली चढ़ै त्यों त्यों उघरत जाय॥ २०॥

उकलि उछाहन सों ऊधम अनोखो नाधि बरसो अनंद मन सावन के सनपर। कहै पदमाकर कपोलन पै आरी ढुरि छाए कनसेद सोहाए उरजन पर॥ हारि मानि प्यारी विपरीत के बिहार लगि सिथिल सरीर रही सांवरे के तनपर। मांनहु सकेलि केलि कैतिको कलाकी करि थाकी है चला की चंचला की घोर घनपर॥ २१॥

श्याम की सहेली जौ लौं पीछे पान लेत रही तौ लौं बड़ भागी आगे अमृत अचै रही। काहे को सु छाड़े वाकी काम आस पूर भई गैल जात पायै लाल लालचना लै रही॥ अनत

अचिन्त पाये मोहन महल आये हिये सो लगाये दोऊ बांह बीच दै रहो। रस कुच लैहै रानी राधिका की सेज सजि बीच चोर ही को मोर बन्द बल कै रहो ॥ २२ ॥

कीनी जानु आसन में दुलही सरासन सी गरे भुज पास सो पकर छबीली को। कालिदास ललक लपेटि लेति दामिनि ज्यों श्याम घनद्युति तन गर गरबीली को। गहत कठोर कुच कुंकुम कनक रंग चुम्बन करत अङ्ग अङ्ग चटकीली को। मैन मद दूम दूस सूल सम तूस तूस लेत मुख चूम चूम राधिका रसीली को ॥ २३ ॥

आजु केलि मन्दिर में छके रंग दोऊ बैठे केलि करैं लाज छोड़ि रंग सो जहकि जहकि। सखी जन कहत कहानी हरिचंद तहा नेह भरी केकी कोर पिक सो चहकि चहकि ॥ एक टक बदन निहारै बलिहार लैलै गाढ़ भुज भरि लेत नेह सो लहकि लहकि। गरे लपटाय प्यारी बार बार चूमि मुख प्रेम भरी बातैं करै मद सो बहकि बहकि ॥ २४ ॥

आज कुञ्ज मन्दिर अनन्द भरि बैठे श्याम

श्यामा संग रंगन उमंग अनुरागे हैं। घन घह-
रात बरसात होत जात ज्यों ज्यों त्यों हों त्यों
अधिक दोऊ प्रेम पुञ्ज पागे हैं ॥ हरीचंद अलकैं
कपोलन सिमिटि रही बारि बुन्द चुअत अतिहि
नीके लागे हैं। भीजि भीजि लपटि लपटि स-
तराय दोऊ नील पीत मिलि भये एके रंग बागे
हैं ॥ २५ ॥

राधिका रसीली काम सील में जसीली गुन
गरब गसीली गरो गहत गुपाल को। कालि-
दास मृग मद पान पायकर रंग फूली फूल क-
लित ललित बनमालको ॥ पियत पियारी दोऊ
अधरन धरि धरि अधर मधुर मधुसूदन सुलाल
को। रंग रसहू में सब छके रंगहू में कर दै कर
कपोल मुख चूमै नंदलाल को ॥ २६ ॥

साजित पलंग पै उमंग भरी अँग २ रंग २
वसन सँवार पैन्हे सुच पै। मोतिन के छड़े पड़े
कानन मैं सानदार हीरन के हार बेना बन्दनी
सरूच पै ॥ ग्वाल कवि कहै तहां राजत रसिक
लाल ख्याल में बिसाल मन आयो अति उच
पै। नैन लगै प्यारी ओर ओठ लगै प्याले कोर

जोग लग्यो रति ओर हाथ लगे कुच पै ॥ २७ ॥

आये प्रान प्यारे पाये रहसि रसीली बाम दौरि सहि कीनी जोम जंग के झपट सी । रसिक बिहारी मुख चुमि गल बांह डारो पिय हिय लागी लोह चुम्बक चपट सी ॥ परसि कपोल प्यारी करि करि प्यार हेरे कसि भुज भरै सहि मैन के दपट सी । ज्यौं त्यौं सियराति गुलाबन की छुही सी छाती त्यों त्यों लपटाति तिय पावक लपट सी ॥ २८ ॥

सोये गुरुजन दो ए जागत हैं निस समै राखो बहराय तौ लों बातन बतर कों । कुचन के छुवे सब अंगहू थरथराय लोचन मुदित कीने अम्बर पतर कों । बली भो बलित यों छलित छूटी रस रूप भीनी रति रंग पिय सुन्दर सतर कों । कैधों खगराज सेज छीरद के बीच पर धरी व्याल छौनन की कुण्डली कतर कों ॥ २९ ॥

कुन्दन की छरी आबनूस की छरी सो लगी सोनजुही मिली कैधों कुबलय हार सों । कैधों चंद्र चंद्रिका कलङ्क सो कलित भई कैधों रति ललित बलित भई मार सों ॥ कालिदास का-

दमिनी दामिनी मिली है कैधों अनल की ज्वाल धस गई धूम धार सों। केलि समै कामिनी क-न्हैया सों लपटि गई कैधों लपटानी है जुन्हैया अन्धकार सों ॥ ३० ॥

सुखौ रुख मोरे देति घूघरो न छोरे देति चूमिबो न औरै देति बदन मयङ्क को। लाजन ते चूनरी लपेटति न गोवैहरै रहै गरै रोवैहटै हिलको न अङ्क को ॥ अनत कविन्द लाल कर को परस होत धर को मिटै न सरसाई बाल संक को। जकर जकर जावैं सकर सकर परै पकर पकर पानि पाटी परजङ्क को ॥ ३१ ॥

आली केलि मन्दिर में ल्याई छल बल करि प्यारे पेखि पकरी उछरि परजङ्क तें। अनत क-विन्द कैसे थिर रहै थोरी बैस पारद को रद कै चपलताई संक तें ॥ नीवी कर धारि रही भ-नक बगारि रही अलक पसारि रही बदन मयंक ते। लाल भुज भरी बाल ऐसी तरफरी हाल जाल की सी सफरी उछरि परी अङ्क तें ॥ ३२॥

ल्याई केलि भवन भोराइ भोरी भामिनी को फूल गन्ध के परस कीनी पौन रुख ते।

कलित बसन कुस तन कुच कमनीय लीनी गहि पीतम प्रसून सेज सुख तें ॥ कवि पजनेस भुज भरत हहा के हिय सौंहीं कै समेटि सांस नीवी दाबि दुख तें । आह करि उछरी सचोट पन्नगीसी ऐंठ उमठ अरीरी मैं सरीरी कढ़ी मुख तें ॥ ३३ ॥

ल्याई केलि मन्दिर तमासा को बताय छल बाला ससि सूर के कला पै किये दावा सी। धाइ ताहि गहन चहत हरिचन्द जू के घूमि रही घर में चहूंघां करि कावा सी ॥ धोखा दैके अङ्क मे भरत अकुलानी अति चञ्चल चपल सी लखानी मृग छावा सी । आहि करि सिसकि सकोरि तन मोरि पिय करते छटकि छूटी छलकि छलावा सी ॥ ३४ ॥

बैठी बिधु बदनी कृसोदरी दरीची बीच खीच पी निसङ्क परजङ्क पर लै गयो । पजन सुजान कबि लपटी लला के गरे झपटी सु नीवी कर जङ्घन समै गयो ॥ गोरो गोरो ओरो मुख सोहै रति पीत भांत रति काम रत्त ह्वै के अन्त सो रजै गयो । मानो पोखराज तें पिरोजा भयो मानिक भो मानिक भये पै नीलमनि नग ह्वै गयो ॥ ३५ ॥

(मध्या) चैत चांदनी कै कैधौं चन्द अव-
लोकन तें छोर निधि छीरकेसपूर पूर उमगे।
कहै चिन्तामनि मन आनँद मगन ह्वै कै विहरि
हँसति सु परम प्रेम सो पगे ॥ अधखुली अखियां
सुरत सुख रस बस मानो भोर अधखुले कमलन
में खगे। प्यारी के सकल तन श्रम जल बुन्द सोहैं
कनक लता में मुकता फल मनो लगे ॥ ३६ ॥

साटन के मुखमल बिछौना बिछे सेज पर रङ्ग
मेज सेज मन मौज की निसा करै। अतर बिना
हीं तिय तन में अतर भासे सतर उरोजन पै
गोटन की मांकरै ॥ ग्वाल कवि प्यारेलाल नीवी
को बढ़ायो कर सरकि चली सी आगे आवन
चहां करै। आंगुरी ते ना करै जु भौंह ते मना
करै सु नैनन में हां करै पै मुखते न हां करै॥३७॥

अञ्चल के ऐंचे चल करति दृगञ्चल को चञ्चला
ते चञ्चल चलै न भजि द्वारे को। कहै पदमाकर
परै सी चौंक चुम्बन में छलन छपाये कुच कुम्भन
किनारे को ॥ छाती के छुयेते परै राती सी रि-
साय गलबाहीं के किये पै करै नाहियै उचारे
को। हीं करति सीतल तमासे तुंगती करति सो
करति रति में वसीकरति प्यारे को ॥ ३८ ॥

पौन कर छूटी बन्द बूटी सी बधूटी देव टूटी मोती मांग छूटी छहरैं सरप सो। अंग अंग आरस सुधा रस सरस प्यारी अंग अंग आरत कर आतप अरप सो॥ मुखचन्द चन्द्रिका उदित रति मन्दिर में नीलो घन पीली स्याम दामिनी दरपसी उचकी उचांकी चकितै सी सोसमन्दिर तें कन्दरप दर्प दावानल के झारप सो॥ ३९॥

अधखुली कंचुकी उरोज अध आधे खुले अधखुले बेष नख रेखन के झलकैं। कहै पदमाकर नवीन अधनीवी खुली अधखुले छहरि छराके छोर छलकैं॥ भोर जगी प्यारी अध ऊरध इतै की ओर झांकि झुकि झमकि उघारि अध पलकैं। आंखैं अधखुली अधखुली खिरकी ह्वै खुली अधखुले आनन पै अधखुली अलकैं॥ ४०॥

लामी लामी लटैं लोनी लटकत लंक लौलौं लोक लागि लोचन उड़त झकझोरि झोरि। छूट गए सकल सिंगार हार टूटि गल लूटि गए लपटि भुअंग अंग कोरि कोरि॥ सकुचि सयानी अँगिरानी प्रान प्यारी बाल प्यारे जसवन्त के निकट तन तोरि तोरि। चोरि चोरि चित हित

जोरि जोरि लाड़िले सो छोरि छोरि कंचुकी ज-
म्हात मुख मोरि मोरि ॥ ४१ ॥

बिकसत जात जाको बारिज बदन बेस बि-
विध विनोदवारे भावन भरति है। निरखि न-
खच्छत उरोजन पै लागे परिहास के सकोचन
चलति पकरति है। कहै हनुमान मनभावनि
सुलोचनी के जागे की खुमारी अँखियान बिह-
रति हैं। प्यारी को उनींदी वा अटारी उतरनि
आज चढ़ि रही चितना उतरति है ॥ ४२ ॥

(प्रौढ़ा) सुखद सुवास परजङ्क पर राजै
उभै झूमि ललचाय मुख चुम्बन लहत है। द्विज
वलदेव मुसुकात जात खात पान परसि पयोधर
हरख उमहत है। फूलि ना समाते विपरीत रस
माते उर हार मुरझाते अध उरध रहत है। सि-
थिल सरीर वाल विथन्न परे हैं मानो सोने स्याम
सरिता में पन्नग वहत है ॥ ४३ ॥

राति रतिरंग में रसीली अरसीली बैठी सेज
में विलोकि सोहैं आदरस धरि कै । बनी कवि
वेनी के खुले हैं कच मेचक वे खैंच पैंच छाए
मुख मण्डल वगरि कै ॥ तिन में अरूझे सीस

फूल सो अतूल छवि प्यारी मुरझावै लीन्हे ऐसे कर करि कै। बांधो तम बन्धन बिलोकि दिनकर मानो प्रात अरबिन्दन छुड़ायो बंधु लरिकै ॥४४॥

रचि बिपरीति रति प्रीतम की प्रीति प्यारी लागै अति छाजे कोक सकल कलान को। कबि हरिकेस बिगलित केस वेस दुति गलित करति अहि ललित ललाम को॥ लचकत कटि मचकत किङ्किनी की कल हासी सी करत है मराल अ-बलान को। कर ताम रसन समक जब गहै प्यारी प्यारे के मिटत टेव सकल छलान को॥ ४५॥

करि रति रंग पति संग ते अलोनी प्रात उठी अँगरात ओपें उलही अपार है। भनत कबिंद छूटे सकल सिंगारहै न सौत मुखतार है निहारे टूटे हार है॥ फबि रही कलित कपोलन पै पीक लीकें बलित नखचत उरोजन अगार है। मुर रही बेसर सिकुर रही सारी अंग फुर रही आ-लस बिथुरि रहे बार हैं॥ ४६॥

अन्धकार धूमधार समर सकूटे बार बिथुरे बिथुरि रति अन्त सेज पर में। कालीदास स्याम संग सोई रस बस बाम काम की सी नीकी बाम

काम केलि घर में ॥ नवला को नाभी कहुनी दै कान्ह कुच गहि सोए जोए रतन अँगूठी सोहै कर में । मेरे जान कारो नाग बामी तें निकारि फन राख्यो मनि मण्डित सुमेरु के सिखरमें ॥४७॥

चहचही चुभकै चुभी है चौक चुंबन की लहलही लांबी लटैं लपटी सुलङ्क पर । कहै पदमाकर मजानि मरगजी मंजु मसकी सुआँगी है उ-रोजन के अङ्क पर ॥ सोई सरसार यों सुगन्धन समोई सेज सीतल सुलोनी कीने बदन मयङ्क पर किन्नरी नरी है कै परी है छबिदार परी टूटि सी परी है कै परी है परजङ्क पर ॥ ४८ ॥

(परकीया) सोए सब लोग तुम आए भले जोग मेट्यो बिरह बियोग उर आनँद निपट को । काहूको न डरो परजङ्क मैं लै परो परिरम्भ प्यारे करो तुम्है कैसे कोऊ हटकै ॥ लीलाधर पीतपट न्यारे करि धरो परिहरो बनमाल जौन नेकहू न अटकै । डेहरि कै वा तरफ केहरि ननद परी है हरि सँभारो पग जेहरि न खटकै ॥ ४९ ॥

आली केलि मंदिर के आस पास ठाढ़ी सुनैं प्यारी बनमाली की बनक बतियान की । का-

लिदास परम हुलासन में अंकभरे लाल लीनी आसन से नवला लजान की॥ अति अलवेली की नवल रति कूजतन सुनि चली अवली किल-कि सखियान की। मची एक वेरही खनक चुरि-यान की घनक घुघुरून की भनक भवियानकी॥

गोकुल में गोपिन गोविन्द संग खेली फाग रात भर प्रात समै ऐसी छवि छलकैं। देहैं भरी आलस कपोल रस रोरी भरे नींद भरे नैनन कछूक भपैं भलकैं॥ लाली भरे अधर वहाली भरे मुखपर कवि पद्माकर विलोकैं को न ल-लकैं। भाग भरे लाल औ सोहाग भरे सब अंग पीक भरी पलकैं अबीर भरी अलकैं॥ ५१॥

(गनिका) मालना जुही की नीकी चम्पा की कली की फीकी जलज जमात जेवदार पान पनतें। कुन्दन की शोभा मुन्द सब सरदार रूप मञ्जरी न मञ्ज, गही हाइू गञ्ज गन तें॥ माल-ती निवारी क्यारी सेवती बिचारी वरी कहत कहारी देह जारी जात जन तें। आली चाह चाली चित हित की खुसाली आवै माली हाथ डाली लै गुलाब गुलसन तें॥ ५२॥

अन न देति छाती छबि सों छबीली ना-
रि कौतुक अनेक करै नींद मैं समोई है। कहै
कवि दूलह त्यौं परसै न पावै पीय झुकि झह-
राय पट तानि देह गोई है॥ बय की कलेस
सहै पै ना रति रंग चहै तिय के चरित्र मित्र
जानत न कोई है। पहले अनूढ़ा भई ब्याहे
पर ऊढ़ा भई गौने में नवोढ़ा ह्वैकै पीके साथ सोई
है॥ ५३॥

आरस सों आरत सम्हारत न सीस पट ग-
जब गुजारति गरीबन की धार पर। कहै पद-
माकर सुगन्ध सरसावै सुचि बिथुरे बिराजैं
बार हीरन के हार पर॥ छाजत छबीले छिति
छहरि छरा के छोर भोर उठि आई केलिम-
न्दिर के द्वार पर। एक पग भीतर सु एक दे-
हरी पै धरे एक कर कंज एक कर है किवार
पर॥ ५४॥

इति श्री मनोजमञ्जर्य्यां प्रथम कलिका समाप्तः॥

मनोजमञ्जरी ।

द्वितीय कलिका ।

परमोत्तम स्फुट कवित्तों का नायका भेद को क्रम से
अपूर्व संग्रह ।

डुमराँवँ निवासी नकछेदी तिवारी उपनाम
अजान कवि द्वारा संगृहीत ।

पूर्णानन्द एक बार समग्र देखने से होगा नकि
रख छोड़नें सें ।

काशी ।

भारतजीवन यन्त्रालय में मुद्रित हुई ।

सन् १८९२ ई०

द्वितीय बार १०००] [मूल्य ।) मात्र

मनोजमंजरी

द्वितीय कलिका।

॥ श्री गणेशायनमः अथ मंगलाचरण, कवित्त ॥

स्याम तन घन पर बिज्जु से बसन पर मोहिनी हँसन पर सोभा उमगी रहै। खौरवारे भाल पर लोचन बिसाल पर उर बनमाल पर खेलत खगी रहै॥ जंघ जुग जानु पर मंजु मोरबान पर श्रीपति सुजान मति प्रेम सों पगी रहै। नूपुर नगन पर कंज से पगन पर आनद मगन मेरी लगन लगी रहै॥ १॥

अथ नायका लक्षण ॥ दोहा।

जिहि बनिता की सुघरता लखि मुद लहत सुजान।
ताहि कहत हैं नायका कोबिद कलानिधान॥ २॥

उदाहरण ॥ कबित्त।

चुनी से चरन चांदनी में चिलकत चकचौंधत चकोर चिनगी के चांप दूनरी। चामीकरहू तें चांप चौगुनी चमक चोखी चंपकबरन चोली चुभी चंचु भूनरी॥ चन्द्रमुखच-न्द्रिका तें चकई चपत चित चोपत प्रवीन बेनी चैत चंद

सून री। चुर्इ सी परति चपला सी चै चपल चख चंचल चितौन चटकीली चारु चूनरी ॥ ३ ॥

चामीकर जूह चंपचांदी को चलन कहा चिन्तामनि चेरिन के चाकर लहत हैं। चिलक चटक चहूं घांयन चमतकार चारमुख चक्रपानि चकित रहत हैं। चांपन चरन को चतुर जुग चेटुआ हैं चैन सों प्रवीन बेनी चरित कहत हैं। चारु अति चंडिका को चन्द्रमुख चन्द्रमौली चखन चकोर किये चोप सों चहत हैं ॥ ४ ॥

कंकन करन कल किंकिनी कलित कटि कंचन कंगूरा कुच केस कारी कामिनी। कानन करनफूल कोमल कपोल कंठ कंबुक कपोल कोर कोकिल कलामिनी। केसर कुसुम कलधौत की कछू न कांति कोविद प्रवीन बेनी करिवरगामिनी। कोक कारिका सी किन्नरीक कन्यका सी किल काम को कला सी कमला सी खासी कामिनी ॥ ५ ॥

जमुना अन्हायवे को जाति जब प्रान प्यारी दौरत चकोर मोर भौंर भीर हार सी। कोक की कला सी चपला सी चारु चन्द्रमा सी चंपकलता सी मैनका सी मैन साल सी। गोकुल की ग्वैंडें गोरी ग्वालिनी गुमान भरी गहगहे गात वह लोचन मराल सी। सौतिन को साल सी विसाल बाल माल सी प्रबाल रवि बाल सी कपूर के मसाल सी।

कीरतिकिशोरी तेरे गात की गुराई विज्जु छटा सी सोहाई सीरी इन्दु कर जाल सी सहज सुवास जाको केसर सी केतकी सी सोनजुही मालती सी अमल मराल सी। श्रीपति निदाघन जडित मखमल पुंज परम नरम अति सोहे महिमाल सी। कनक प्रवाल सी नवीन दीनपाल सी कपूर के मसाल सी सलोनी लाल माल सी ॥ ७ ॥

चोप कर रचो है बिरंचि रूप रासि कैसो कोक की कला सी चारु चातुरी की साला सी। चन्द्रमा सी चादनी सी चामीकर चंचला सी सुधा सो सखीजन कौं सौतिन को हाला सी ॥ कहा मंजुघोषा उरबसी औ सुकेसी दत्त जाकी छवि आगे वारियत मैनबाला सी। चम्पक की माला लागे हिय मैं बरसकाला सिसिर दोसाला होति ग्रीषम मैं पाला सी ॥ ८ ॥

लगत समीर लंक लचकै समूल अंग फूल से दुकूलन सुगन्ध बिथुर्‍यो परै। चन्द सो बदन मन्द हासो सुधाबृन्द अरविन्दन मुदित मकरन्दन मुर्‍यो परै ॥ ललित लिलार श्रम झलक अलक भार मग मैं धरत पग जावक घुर्‍यो परै। देत मन नूपर परम पद दूपर ह्वै भूपर अनूप रूप रंग नि चुर्‍यो परै ॥ ९ ॥

जगमगे जोबन जराऊ तरवन कान ओठन अनूठे रस हांसी उमड़्यो परै। गोरे मुख सेत आवै उकसे उरोज बिन्द

वन्दन लिलार बड़े बार घुमड़यो परै ॥ गोरे मुख सेत सारी होरन किनारीदार देत मनि झुमका झमकि झुमड़यो परै। बड़े २ नैन कजरारे बड़े मोती नथ ठोढी में ठहर होड़ा होड़ी हुमड़यो परै ॥ १० ॥

सोहै सेतसारी मंजु मोतिन किनारी भारी भीर में निहारी जात संग सखियान के । सदानन्द सुन्दरी न कोऊ यह रूप जाके आनन की आभा सी न आभा ससि भान के ॥ दृगन की ओर लागी कानन की छोर जैसी भृकुटी मरोर जोर जोरे धनु बान के । धीरी चाल वारी मुख बीरी माल वारी वह पोरी साल वारी रहै नोरी अँखियान के ॥

चार कैसो अङ्ग लङ्ग लचकत कुच भार चारु छवि घेरदार घाघरो घिरति है । सुबरन बेली सी बिराजे अलबेली बाल खेली हंस चाल गज गिर में थिरति है ॥ तिलक कपोलन मुबारक कह्यो न जाय कमल करोर नैन कोर निदरति है । आनद सदन कै कलानिधिबदन ऐसी उलही मदन कैसो दुलही फिरति है ॥ १२ ॥

अलक पै अलिवृन्द भाल पै अरधचंद भू पै धनु नैनन पै वारों कंज दल मैं । नासा कीर मुकुर कपोल विम्ब अधरन दारो वारों दसननि ठोढ़ी अम्ब फल मै ॥ कंबु कंठ भुजन मृनाल दास कुच कोक त्रिवली तरंग वारों भौंर नाभि थल मे अचल नितंवन पै जंवन कदलिखंभ लाल मखमल वारों वाल पड़ातल मै ॥ १३ ॥

मन्द मुसकान से अनन्द छवि छलकात छिन २ होत छवि छीन छपाकर की। लाल कबि भूखन बसन को ब-नाव दिपै दूनी दुति देह की न काहू पटतर की। तैसी स्याम सारी में लसत ओप भारी देखि हाय करि हारी हिय प्यारी जलधर को। भौहैं कजरारी दृग अंजन सु-धारी कहो कापै असवारी आज भई पंचसर की॥ १४॥

कवि पजनेस केलिवांछित विभावनैनो दीने है दिठौना स्रम सेद मुखवर पै। दीठि मिचि जाति सोची इचति न ऐंचो खैंचो लिखति न तसबीर तसबीरगर पै। निमिख निहारी नेह दीपक सिखा सी चारु राजे मनिमंदिर दरीची के का-गर पै। रुन्धती के नखत लों लखत न जौलों तौलों झखत नगीच मोच बैठी मैंनसर पै॥ १५॥

पीत सित मिश्रित मुकेसन समस्त सारी जाहिर जजे-बवारी जगत जगी परै। हीरन के प्रदर प्रकास प्रतिबिम्बन तें पग २ मग जगमग उमगो परै। मर्कत मलीन चन्द्रकान चकचौंधे कौंधे पजन पिया के अंग अद्भुत फबी परै। बहकि सुगंध चंदनादिक महक मूक पावक लहक झांकि दाहक दबी परै॥ १६॥

सवैया।

दास कहै लगे भादो कुहूकी अँधारी घटा घन से कच कारे। सूरज बिम्ब मे ईंगुर वोरे बँधूक से हैं अधरा अरु

नारे । बाड़ी को आंच के ताए बुझाय महाविख के जम जी के संवारे । मारन मंत्र से बीजुरी सान लगाए नराच से नैन तिहारे ॥ १७ ॥

कुन्द को बेलि धों सोने की सांट कछू यह जानी न जाति धों का है । देखिवेई ते जिआवति आखिन ओट भए हरि लेति उछाहै ॥ याही के पानिप सिंधु के मध्य गयो मन बूड़ि न पावत थाहै । दामिनी है किधों कामिनी है किधों औरे बिरंचि रची रचना है ॥ १८ ॥

है करतार की कारीगरी सुलखी तिहि की यह रीति नई है । स्यामता विन्दुकरीं प्रथमै तिहि मैं पुनि अंकुरताई ठई है ॥ नीचे तें ऊंचे उरोज भए अंग अंगनि ओप अनूप दई है । काम महीप के मंदिर में कलसा धरि के पुनि नेंव दई है ॥ १९ ॥

दोहा ।

जे बनिता भाखी सुघर ते हैं तीन प्रकार ।
स्वीया परकीया बहुर सामान्या सुखसार ॥ २० ॥

अथ स्वकीया*—लक्षण ।

निज पतिही के प्रेममय जाको मन बच काय ।
कहत स्वकीया ताहि सों लज्जा सील सुभाय ॥ २१ ॥

* स्वकीया और पतिव्रता में अन्तर है वा नहीं, यदि है तो क्या ?

प्यारी को बुलाय चित्रसारी देखिवे के मिस ल्याई वह सखी जहां सोयवे को धाम है। प्यारे को निहारि परजंक में मयंकमुखी संक मानि भाजी राजी लंक अति छाम है॥ वेनी मृगनैनो की कुंवर कान्ह गहि लीनी ऐसी भांति भई न बखान अभिराम है। भौंरन की चारु चर कीली की परत चहै तम को चढ़ावत कमान मनो काम है॥ ४४॥

सुनो जू नवोढ़ा सूधे आँचर दै जानति ना पिय पास बैठिबे की बात कहा जानो है। मेरे ल्याइवे की लाज कोजो लाल बलि जांउ आतुर न हूजो वह अबहीं अयानो है॥ यहै रसरीति कहो सुन्दर रसिक की जु रस ही सों मिलि बोलें बोरी रस बानो है। मैना सी पढ़ाई जब पहर अढ़ाई परतीति मैं बढ़ाई तब क्योंहूं क्योंहूं आनो है॥ ४५॥

सवैया।

न माने न मान कहा भयो मोहन जाने न जान सनेह बिचार। समागम की छरकी है निसा की निसाकर दीजे अनेक प्रकार॥ तुमे लग लागी मुबारक आनि सु नागर हौ सुखसागर सार। नई दुलही की लुलहूरता देखि गई करि जैयत बार ही बार॥ ४६॥

कुंज में संग सखीन के बाल बिलोकि रही सुखमा कँदुरू की। कुंद गुलाबन की कलिका मृदुमाधवी चंच-

लताई रूरू की॥ कान परी पपिहा की पुकार चकाय अ-
लीन को हेर मुरू की। पीठ पै चोटी पलोटी अजान च
मोटो लगै मनो काम गुरू की॥ ४७॥

ल्याई सखी नवला को भोराय धरै दृग द्वारन लौं कै
रटी ज्यों। देखत ही मनमोहन को भई पानिप में गई
बूड़ि घटी ज्यों॥ प्यारे भरी अँकवारि पसारी बिहारी को
ज्यों रिखिनाथ ठटी ज्यों। यों निकसी करकुंडल तें नट
कुंडली तें कढ़ि जात नटी ज्यों॥ ४८॥

पिय प्यारे के प्यार बिचार बिचार प्रचार करै चतुरा-
इन के। मन में अति सोच सकोच भरै करै सोच सकोच
लुगाइन के॥ हर दास महाउर देन न देति महा उर नेह
सुभाइन के। परि लेति है बेरहि बेरि भटू ठकुराइन पा-
इन नाइन के॥ ४९॥

अथ विश्रब्धनवोढ़ा लक्षण—दोहा।

पति की कछु परतीति उर धरै नवोढ़ा नारि।
सो विश्रब्धनवोढ़ तिय बरनत बिबुध बिचारि॥ ५०॥

उदाहरण—कवित्त।

कान्ह चतुराई करि द्वार में बिछाई सेज जानि मनि
मंदिर में मनभाई बाम को। कालिदास रसिकाई जाति
के चुपाय रही आई जब सुन्दरि सिधारी निज धाम को॥
चंचल चतुर छरकाइल छबीली बाल अंचल छुवे न दीनो

स्याम अभिराम को। पाटी पग धरि गई बैटक सी करि गई नटी सी उछरि गई छरि गई स्याम को ॥ ५१ ॥

सवैया।

रूठि उठैं उठि बैठे मरू झिझकारे झुके बिहंसे मुख मोरै। दूनी ह्वै जाय कुवे अंचरा छटके फुफुती के छरा तन हेरै॥ चेरे सके लिये संभु सदा गृह काज अकाज के जाति न नेरै। बाल के ख्यालहि में नंदलाल रहैं छकि रोज रहैं घर घेरै॥ ५२ ॥

गौनो भयो दिन द्वैक भयो कछु सुन्दर नेह दुहूं में नवीनो। खेलत काम कलोलन में ललना को सरूप लला लखि लीनो॥ दोऊ उरोज दबे तिय के तब एक ही बेर सबै यह कीनो रोई रिसानी डरी थहरानी चकी अकुलानी चितै हँसि दीनो॥ ५३ ॥

कवित्त।

रैन मे जगाई काल करन न पाई झूमि ललन सताई परजंक अंक महियां। ससकि असकि कहरतिही बितीती निसा मसकि प्रवीन बेनी कीनी चित चहियां॥ भोर भए भौन के सकोन लगि गई सोय सखिन जगाइवे को आनि गही बहियां॥ चौंकि परी औचक उचक परी झक परी सक परी हक परी बक परी नहियां॥ ५४ ॥

मध्या लक्षण—बरवै ।

जहां बराबर बरनत लाज मनोज ।
मध्या तहां बखानत सु कवि समोज ॥ ५५ ॥

उदाहरण—कवित्त ।

ललना लजीली उर कामहू ते कीली नोखी सारी मे लसै ज्यों घटा कारी बीच दामिनी। कहै व्रजचंद हुती संग मे सहेलिन के हेरत हँसत बतरात हंसगामिनी ॥ तौलों तहां गेह में सुनाइ आयो नेहभरो बैठ गयो ताको लखि बैठि गई भामिनी। कंत हेरे सान्हे तब अंत हेरे चंदमुखी अंत हेरे कंत तौ न अंत हेरे कामिनी ॥ ५६ ॥

बैठी सीसासागर मे सुन्दरि सवारही तें मूंदि कै किवार देव छवि सों छकति है। पीत पट लकुट मुकुट बनमाल धरि करि वेष पी को प्रतिबिम्ब मे तकति है ॥ द्वै कर निसंक अति अंक भरि भेटिवे को भुजन पसारति समेटति जकति है। चौंकति चकति चितवत उझकति उर झूमि लचकति मुख चूमि ना सकति है ॥ ५७ ॥

रति विपरीत मे रमति मृगनैनी ताकी बेनी छुरै पीठ सुखदेनी अनुमान तें। हिले मुख अलक गिले सो राहु चंद मानो गिरि उठि गिरै निसा पाछे परी प्रान तें ॥ सेवक ललकि लपटाति ना लजीली कैधों नायक जुवा को

कसा चलत विधान तें। कैधौं भ्रम संभु के कस्यो है कुच कंचुकी मे काढ़िवे को काम बंद काटत कपान तें ॥ ५८ ॥

अथ प्रौढ़ालक्षण—दोहा।

निज पति सों रति केलि मे सकल कलान पवीन ।
तासों प्रौढ़ा कहत हैं जे कविन रसलीन ॥ ५९ ॥

उदाहरण—कवित्त।

प्रथम समागम के औसर नवेली बाल सकल कलान करि प्यारे को रिझायो है। देखि चतुराईन मन सोच भयो पीतम को लखि परनारि मन संभ्रम भुलायो है ॥ कालिदास ताही समै निपट प्रवीन तिया काजर ले भीत ही मे चित्रक बनायो है। व्यात लिखि सिंहिनी निकट गजराज लिख्यो जोनि तें निकरि छौना मस्तक पै आयो है * ॥ ६० ॥

कवित्त।

प्रीति बस दोऊ विपरीति मे रमे हैं जहां पाय पर घुंघरू सु मौन सुख लै रहो। कहै पदमाकर त्यों करत

* समस्तरतिकोविदा नायका ने नायक को भ्रमित देख प्रसवती सिंहिनी का बालक गजराज के मस्तक पर लिख कर सूक्ष्मालंकार द्वारा यह जताया कि सिंह अपने स्वभाव ही से गजराज पर आक्रमण करते हैं।

कोलाहलनि किंकिन कतारे काम दुंदुभि से दै रही ॥ छाप मुख प्यारी को बिहारी के सु आनन पै हार जुत बारन की आभा ऐन वे रही । तारन के फंद चांप चंद चहुं ओर मान्यो इन्दीवर ऊपर कलिन्दी केलि कै रही ॥

रति बिपरीत मे रमति मृगनैनी बाल कुन्दन की बेलो ऐसी सिसकि सिकुर जात । बेनी कवि कहै विहँसति ब-तराति विज्जु छटा लों छहरि घनस्याम तन दुरि जात ॥ मोतिन की लरैं अलकावलि के तरे परे उघर मुखो न मुखचंद छवि दुरि जात ॥ ससि मानो पीछे डार आड़ो पांति तारन की तम की जमातिसों उघरि लरि मुरि जात ॥ ६२ ॥

घूंघट जमानिका है कारे २ केस निसि खुटिला ज-राय जरे दीप उजारी है ॥ बाजत मधुर मृदुबानी सो मृदंग धुनि नैना नट नागर लकुट लट धारी है ॥ आलम सु कवि कहै रति विपरीत समै स्रमविन्दु अंजुलि पुहुप भर ढारी है । अधर सुरंग भूमि नृपति अनंग आगे नृत्य करै बेसर को मोतो नृत्यकारी है * ॥ ६३ ॥

*यह बात प्रसिद्ध है कि आलम कवि ने इसी कवित्त के चतुर्थ पद पर रिझ कर शेष नामक रंगरेजिन के साथ ब्राह्मण से मुसल्मान हो कर जीवन व्यतीत किया ॥

सवैया।

मानसी पूजा मई पजनेस मलेछन होन करी ठकु-
राई। रोके उदात सबै सुर गोत बसेरन पै सिकराली ब-
साई॥ जान परै न कला कछु आज की काहे सखी अ-
जया इक ल्याई। पोषे मराल कहौ किहि कारण ऐरो भु-
जंगिनी क्यों पोसवाई॥ ६४॥

सांझहि तें रति की गति जेतिक कोक के आसन जे
गिरा गावति। वारिजनैननि बारहिंबार न चूमिबे के
मिस भोर छपावति॥ केलि कला के तरंगन सों हठि मो-
हन लाल को ज्यों ललचावति। अंक मे बीति गई रतियां
पै तऊ छतियां तिये छोड़ि न भावति॥ ६५॥

कवित्त।

साजि व्रजभूषन के भूषन बसन अंग राजो रति रंग
संग सुन्दर सुजान के। कहै पदमाकर सुपेच पगरी के खुले
टूटे कलकुंडल कपोलन मे कान के॥ ढरकि कपोलन तें
उरझे उरोजन पै मंजु मकराकृत बड़ेरो मुकतान के।
मानो छल छंदन सों छीन के छपाकर ने सौंप्यो आन ईस
को निसान पंचवान के॥ ६६॥

रैन की उनीदी राधे सोवत सकारे भए झीनो पट
तानि परी पायन तें मुख तें। सीस तें उलटि बेनी कंठ

ह्वैके उर ह्वैके भानु ह्वै छवान ह्वै के लागी सूधे रुख तें ॥ सुरतिसमर रति जोबन को महा जोर जीति भगवंत अरसाय राखी सुख तें । हर को हराय मानो माल मधुकरन की राखी है उतार मनु चंपा के धनुष तें ॥ ६७ ॥

छप्पय ।

राधा २ रमन भवन सूने सुभाग लहि । सुख श्रम छवि छकि नैन सैन करि लई अंक महिं । वहरति २ अंत करी विपरीति रीत अति । कोक कला कल कलित ललित निरत मनोज रति । ह्वै श्रमित सेज सोए जुगल उपमा यों जिय मे अरी । जनु छाजत छोर समुद्र में जातरूप नीलम छरी ॥ ६८ ॥

सवैया ।

परभात लौं केलि करी ललना बगरे कच एड़िन लौं छहरैं । रस राती उनीदी भई अखियां रद लागे कपोलन में गहरैं ॥ दरकी अंगिया मे उरोज लसे लट तापे अजान परे लहरैं । मनो केसर कुंभ के शृंग पै सुन्दर साँपिनि के चेटुआ वहरैं ॥ ६९ ॥

रति रंग तें ह्वै परजंक पै वाल सु लै रही आरस की लहरैं । दृग लोल में पीक कपोल में अंजन ओठन बीलन में सयरैं । परी नीली निचोल भुजा पै अजान सुलागे स

मीरन के फहरैं । विधु को करि घायल राहु मनो चल्यो चाहत कुंदन की डहरैं ॥ ७० ॥

अथ * धीरादि कथनम् ॥

दोहा ।

मध्या प्रौढ़ा मान में तीन भांति तिय जानि ।
धीरा और अधीर तिय धीरा धीरा मानि ॥ ७१ ॥

तत्रादौ मध्या धीरा—लक्षण ।

कोप जनावे व्यंग सों तजै न पति सनमान ।
मध्या धीरा नायका ताको कहत सुजान ॥ ७२ ॥

उदाहरण—सवैया ।

क्यों घनस्याम अबै दुचिते भए मो तन दीठि करो सुखदाई । कंज गुलाबन में अरुनाई न लाल गुलालन की सरसाई । तो तन पै जितनो गहरो रंग हैं रंगरेजन की चतुराई । साची कहो इन नैनन रंग की दीनो कहा तुम लाल रंगाई । ७३ ।

* धीरादि भेद और खंडिता में क्या अन्तर है ? प्रायः उदाहरण संकर देख पड़ते हैं और जिनसे पूछता हूं यथार्थ उत्तर न देकर चुपके हो बैठते हैं । मेरी इच्छा थी कि यहां पर कुछ लिखूं किन्तु स्थानाभाव से न हो सका अतएव "अजान हजारा" में सविस्तर लिखता हूं देखिये और अपनी अनुमति प्रकाश कीजिये ।

आवत जात के भौन के भीतर नींद भरो रम्यो बालम बाल सों। मान को ठान कियो न सयान सो जान लयो गुर ज्ञानन चाल सों॥ अंजन लीक लगो अधरान में पीक कपोलन जावक भाल सों। आब गुलाब लै सोरो कस्यो मुख लाल को पोछ्यो सपेद रुमाल सों॥ ७४॥

खंजन हैं मनरंजन के सब रंजन नैन किधौं मति जी की। मीठो सुधा की सुधाधर की दुति दन्तन की किधौं दाड़िम ही की। चन्द भलो मुखचन्द किधौं सखी मूरति काम की कान्ह की नीकी। कोमल पंकज कै पद पंकज प्रान पियारो कि मूरति पी की॥ ७५॥

घोरघटा घहरै नभमण्डल तैसिय दामिनि की दुति जागत। धावत धूर भरे धुरवा मुरवा गिरि शृङ्गन पै अनुरागत। फैली नई हरियारी निहारि संजोगिन के हियरा अनुरागत। रीति नई रितु पावस में व्रजराज लखे रितुराज सों लागत॥ ७६॥

मध्या अधीरा लक्षण—दोहा।

करै अनादर कन्त को प्रगट जनावै कोप।
मध्य अधीरा नायका ताहि कहत करि चोप॥७७॥

उदाहरण—कवित्त।

सकल कलान तुम सकल कलान तुम सकल कलान के कला में वने बांके हो। एहो बनमाली तुम बने बनमाली

तुम कौन बनमाली माल उर में सुक्काके हो। आये हो रमन तुम आये हो रमन चले जाओ रमनो के ह्यां रमी ना हियां काके हो। कौन बन ताके तुम कौन बन ताके तुम कौन बन ताके ह्यां सुकौन बन ताके हो ॥ ७८ ॥

सवैया ।

औरन के ढिग ते न टरौ नित बातनही हमैं राखत टारे। औरन के संग राति बिताय हमे सुख देत हो आनि सकारे ॥ औरन सों तुम साचई हो हम सो रहो भूठई व्योत बिचारे। लागत औरन की छतियां तुम पायन लागत आनि हमारे ॥ ७९ ॥

अथ मध्या धीराधीरा लक्षण दोहा ।

धीर बचन कहि के जु तिय रीथ जनावै रोस ।
मध्या धीरा धीर तिय ताहि कहत निरदोस ॥ ८० ॥

उदाहरण कवित्त ।

कीजियत प्यारे आज तेरे पर तेरी सौंह तन मन धाम तोपै दीजियत बार बार । कहै पदमाकर सुदेख मृगनैनी दृग आंसू भरि आये बिन गुन के निहार हार ॥ नैनन तें आंसू ढरि परे ते कपोलन कपोलन ते गिरे ते उरोजन पै बार बार । बड़े बड़े मोती मीन देत रजनीसे रजनीस मनो देत संभुसीस पर ढार ढार ॥ ८१ ॥

अथ प्रौढ़ा धीरा लक्षण—दोहा।

उर उदास रति तें रहै अति आदर की खानि।
प्रौढ़ा धीरा नायका ताहि लीजिये जानि॥

उदाहरण—कवित्त।

जगर मगर दुति दूनी केलिमन्दिर में बगर बगर धूप अगर बगाखो तू। कहै पदमाकर त्यों चन्द ते चटकदार चुम्बन में चारु मुखचन्द अनुसाखो तू॥ नैनन में बैनन में सखी और सैनन में जहां देख्यो तहां प्रेम पूरन पसाखो तू। छपत छपाये तऊ छल न छबीली अब उर लगिबे को बार हार न उताखो तू॥ ८२॥

सवैया।

बैठी तिया मनिमन्दिर में चहुंओरन पुंज प्रभा के पसारे। काम सों स्याम महा अभिराम अनन्द सों आय तहां पग धारे॥ आपने हाथन सों तन में सब साजि के साज सिंगार सिंगारे। सुन्दरि आज नई छन में इक ईछन तीछन ते न निहारे॥ ८३॥

अथ प्रौढ़ा अधीरा लक्षण—दोहा।

डर दै के पिय को तिया देइ सुमन की मारु।
प्रौढ़ अधीरा कहत हैं ताहि सुकवि मति चारु॥८४॥

उदाहरण—सवैया

तुम नाम लिखावती हौ हम पै हम नाम कहा कहौ लीजिये जू । अब नाव चले सिगरे जल मे थल में न चले कहा कीजिये जू । कवि किंकित औसर जो अकतीसकती नहीं हां पर कीजिये जू । हम तो अपनो बर पूजतो हैं सपनेहु न पीपर पूजिये जू ॥ २१ ॥

कवित्त ।

चौस बरसाइत के सकल सिंगार साजि सरसिजनैनी अति रति निदरति है । लाल जगमगित जवाहिर के आभरन चन्दमुखी चांदनी चहूंघा पसरति है ॥ गोरी गौनहाई गुनभरी गरबीली बाल विविध प्रकार पूजि पायन परति है । घर की दिसातीं अनखातीं सब नगर की कुल वार बर की न भांवरी भरति है ॥ २२ ॥

दोहा ।

कैसे धौं या बदन की कढ़त जाल मग जोति ।
याको मुसक्यान्यो नहीं ओठन बाहिर होति ॥ २३ ॥
जानति सौति अनीति है जानति सखी सुनीति ।
गुरुजन जानत लाज है पीतम जानत प्रीति ॥ २४ ॥
एक स्वकीया की कही कबिन अवस्था तीन ।
मुग्धा इक मध्या बहुरि पुनि प्रौढ़ा परबीन ॥ २५ ॥

अथ मुग्धा लक्षण—दोहा।

झलकति आवै तरुनई नई जासु अँग अङ्ग।
तासों मुग्धा कहत हैं जे प्रवीन रसरङ्ग ॥ २६ ॥

उदाहरण—कवित्त।

जल में दुरी है जैसे कमल की कलिका है उरजन ऐसे दोनो सरुचि दिखाई सी। गंग कहै सांख सी सोहाई तरुनाई आई लरिकाई मध्य कछु मैं न लखि पाई सी॥ स्यामा को सलोनो गात तामें दिन द्वैक मांझ फिरी सी चहति मनमथ की दोहाई सी। सीसी में सलिल जैसे सुमन पराग तैसे सिसुता में झलमले जोबन की झांई सी॥ २७॥

मृगन की मीनन की चंचलाई चखन में मोतिन की हीरन की जोति है रदन में। ओठन में आई है मिठाई सब सिमिटि के दाख में न ऊख में न स्वाद मरदन में॥ महाकवि बालम के खुले हैं बिसाल भाल रातो दिन रा जति मसाल सी सदन में। बिधना गुलाब कैसो अरक उतार मानो चन्द की निकाई राखी प्यारी के बदन में॥

लागी दीठि लगन लजान लागी लोगन तें लंक लागे क्रसन लोभान लागे पजनेस। चंपक प्रसून दल दुरित बालिता के गात और २ अंग ओप अंगन परत देख॥ कसमसे कसे उकसे कसे उरोजन पै उपटत कंचुकी की तुरप

तिरीछी रेख । उदया अस्ताचल की दोनों कोर दाबि मानो दीपत नवीन पथ रवि रथ चक्र वेख ॥ २९ ॥

सजन लगी है कहूं कबहूं सिंगारन को तजन लगी है कहूं ऐस वैस बारी को । चखन लगी है कछू चाह पदम कर त्यों लखन लगी है मंजु मूरति मुरारी को ॥ सुन्दर गोविन्द गुन गुनन लगी है कछू सुनन लगी है बात बांकुरे बिहारी की । लगन लगी है लगी पगन हिये सो नेक लगन लगी है कछू पी की प्रानप्यारी को ॥ ३० ॥

सवैया ।

आई न जोति अबै तरुनाई की छाई न प्यारे की प्रीति अछेहैं । बात सुनै रस की बलदेव जू बूझै न रीझै करै नहिं तेहैं ॥ छाड्यो न खेल अजौं गुड़ियान को चौसक तें लगी देखन देहैं । कान्हे बिलोके बिलोकि रहै कछु बोलै न डोलै न खोलै सनेहैं ॥ ३१ ॥

दोहा ।

बिन जाने अज्ञात है जाने जोवन ज्ञात ।
मुग्धा के है भेद यह कवि सब बरनत जात ॥ ३२ ॥

तत्र अज्ञातयौवना—सवैया ।

जोबन आवत अगन में कठिनाई कछू कुच कोर भयो है । ता लखि कै भभरी अबला नहीं जाने कोलाहल भेद नयो है ॥ फारि कै ओढ़नी के अँचरा गहि पीपरपात तें

बांधि दयो है। बापरो बाप पुकारे परे धरे हाथ हिये बर-
तोर भयो है। २३ ॥

गाय के वेनु बजाय उठै अरु आरसी देखि सँवारत
पागै। याही गलीन कलीन के उत्तर आवत या वृषभान
को बागै॥ देह कटीली ह्वै कांपि उठैं घबराय रहैं मन के-
हूं न लागै। कौन को है यह छोहरा सांवरो देखत मोहि
डरावनो लागै ॥ २४ ॥

कवित्त।

फूलो कुंज क्यारिन मे मालती मयंक लसी पानि में
लिये तैं दुति चम्पकनि लीनी क्यों। संग की सहेलिन की
कटि जो निहारि देखों मेरी दिन राति जाति होति कटि
छीनी क्यों॥ ग्वाल कवि चुम्बक अचानक दबाय हार
माल की मिलाय पै सुवास रस भीनी क्यों। देखि नथुनी
में रज राजत दुनी में बीर मेरी नथुनी में चुनी तीनि पोहि
दीनी क्यों॥ २५॥

कारे चीकने ह्वै कछु काहे केस आपुही तें बढ़ि २
बिथुरि छवा लों लागे छलकन। बार २ बदन बिलोकन
लगी हैं सौति औरै तौर सौरभ समूह लागे हलकन।
कौन धौं बलाय बसो अंग में हमारे हमें देखिबे को कान्ह
अनुमान लागे ललकन। जंघ लागी सटन घटन लागी लंक
औ बढ़न लागी आखैं री नितम्ब लागे ढलकन॥ २६ ॥

कैसी धौं निकाई सरसाई तन मेरे मोहि हेरे बिन हेरी हरि लागे अब अहकन । गति गुरुआनी मति औरै सरसानी कछू काहे नैन कानन लौं लागे बीर बहकन ॥ पीर होति उर में न धीर धस्यौ जात मोपै कौन हेत लागी हनुमान लंक लहकन । आहि २ कै २ उठैं कांपि कांपि सौति काहे चाहि २ मो मुख चकोर लागे चहकन ॥

जैसिये बताइ दई अंगन नपाय दई तैसिये बनाय दई कौन छल छैहौं मैं । गिरह सौं जांचि लीजै बूटह सवाचि लीजै बांचि लीजे सेवक लिखे को ना दुरैहौं मैं ॥ एहो ठकुराइन न मोह्न को लखाय भेद संग की खेलाइन उराहनो न लैहौं मैं । घांघरी की अटनि बढ़ी सो फेर दीजे जातैं कंचुकी की घटनि सु पूरि करि दैहौं मैं ॥ ३८ ॥

ज्ञातयौवना—कवित्त ।

छाती लागी उचनि संकोचन सकान लागी खान लागी पानन उतान रस बतियां । कटि लागी घटनि अटनि चढ़ि आन लागी बैन लागी नटनि जगन लागी रतियां ॥ चारु लागी चलन सुधारन अलक लागी जेब लागी जगन पगन लागी गतियां । नैन लागी फेरन निहोरन सखीन लागी मन लागी चोरन पढ़न लागी पतियां ॥ ३९ ॥

चाव सौं चटक रचि २ के रुचिर चीर रुचि सौं पहिर के बिनोद बरसति जाति । कसि २ कंचुकी बिमल बंगला

में बैठि सौतिन के सकल सोहाग करखति जाति ॥ निरखि २ कर पायन की लाली हनुमान तरुनाई की निकाई परखति जाति । बार २ मुकुर बिलोकति धरति फेर आंचर उघारि हेरि २ हरखति जाति ॥ ४० ॥

कवित्त ।

आनन सकोर गुड़ियानन के खेलन तें सौरभ लगाय चढ़ि चौकी पै बिभाती है। बारन को प्यारी अति प्यार सों सुधार हिये हारन के धारन की प्रीति सरसाती है ॥ कहै हनुमान सखियान तें बचाय अँखियान को नचैबो लै मुकुर मुसुकाती है । सभरे सुबासन सों बासन बनाय चारु उभरे उरोजन को हेरि हरखाती है ॥ ४१ ॥

नवोढ़ा लक्षण—दोहा ।

अति डर तें अति लाज तें जो न चहै रति बाम ।
तेहि मुग्धा को कहत हैं सुकवि नवोढ़ा नाम ॥ ४२ ॥

उदाहरण—कवित्त ।

तासन की गिलम गलीचा मखतूलन के झरफ झुमाऊ रही झूम रंग द्वारी में । कहै पदमाकर सुदीप मनि मालन की लालन की सेज फूल जालन सँवारी में ॥ जैसे तैसे तित छल बल सों छबीलो वह छिनक छबीले को मिलाय दई प्यारी में । छूटि भाजी कर तें सु करके बिचित्र गति चित्र कैसी पूतरी न पाई चित्रसारी में ॥ ४३ ॥

उदाहरण—कवित्त ।

जाके अंग अंग की निकाई निरखत आली बारने अनङ्ग को निकाई कीजियतु है । कहै मतिराम जाकी चाह ब्रजनारिन को देह अँसुवान के प्रवाह भीजियतु है । जाके बिन देखे न परत कल तुमहूँ को जाके बैन सुनत सुधा सों पीजियतु है । ऐसे सुकुमार पिय नन्द के कुमार को यों फूलन के मालन की मार दीजियतु है । ८५ ।

दोहा ।

तेह तरेरे दृग नहीं राखति क्यों न अगोट ।
छैल छबीले पै कहा करति कमल की चोट । ८६ ॥

अथ प्रौढ़ा धीराधीरा लक्षण ।

रति तें रूखी ह्वै जहां डर जु दिखावै बाम ।
प्रौढ़ा धीराधीर तिय ताहि कहत रसधाम ॥ ८७ ॥

कवित्त ।

छवि छलकन भरी पीक पलकन त्योंहीं श्रम जलकन अलकन अधिकाने च्वै । कहै पदमाकर सुजान रूपखान तिया ताकि ताकि रही ताहि आपही अजाने ह्वै । परसत गात मनभावन के भावती की गईं चढ़ि भौंहें रही ऐसी उपमाने छ्वै । मानो अरविन्दन पै चन्द को चढ़ाय दीनी मान कमनैत बिन रोदा की कमाने द्वै ॥ ८८ ।

अथ जेष्ठा कनिष्ठा लक्षण—दोहा ।

बरनत जेष्ठ कनिष्ठिका जहँ ब्याही तिय दोय ।
पिय प्यारी जेष्ठा कही अन प्यारी लघु सोय ॥ ८६ ॥

उदाहरण—कवित्त ।

एक पलिका पै बैठी सुन्दरि सलोनी दोऊ चाहि कै छबीलो छैल आई रति केलि घर । चिन्तामनि कहै आन बैठी ढिग पीतम पै काहू सों कछू न कहि सकत दुहूँ के डर ॥ सुख के दिखायबे को एक को दिखायो नाह बिप रीत रति को सरूप लिखि चित्र पर । जौलौं एक सकुचन आंख मूंदि रही तौलौं प्यारे प्रानप्यारी के कुचन पर राख्यो कर ॥ ९० ॥

सवैया ।

चौपर खेलती दोऊ दुरे तहां आयगो लंगर सूधे सु- भाय कै । हारहिं सों मिले आपहि यों ठहराइ हराइ दई सुख पाय कै । जीत के जोम भरी हँसि एक रही इक बैसि यों बैठ लजाय कै । काहू की नेक न संक करी भरी अङ्क मयङ्कमुखी सुख पाय कै । ९१ ॥

इति स्वकीया ।

अथ परकीया लक्षण—दोहा ।

दुरे दुरे पर पुरुष सों सुन्दर करै जु प्रीति ।
बुद्धि चतुरई चौगुनी परकीया की रीति ॥ ९२ ॥

उदाहरण—कवित्त ।

पुरजन परम परोसिनी परोस सबै जानत हैं सील सदा सुद्ध सुचिता की खान । परमानन्द जेते गुरु गोकुल बसैया तेते बसत न जाने कहूँ ऐसी समै सुखदान ॥ घूंघट के घेर चहुंफेर तें तिरीछी हेर नजर धरा पै अधरा पै मन्द मुसकान । जानत हैं केल खेल केवल कदम्ब पुञ्ज कीर धीर केकी औ कपोत पोत कोकिलान ॥ ८३ ॥

अथ अनूढ़ादि लक्षण—दोहा ।

अनव्याही तिय होति जहँ सरस पुरुष रसलीन ।
ताहि अनूढ़ा कहत हैं कवि कोविद परवीन ॥ ८४ ॥
जो व्याही तिय और की करति और सों प्रीति ।
ऊढ़ा तासों कहत हैं हिये राखि रस रीति ॥ ८५ ॥

तत्रादौ अनूढ़ा का उदाहरण—सवैया ।

प्रीति पतिव्रत सों बल बैर कहो केहि भांति भटू भ्रम भागे । काज सरै तो लजाति हों लाजन लाज सरै तो बिदा हित मागे ॥ ह्वै रही सांप छछून्दर की गति * काम अ-काम हिये अनुरागे । ऐसी उपाय बताय सखी हरि अंक लगै पै कलङ्क न लागै ॥ ८६ ॥

---

* लोक में यह बात प्रसिद्ध है कि यदि सर्प छछून्दर को निकल जाय तो मृत्यु को प्राप्त हो और छोड़ दे तो अन्धा हो जाय ।

न्हाय बड़े तरके भर के जल फूलन के चुनि के पुनि ढेरी। त्यों पदमाकर मंत्र मनोहर जे जगदम्ब अदम्ब आये रो॥ या उर धार कुमारपने भरि पावन पूजा करी बहु-तेरी। चेरी गोविन्द के पायन की कर ए गुनगौरि † गो-साइन मेरी॥ ९७॥

वा बन बाग की मालिन ह्वै पहिरावहुं माल बिसाल घनेरी। त्यों पदमाकर पान खवावहुं खासी खवासिन ह्वै मुख हेरी॥ श्री नन्द नन्द गोविन्द गुनाकर के घर की ह्वौं कहावहुं चेरी। दै बरदान यहै हमको सुन ए गुनगौरि गोसाइन मेरी॥ ९८॥

बांसुरी ह्वै लगों मोहन के मुख माल ह्वै कण्ठ तजौं नहिं फेरी। त्यों पदमाकर ह्वै लकुटी रहों कान्हर के कर घूम घनेरी। पीत पटो ह्वै कटी लपटों घट तें न घटै चित चाह जु एरी। दै बरदान यहै हमको सुन ए गुनगौरि गोसाइन मेरी॥ ९९॥

अथ ऊढ़ा उदाहरण—कवित्त।

सूखी सी श्रमी सी भ्रमी व्याकुल सी बैठी कहूं नजर लगी है इन तोरि तोरि नाख्यो मैं। बेनी कवि भोरही तें

---

† जयपुर प्रान्त के ढूणढार स्थान में मधु मास में गुन-गौरि देवी का बड़ा भारी मेला होता है जहां पर घर २ की स्त्रियां पूजन के लिये जाती हैं।

भौंरी भई डोलति हौं राज करो जाय यह काम अभि-
लाख्यो मैं ॥ ललकै हमारो जोय बोले ना बिलोके क्योंहूं
मुख आंखें मूंदि रही बातें दीन भाख्यो मैं । पलकें उघारों
कैसे कढ़ि जाय आंखिन तें सोर ना करोरी चितचोर मूंदि
राख्यो मैं ॥ १०० ॥

घर घर घाटन में बाटन में कुञ्जन में कहे रूप गुंजो
अनरूप कहा डोलों मैं । बेनी कवि गातन में बस्यो गोदना
के मिस रिस करि बातन में कहा कहा छोलों मैं । मसकि
मसूसन सों मारों मन कौलों कोऊ हितू ना हमारो जासों
बिलग न बोलों मैं । मूंदों स्याम पूतरी उघारि देखौं सां-
वरों मैं मेरो अपराध आंख मूंदों किन खोलों मैं ॥ १०१ ॥

अँखिया हमारी दई मारी सुधि बुधि हारी मोहूं तें
जु न्यारी दास रहै सब काल में । कौन गहै ज्ञानै काहि
सौंपति सयाने कौन लोक लोक जाने ये नहीं हैं निज
हाल में । प्रेमपगि रही माया मोह में उमगि रही ठीक
ठगि रही लगि रही बनमाल में । लाज कों अचै कै कुल
धरम पचै कै बिथा बृन्दन संचै कै भई मगन गोपाल में ॥

एही हियहार के कदीम दरबान दोई इनको छपाय
काहू ऊपरी लयो है री । मैं तो इन द्रोहिन के पहरे रही
थी सोइ बारी खेत खायो बड़ो उलट भयो है री । ठाकुर
कहत बूझि आंसू भर भर देत तनिक न सोध देत कौन को

दयो है री । मेरो मन मेरी आली मोहि यह जान परी हग बटपारन के भेद में गयो है री । १०३ ।

लागे काम तोर है री महाबर तोर है री प्यारो नाहिं तोर है री कैसी करती रहै । अंग अंग पीर है री बिरह तपी रहै री आंखें आंसू पीर है री न्यारो जाको पी रहै । बातें जो कहो रहै री सुमिरतहो रहै री वे तो कतहीं रहै री चव्यो चितहो रहै । कौन बरजी रहै री कौन बरजी रहै री कौन बरजो रहै री कौन बरजो रहै । १०४ ।

सवैया ।

गोकुल के कुल को तजि के भजि के वन बीथिन में बढ़ि जैये । त्यों पदमाकर कुंजकछार बिहार पहारन में चढ़ि जैये । है नँद नन्द गोविन्द जहां तहां नन्द के मन्दिर में मढ़ि जैये । यां चित चाहत एरी भटू मन मोहने लै के कहूं काढ़ि जैये । १०५ ।

—***—

अथ षट् विधि परकीया कथनम्—दोहा ।

इक परकीया की कहो षट विधि भेद बखान ।
प्रथमहि गुप्ता जानिये बहुरि विदग्धा मान । १०६ ।
ललित लच्छिता तीसरो चौथी कुलटा होय ।
पँचई मुदिता षटई है अनुसयना सोय । १०७ ।

त्रिविधि गुप्ता ।

गुप्त सुरति गोपन करै भयो होयगो होत ।
गुप्ता ताको कहत हैं सबरे सुमति उदोत ॥ १०७ ॥

अथ भूत सुरति गोपना का उदाहरण—कवित्त ।

जैहौं नहिं गोकुल सुनोरी दधि बेचन को सांकरी गली में आली कैयो ठौर भटकी । भनै जबरेस आयो नन्द को किसोर जहां छलिया छबीलो छैल जाने घट घट की ॥ चूनर को झटकी सु कैयो ठौर लटकी सु सासु मेरी हटकी खेलाई कला नट की । भूल गई बट की रही ना कछू अ-टकी सु फोर डारी मटकी बजावै बीर चटकी ॥ १०८ ॥

मोतिन की माल तोरि चोर सब चोर डार्यो फेर नहीं जैयों आली दुख बिकरारे हैं । देवकी नन्दन कहै धोखे नाग छौनन के अलकें प्रसून तेऊ नोच निरवारे हैं ॥ जान मुखचन्द कला चोंच दीनी अधरन तोनो ये निकुंजन में एके तार तारे हैं । ठौर ठौर डोलत मराल मतवारे तैसे मोर मतवारे त्यों चकोर मतवारे हैं ॥ ११० ॥

मोहि लखि सोवत बिथोरिगो सु बेनो बनी तोरिगो हिये को हरा छोरिगो सुगैया * को । कहै पदमाकर त्यों घोरिगो घनेरो दुख बोरिगो बिसासी आज लाजही को

* सुगैया = कंचुकी ।

नैया को। अहित अनैसी ऐसी कौन उपहास यहै सोचति खरी मैं परी जोवति जुन्हैयः को। बूझैंगी चबैया तब कैहौं कहा दैया इत पारिगो को मैया मेरी सेज पै कन्हैया को॥

सवैया।

परिपूरन प्रेमतें पजि सिवा प्रति ज्ञाम पतिव्रत पालती हैं। निसवासर ध्यान धरे तिनको मन तें तन नेक न हालती हैं। सरदार निबाहनहार वही हम कौन काला लखि ला लती हैं। ननदी ये तिहारो सदा बतियां नटसाल लों सा हव सालती हैं॥ ११२॥

दोनो बुलाय जबै उन मो कहँ गांव तबै का सबै वह- रोतो। नन्द हते औ हतों जसुदा दरकुञ्ज जुरो सिगरो अहरोतो॥ मञ्चित साख हती तुमहूं हमहूं जब ज्वाब दियो छहरोतो। घेर घराघर माचो फिरै सखो में न हरा हर को पहरोते॥ ११३॥

अथ भविष्यगुप्ता का उदाहरण—कवित्त।

आज तें न जैहों दधि वेचन दोहाई खांउ भैया की कन्हैया उतै ठाढ़ोई रहत है। कहै पदमाकर त्यों सांकरी गली है अति इत उत भाजिवे को दांव न लहत है। दौर दधि दान काज ऐसी अमनैक तहां आली वनमाली आय वहियां गहत है। भादों सुदी चौथ को लख्यो री मृग अंक यातें झूठहू कलंक मोहि लागिबो चहत है॥ ११४॥

सवैया ।

आवति याहि खेलाइबे को नित सूने विसूने न नेक अघाति हौं । छोहभरी बतियां नहीं सों यह छोहरा मोल लयो सब भांति हौं ॥ टूटे हरा छरा छूटे सबै पै तऊ सुख लूटत हो न अघाति हौं । देखत हेत हिया न खरोट पै आंखिन ओट भये मरि जाति हौं ॥ ११५ ॥

निज काज करैं अपने मन को तनिको न दया उर धारती हैं । गिरि सों गिरि आनि मिलावती फेर उपाय के बीचहि पारती हैं ॥ मिलि चौंचदहाई चवाइन ये कुल-कानि न नेक निहारती हैं । इनसों न उपाय चलै कबहूं पढ़ि मोहनी मंत्र सी डारती हैं ॥ ११६ ॥

सारो सुवानि पढ़ावन को सबको मनमोहि को ठेलि पठैये । पास गये पिंजरान के सुन्दर कौतुक होत सो काहि देखैंये ॥ भोरे अनार के बीजन के मेरे मानिक मोतिन को मुंह नैये । तीछन चोंच के चोटन सों तन चोंथई लेत जबै ढिग जैये ॥ ११७ ॥

अथ वर्तमान गुप्ता का उदाहरण—कवित्त ।

छूट जाय गैया कै बिलैया चाट चाट जाय कौन दुख दैया दैया सोच उर धाखो मैं । हौंही जमवैया औ धरैया निज मैया तरे कहीं जो कहैया हाथ होयगो बिचाखो मैं॥

ग्वाल कवि हौले की अवैया निरदैया यही आज या समैया ओट पैया गहि पाख्यो मैं । भैया को बुलाओ या कन्हैया को करैगो हाल दधि को चोरैया मैया पकरि पछाख्यो मैं।

आन तें न आयो यही गांवरे को जायो माई बापुरे जिवायो प्याय दूध वारे वारे को । रसखान सो तौ पहचानियो न मानत है लोचन लजैया औ नचैया द्वारे द्वारे को॥ बबा को सौं सोच कछू मटुकी उतारे को न गोरस के ढारे को न चोर चोर डारे को । यहै दुख भारी गहै डगर ह हमारी मांझ नगर हमारे ग्वार बगर हमारे को ॥

सवैया ।

याही तें नीके परोस बसैं सब अल्प परोसई होत सहाई । आली है सौतिन तो रसवादिनी जानति है नहीं पीर पराई ॥ कान्ह उठाय लियो मुहिं दौरि कहा कहिये कविराम बड़ाई । बैठि गई सुधि नेक रही नहीं ऐसी कछू मुहिं घूमरी आई ॥ १२० ॥

अथ द्वितीय भेद—विदग्धा कथनम् दोहा ।

द्विविध विदग्धा जानिये वचन विदग्धा एक ।
क्रयाविदग्धा दूसरी भाषा विदित विवेक ॥
वचनन की रचनान तें जो साधे निज काज ।
वचन विदग्धा नायका ताहि कहत कविराज ॥
जो तिय साधे काज निज करि कछु क्रया सुजान ।
क्रयाविदग्धा नायका ताहि लीजिये जान ॥ १२२ ॥

वचन बिदग्धा * का उदाहरण ।

हौं तो आज घर तें निकरि कर दोहनो लै खरक गही तो जान औसर दुहारी को । दूरि रह्यो गेह उनै आयो अति मेह महासोच है रसाल नई चूनरी की सारी को ॥ छाहा रंग राखि लीजै ढील जिन कीजै लाल ऐसो नहिं पैहो हाय औसर अवारी को। आनि के छिपैये सुन कुंवर कन्हैया दैया कहा घटि जैहै कारी कामरी तिहारो को ॥

चूमी कर कंज मंजु अमल अनूप तेरे रूप के निधान कान्ह मो तन निहारि दे । कालिदास कहे हंस हेर मेरे पास हरि माथे धर मुकुट लकुट कर डार दे ॥ कुंवर कन्हैया मुखचन्द की जुन्हैया चारु लोचन चकोरन के प्यास निरवार दे । मेरे कर मेहँदी लगी है नदनन्द प्यारे लट उरझी है नेक बेसर सुधार दे ॥ १२४ ॥

तोरत फूल कलीन नवीन गिरी मुंदरी को कहूं नग मेरो । संग की हारी हेराय गोपाल गई अरसाय डराय अंधेरो ॥ सासति सासु की जाय सकों न अहो छिन एक न गैयन फेरो । कुंजबिहारी तिहारी थली यह जात उजारी दया करि हेरो ॥ १२५ ॥

---

* वचन बिदग्धा और स्वयं दूतिका में क्या अन्तर है ? हजारा देखिये ।

कवित्त ।

तीर है न बीर कोऊ करै ना समीर धीर बाढ़ो श्रम नीर मेरो रह्यो ना उपाव रे। पंखा है न पास एक आस तेरे आवन की सावन की रैन मोहि मरत जिआव रे ॥ संगम में खोलि राखो खिरको तिहारे हेत होति हौं अचेत तन तपन बुझाव रे। जान जात जान क्यों न कीजिये उताल गौन पौन मीत मेरे भौन मन्द मन्द आव रे।

झिलत झकोर रहै जोबन को जोर रहै समद मरोर रहै सोर रहै तब सों। कहै पदमाकर तकैयन के मेह रहै नेह रहै नैनन न देह रहै दब सों। बाजत सुबैन रहै उनमद मैन रहै चित्त में न चैन रहै चातकी के रब सों। गेह में नाथ रहै द्वारे ब्रजनाथ रहै कौलों मन हाथ रहै साथ रहै सब सों। १२७ ॥

सवैया ।

भौन में न जान देति बहै बिन बातन देन लगैं करतालैं। देखि सुभाव परोसिन को सु नजीक न आय सकैं पर सालैं। बोलति बोल कुबोल सबै नटसाल से ते उर में अति सालैं। जाति रही ननदी जब तें तब तें लगी सासु चबाव के चालैं। १२८।

सिगरी निसि जागति जाति सदा पल सों पल लागत नाइन के। घरही रहिये अब का कहिये गुनिये गुन सौति

सवाइन के। हमरे नहिं पीतम होत सगे लगे बातन लोग लुगाइन के। किहि के बल उत्तर दीजे उन्हे सो सुने बने बोज चवाइन के।।१२९॥

दोहा।

कनकलता श्रीफल फरी रही विजन वन फूल।
ताहि तजत क्यों वावरे अरे मधुप मतिभूल।१३०।

अथ क्रियाविदग्धा का उदाहरण कवित्त।

सखीसुखदैन स्यामसुन्दर कमलनैन मिस कै सुनाए बैन देखि दुरजन में। सेनापति पीतम की सुनत सुधा सी बैन उठि धाई बाम धाम काम छाड़ि छन में। छबि कैसी छटा काम वन कैसी घटा आई झांकि चढ़ि अटा पागी जोबन मदन में। तजि सीसबसन सुधारिबे को मिस करि कीनो पायलागन सो लाग रहो मन में॥१३१।

मंजुल निकुंजन में मंजुल महल मध्य मोतिन की झालरें किनारिन में कुरविन्द। आयगे तहांई पदमाकर पियारे कान्ह आनि जुरे चौचंद चवाइन के वृन्द वृन्द। बैठी फेर पूतरी अनूतरी फिरंग कैसी पीठ दै प्रवीनी दृग दृगन मिलो अनिन्द। आछे अवलोकि रही आदरसमंदिर में इन्दीबर सुन्दर गोबिन्द को मुखारबिन्द॥१३२।

सवैया।

बैठी हुती वृषभानकुमारि सखीन को मंडली मंडि

प्रवीनो। लै कुंभिलानो सो कंज परी इक पायन आय गुवालि नवीनी। चंदन सों छिरकी वह वाकहँ पान दई करुना रस भीनी। चंदन चित्र कपोलन लोप कै अंजन आंजि बिदा कर दीनी॥ १३३॥

मंदिर मंद अनंद ह्वै सुन्दरि जात हुती अपने कहुं नातें। आगे सबै गुरु नारि खरीं हंस ये हरि बात कही इक घातें॥ हाथ उठाय हनी छतियां मुसकाय कै जीभ गही पुनि दांतें। वैनन में कह्यो ए जगदीस कि सैनन में कह्यो जाहु यहां तें॥ १३४॥

दोऊ अटान चढ़े पदमाकर देखे दुहूं कै दुओ छवि छाई। त्यों ब्रजबालैं गुपाल तहां वनमाल तमालहि की दरसाई॥ चंदमुखी चतुराई करी तब ऐसी कछू अपने मन भाई। अंचल ऐंचि उरोजन तें नंदलाल को मालती माल दिखाई॥ १३५॥

तृतीय भेद लच्छिता * लच्छण दोहा।

होत लखाई सखिन सों जाको पिय सों प्रेम।
ताहि लच्छिता कहत हैं कवि पंडित करि नेम॥१३६॥

---

* रसमंजरीकार तथा अपर ग्रन्थकारों ने परकीया का लच्छण यह लिखा है। "अप्रकटपरपुरुषानुरागा परकीया" सो लच्छिता में अप्रकट अनुराग कहां है?

उदाहरण—कवित्त ।

खेलो रंगरावटी छबीली छाहँ छाजन की कैसी अंग-नाई हेम हीरन हिसाब की । चांदनी चंदोवन दिवार दर पोसन में देहरी दुआरन दुलीचन के दाव की ॥ बैठो रहो राधे घनस्याम इन आंखिन पै पलंग बिछाय सेज सुखमा सबाव की । धाइ धाइ जाय बलि जाय जिन बागन में जैहै गड़ि पांयन में पांखुरी गुलाब की ॥ १३७ ॥

सीस सारी सकुरति अलकैं मुकर रहीं झलक कपोलन अनूप छबि छाई है । बदन बदलि गयो खौर सिर चंदन की अंजन की रेख देख बिथुर सोहाई है ॥ देव जो सोहाग भाग अनुराग उमगत कंचुकी दुहर कैसे दुरत दुराई है । करि रतिरंग मनमोहन सों साथे राधे आज मधुबन तें बिहान होत आई है ॥ १३८ ॥

सवैया ।

तू इत जोबनरूपभरी उतहू मन लाल को लाल चहा है । तैंऊं कछू बिनती सी करी उनहूं बड़ी बेर लों खाई हहा है ॥ देखि दुहूं को दूहूं पर प्यार भयो जिय में सुख मोहिं महा है । प्रीति बढ़ै दिनहीं दिन दून दुरावती काहे को होत कहा है ॥ १३९ ॥

आज सखी रसखान के ख्याल में मालती माल उतार लई री । मेरियै जान के सूंघीं सबै चुप ह्वै गई काहु न

कौन खई री। भावते भेद को बास लखे ननदी पहचानि प्रचंड भई री। मैं लखि वे रस की बतियां मुसकाय नचाय लचाय लई री ॥ १४० ॥

चतुर्थ भेद कुलटा लक्षण—दोहा।

जो बहु लोगन सों तिया राखति रति को चाह।
कुलटा ताको कहत हैं कोविद सदा उछाह ॥ १४१ ॥

उदाहरण—सवैया।

गैल में छैलन आवत जानि के झांकि झरोखन रीझ रिझावै। चंचल अंचल डारे रहै अंगिराय अनूप सरूप दिखावै। मोहति है मुरि के मुसकान में कोयल ज्यों कल बैन सुनावै। लाइ टिको ललचाय चितै भट को नट की गति मैन चलावै ॥ १४२ ॥

आंगी कसै उकसै कुच ऊंचे हँसै हुलसै फुफुतोन की फूंदै। चंदन चोट करै पिय जोट पै अंचल ओट दृगंचल मूंदै। देव जू कुंकुम केसर कामक बारिज बीच बिराजति बूंदै। बाढ़ो बिनोद गुलाल लै गोदन मोदभरी चहुं कोदन कूदै ॥ १४३ ॥

जोवन के मदमाती छै ऐंडि के सुन्दर बेसर टीको बनाए। चूंदरियां चटकीली छबीली को बेसरियां चित लेत चुराए ॥ ठाढ़े पयोधर जेहर गाढ़ी हँसे हरि हेर घनो छबि पाए। नैन नचाय चले नटुआ से अंगूठन ऐंठ अनौठ उठाए ॥ १४४ ॥

कोमल कंज से पायन जावक अंग घनो घनसार लगावै। हाथन में मेहंदी मुख पान लिलार में आड़ महा मन भावै। अच्छन अंजन चोर प्रवीन चितै चहुं ओर खरे मग धावै। या छबि सों निकरै तरुनी सगरे निज गांव के छैल रिझावै ॥ १४५ ॥

पंचम भेद मुदिता लक्षण—दोहा।

सुनत लखत चित चाह की बात बात अभिराम।
मुदित होय जो नायका ताको मुदिता नाम ॥ १४६ ॥

उदाहरण—कवित्त।

माइके के बिरह मयंकमुखी दुखी देखि भेद ताको सासुरे के मालिन बतायो है। मो पै ठकुराइन हुकुम करि बोई करो खिजमत करिबो हमारे बाट आयो है। भौन में तिहारे बाग ताकी हौंहौं सेवती हौं तामें तहखानो सूनो अति ही सुहायो है। ताकी कोठरीन की अँधारी भारी सुन कै सु दुलही दुलारी को महारी मोद छायो है ॥ १४७ ॥

बृन्दावन बीथिन बिलोकन गई हो जहां राजत रसाल वन ताल औ तमाल को। कहै पदमाकर निहारत बन्योई तहां नेहिन को नेम प्रेम अदभुत ख्याल को। दूनो दूनो बाढ़त सु पूनो की निसा में अहो आनद अनूप रूप काहू ब्रज बाल को। कुंजतें कहूं को सुनि कंत को गमन लखि आमगन तैसो मनहरन गोपाल को ॥ १४८ ॥

सवैया ।

ग्रीषम की निसि फूलन को परवीन तिया परजंक बिछायो । चंदन चारु उसीर के नीरन चातुरे चौक सबै छिरकायो ॥ आय कहूं तें सयानी सखी निरसंक ह्वै जो परजंक उठायो । भौंहन फेरि तरेरि सु नैन सखो तन हेरि हिये सुख पायो ॥ १४९ ॥

सोधि प्यारी मनिमंदिर में रंग रावटी पीय नवीन बनाई । चित्र विचित्र लिखे बहु भांतिन देखे लगे सब काल सुहाई ॥ द्वार निहार पछीत के भीत में टेर सखी मुख बात सुनाई । सौ गुनो फूल हिये महं राखि चितेरिन चौ-गुनी रीझ दिखाई ॥ १५० ॥

दोहा ।

परखि प्रेमबस परपुरुष हरखि रही मन मैन ।
तौ लगि झपि आई घटा अधिक अंधेरी रैन ॥ १५१ ॥

छठवां भेद अनुसयना लक्षण ।

कही सु अनुसयना त्रिविध प्रथम भेद यह जान ।
वर्तमान संकेत के बिघटन तें सुखहान ॥ १५२ ॥
होनहार संकेत को धरि अभाव उर माहिं ।
दुखित होय सो दूसरी कहत सु अनुसयनाहिं ॥ १५३ ॥
जो तिय सुरत संकेत को रमन गमन अनुमान ।
व्याकुल होय सु तीसरी अनुसयना पहचान ॥ १५४ ॥

नष्टसंकेतानुसयना का लक्षण ।

आई रितु पावस अकास आठो दिसन में सोहत सरूप जलधरन की भीर को । मतिराम सु कवि कदंबन को बासजुत सरस बढ़ावै रस परस समीर को ॥ भौन तें निकरि वृषभान की कुवँरि देखो ता समै सहेट को निकुंज गिस्यो तीर को । नागरि के नैनन तें नीर को प्रवाह बढ्यो निरखि प्रवाह बढ्यो जमुना के नीर को ॥ १५५ ॥

भयो पतिभ्कार पतिभ्कार में उघरि गयो हतो जौन केलिकुंज कालिंदो किनारा में ॥ कहै गिरिधारी सो बिलोकते बिहाल भई बाल थहरानी मुकुताहल ज्यों थारा में ॥ ॥ छोटदार कंचुकी कलित कुच बोरन में सुखमा बढ़ी यों ताकी उपमा बिचारा में ॥ डारे मेवडम्बर बघम्बर अनूप मानो संभु के सरूप है अन्हात छिन्नधारा में ॥१५६॥

मानती न मालिन कहे ते क्यों न मेरी बात काहे को लतानन की लौंदें झकझोरतीं ॥ कहै सिरताज फुलवारी की बहार देखि करि अनुराग अनमोले सुख रोदतीं ॥ फूले री गुलाब गुलदावदी गहबदार बेला औ चमेलिन की वेलिन बिथोरतीं ॥ कारण कहा है इन मालिन को बाग बीच नाहक प्रसून ये अनारन के तोरतीं ॥१५७॥

सवैया ।

एक तो भौन महा अति सांकरो दूसरो लोगन को

है भराभर । तीसरी और बडो दुख या घरहांई करैं घ-
नोघेर घराघर ॥ कासों कहों मैं हिये की बिथा कथा और
सुनो सब भांति निरादर । पीतम को मिलनो सजनी भयो
पास को बास विदेस बराबर ॥ १५८ ॥

जरि जाती उजारत जखन के गिरि जाती सुने सन
की बतियां । हरियारी सु क्यों रहती द्विजदेव सुने रुन सू-
खन की बतियां । रहजाती सु क्यों वह प्रीतिलता सहि-
जाती व्यथा कबधों छतियां ॥ पति राखती जो न दया क-
रिके यह पूरी पलासन की पतियां ॥ १५९ ॥

द्वितीयानुसयना का उदाहरण—कवित्त ।

विचकित बल्लिका की माधुरी की मल्लिका की एला
की लवंग की ललित न्यारी क्यारी है । चम्पक की चन्दन
की मौलसिरी बृन्दन की बलित लतान सों मिलत साख
सारी है ॥ भनत कविन्द मत खेद करै मृगनैनी तेरे हेत
लीनी हम पवरि अगारी है । गहगह गुलबारी और सुन्दर
गुलाबबारी तेरे सासुरे मैं सुनो कैयो फुलवारी है ॥१६०॥

कूलन कलिन्दी केलि फूलन के बाग गजराज राजहंस
वंस थिरता धरत हैं । तीछन विसारे तेज मन्द होत बा-
नन के मदन कमानन के गोसा उतरत हैं ॥ कहै हरिदास
धुनिधारी सब मौन होत चक्र चक्रवाकन के वाल विचरत
हैं । मन्द होत मुकुर सुचन्दजोति मन्द अरविन्द तें बुन्द
मकरन्द के झरत हैं । १६१ ॥

सवैया।

सूखि सोनारिन नारिन आन अनारिन सों पहिरावति पैरन। मालिन माल विचार तकी जकी आप लगी सर-दार निवेरन। चित्रिनि चित्र दिखावतही चित हारि रही न कही कर फेरन। नाइन पाइन जावक देत लगी ठकु-राइन को मुख हेरन॥ १६२॥

सासुरे तें चलि बाहिर बाग बिलोकतहीं अखियां भरि आईं। जानति ही जु सखी जिय की तिन कान में आन तहीं समुझाईं॥ देखे विना पहिलेही भली रतिकेलि की ठौर पिया पछिताईं। जाति जहां ही तहां पुनि सुन्दर म-न्दिर सूने घनी अमराईं॥ १६३॥

बाल के हाल बिलोकि बिलोकि सखी बिलखे न लखे चित चाइन। जानि गईं धनि के मन की छल सो थल केलि दियो कहि नाइन॥ जो पति द्वार घनी मेहंदी तो कहा तिहि दीजिये जावक पाइन। सासुरे जात भईं दु-चिती सुचिती कब होहुगी मेरी गोसाइन॥ १६४॥

तृतीय अनुसयना का उदाहरण—कवित्त।

बैठी बनि बानिक सों मानिकमहल मध्य अंग अल-बेली को अचानक थरक पयौ। कहै पदमाकर तहांई तन तापन तें हारन ते मुकुता हजारन दरकि पयौ॥ बाल छ-

तियां तें धकधक ना कढ़त मुख बक ना कढ़त कर ककना सरकि पखौ । पांसुरी पकरि रही सांसु री सँभारे कौन बांसुरी बजत आंख आंसुरी ढरकि पखौ ॥ १६५ ॥

सांझ सरसीरुह से बदन बिराजे राजे भोर को मयंक जाहि पटतर लेखे तें । रोम तन छाजे स्वेद बुन्द के बिराजे कन मुकुतप जाये जनु हेमका बिसेखे तें ॥ गरो भरो खरो बने बोलत न बोली अरु चोली गई भींज अंसुवान अवरेखे तें । लचकी नवेली वा चमेली कैसी लोंद लाल कर में चमेली की नवेलो लोंद देखे तें ॥ १६६ ॥

सवैया ।

देखति हौं यह कैसी गिरी अरु आय गयो मुख ऊपर फेन है । जाने कहा उठि दौरी सबै कहै कोऊ लग्यो कै जग्यो हर मैन है ॥ बूझि परी है बिथा अब तो जब आय वराय भयो कछु चैन है । याहि मनो लगि जाति है गांसी बिसासी कहूं जो बजावत बैन है ॥ १६७ ॥

इति परकीया । अथ सामान्या—दोहा ।

करति प्रेम जो सबहिं सों इक धनहीं के हेत ।
गनिका ताको कहत हैं जे कवि कलानिकेत ॥
तीन भेद तामें कहे प्रथम स्वतन्त्रा जान ।
जननी-आधीना कही बहुरि नियमिता आन ॥

बरवै ।

आप होय बस धन हित जो पति संग ।
ताहि स्वतन्त्रा भाषत बुद्धि उतंग ॥ १६८ ॥
जननी बस धन चाहे जो पति प्रीति ।
जननी अधीना भाषत सुकवि सप्रीति ॥ १६९ ॥
बैठि रहै पति घर मे धन हित बाल ।
नियमा ताहि बखानत सुकवि रसाल ॥

क्रमशः उदाहरण कवित्त ।

गेंदा गुलदावदी गुलाबन के पुंज मंजु कंज कुन्द कोमल कुमोदिनी कलित केर। जाही जुही मालती चमेली गन अनगन बाटिका सघन बन उपवन चारो फेर ॥ कहै परताप और तोसी है पियारी कौन तातें लखि तोहि हठि राखी है हिये निबेर। और फूल सूल सम लागत निहारे मोहि माधवी मधुर फूल आली क्यों न लावै हेर ॥ १७० ॥

सवैया ।

आठहू जाम खड़ी रहै धाम करै व्यभिचार कथा लरजै ना। ठाढ़ी भई है बसीठहु काहू की मानति ईठ कछू अरजै ना ॥ सूरत आन के मेरे लिये करनेस जू ल्यावति मो गरजै ना। या ब्रज गांव बसै सुभ ठांव सु कोउ चितेरिन को बरजै ना ॥ १७१ ॥

रूप अनूप सोहात नयो परभात सों जोबन रूप उजेरो।

कंचन से तन भूषन भूषित गीत कला गुन ज्ञान घनेरी ।
सील सुभाय सयानप एक सिरै सबतें तुहि में हिय हेरी ।
हीकर मोद खुसी कर पीय को मंत्र बसीकर सीकर तेरी ।

इति सामान्या * अथ पूर्वप्रकाशितान्तर्गत अन्यसुरतिदुःखिता, वक्रोक्तिगर्विता और माननी कथन—दोहा ।

प्रथम कही जे नायका ते सब तीन प्रकार ।
अन्यसुरतिदुखिता सुइक मानवती पुनि नार ।
पुनि वक्रोकति गर्विता इहि विधि भिन्न प्रकार ।
इनके लच्छण लच्छ सब भाषत मति अनुसार ॥ १७३ ॥
प्रीतम प्रीति प्रतीत जो और तिया तन पाय ।
दुखित होय सो दु:खिता बरनत कवि समुदाय ।
करै ईरषा तें जु तिय मनभावन तें मान ।
ताहि मानिनी कहत हैं कविजन परम सुजान ।
निज नायक के प्रेम को जो तिय करै गुमान ।
प्रेमगर्विता नायका ताको कहत सुजान ॥ १७४ ॥
जाको अपने रूप को अतिही होय गुमान ।
रूपगर्विता कहत हैं ताको सुमतिनिधान ॥

● जैसे स्वकीया में धीरादि और अवस्था भेद वर्णन किया है तैसे परकीया सामान्या में क्यों नहीं ?

अथ अन्यसुरतिदुःखिता * का उदाहरण ।

चाख्यो कै पियूष अभिलाख्यो कै अनन्द उर भाख्यो ना बनत ईस और जो कपट में । धरत कहूं को पाय परत कहूं को वाय करत कला तू भाय जैसी नाहिं नट में । जान न दुराव तू अजान न दुराव भले मेरे जान आई आज कारे के झपट में ॥ कालिन्दी के तीर तू अकेली तनी भोर बीर लेन गई नीर भरि ल्याई नेह घट में ॥ १७५ ॥

याही को पठाई बड़ो काम करि आई बड़ी तेरियै बडाई लख्यो लोचन लजीले सों ॥ साची क्यों न कहै कछु मोको किधों आप ही को पाई बकसोस ल्याई बसन छबीले सों ॥ कवि मतिराम मोसों कहत सन्देसोऊ न भरे नखसिख अंग हरख कटीलेसों ॥ तू तो है रसीली रस बातन बनाय जाने मेरे जान आई रस राखि के रसीले सों ॥ १७६ ॥

आई अनमनी ह्वै बदन पियराई छाई सुधि ना रही है कछु आपने परारे की । कहत कछू पै मुख कढ़त कछू को कछू देखति हौं आज तेरी गति मतवारे की ॥ नेक थिर ह्वै के बैठ राई लोन वारों तो पै तू तो हनुमान मेरी साथिन है बारे की ॥ बजर परी री मोपै पठई कहां तें बीर नजर लगी री तोहि जुलफनवारे की ॥ १७७ ॥

---

* दु:खिता और लच्छिता में क्या अन्तर है ?

आई छल छन्द सों गोबिन्द संग खेलि फाग केसर के रंग को सुअङ्ग छबि छ्वै रही। कहै कवि दूलह न जानि परी कौतुक में पिछले पहर की सुरैनि घरी ह्वै रही। धाइ घर जाइ न्हाइ नूतन बसन साजि आरसी लै हेरे मुख दूनो दुति ज्वै रहो। बेसर के मोती बीच रही है गुलाल लाली आली यह लाली सो हमारी सौति ह्वै रही॥ १७८॥

जदपि हमारो कन्त रहत हमेस घर तदपि तिहारो दुख आनि मोहि घेखो री। पद्माकर प्यारी हौ परोसिनी हमारी तुम याहीतें भयो है छौन मो तन घनेरो री। ह्वै है कैसी हाय अब ओरे यह प्रौन लाग्यो होन लाग्यो भौन भौन भौंरन को फेरो री॥ सिसिर को अन्त आयो प्रगट बसंत आयो अन्त आयो मेरो पै न कन्त आयो तेरो री।

किन अटकायो मेरे मन को मदोपलाल मेरे मन यही तो खरक खरकति है। कालिदास कौन धों भई है सौति सहज ही देखी सुनी नाहीं तऊ छाती दरकति है। मोसों वनमाली सों बियोग भयो आली आज कौन की धों भागन में भई वरकति है॥ मेरो आंख दाहिनी लगी है फरकन आज कौन वाम की धौं आंख बाईं फर-कति है॥ १८०॥

आप अपबातन के नारी सब जहां तहां हिलि मिलि सजनी समाजनि भरति है। कालिदास कोऊ कहै फरकति

आंख मेरी येरी आज मोको कछू बूझि ना परति है। बाईं है कि दाहिनो यों बूझति सहेली बात विष कैसी बेलि कैसो बात बिसरति है॥ बाईं आंख बूझि या परोसिनि को मेरी भटू मेरी आंख दाहिनो सदाईं फरकति है॥१८१॥

सवैया।

ऐंड भरे अमनैक अमान गुमान मृगीन के जीत लिये हैं॥ ओज मनोज भरे जिन के सुसरोजनहू नहिं छोर छिये हैं॥ साल से सालत सौतिन के तिन की चित चाय वियोग दिये हैं॥ देखे अपूरब नोखे नए मनरंजन खंजन मीन किये हैं॥ १८२॥

हेरें हँसे नहिं औरन को अरु चौगुनो चित्त बढ़ावत मेरो॥ नाहक तू बदनाम करै ब्रज की वनितान करै घर घेरो। दोस न दीजिये येरी भटू परनारिन को सपनो नहिं हेरो। मारिबो पी को न सालत है अब सालत सौत बचायबो तेरो॥ १८३॥

गई सांझ समै की बदी बदि कै बड़ी बेर भई निसा जान लगी॥ कवि मन्य जू जानो दगैलन छैलन छैल की छाती निदान लगी॥ अब कौन को कीजे भरोसो भटू निज बारिये खेतिये खान लगी॥ अति सूधे बोलायबे की ब-तियां नहिं जानिये काधों बतान लगी॥ १८४॥

अथ मानिनी का उदाहरण—कवित्त।

माने नाहिं माने तो मनावे कैसे मकरंद लाल बिन दूखने तू लाल को बिदूखने। हँस मन मोहन सों रस बस कर एरी लाए हैं सुमन ते सुमन लागे सूखने॥ कौलों ले न बोले मुख बोल बलि जाउं प्यारी तोते मधुराई पाई जख ने पिजख ने। उने प्यास भूख ने तू तजि बैठी भूखने री तोहि तो मनावे ब्रजभूखने तू भू खने॥ १८५॥

उज्जल महल्ल जगमगत जुन्हैया कुंज गुंजत मधुप पुंज माते मधु पान कै। नागर प्रवीन कल चौसठ प्रवीन आए तेरे रसलीन नदनँदन अचानकै॥ हिये सो हलाव चल कंठ सो लगाव अब कहै दया देव राख प्यारी परी प्रान कै। जो पै तेरो मानहो सो मानोमन मानोनो तो हाहा आज सौंप मोहि मानिनी अमान कै॥ १८६॥

लोचन लहे को फल सफल हमारो कर एरी प्रानपति को सनेह नेह लीन कर। तैंही पाई परम निकाई को अवधि पद एती वृषभान की कुमारी अर वी न कर॥ हाहा ह्वै उघार मुख टार पट घूंघट को निज तन-पानिप में पो कै दृग मीन कर। ससिहि मलीन कर कंज छवि छीन कर सौतिन को दीन कर लालहि अधीन कर॥ १८७॥

संपुटित जलज लहैती जल जात जब कुमुद कलाप मुकुलित दरसात है। मृग दृग सकल निहोरत रहत सिर

छोरत कबंद कीर कोकिल नसात है ॥ छटयेस नदनंदन हेरत तिहारो मग जगमग दीपत बिसाल बाल गात है। तृषित चकोर छवि छाकत रहत जब चपल नखतपति लखत लजात है॥ १८८॥

रूस बनमाली सो बसंत में न आली काकपाली धुनि सुनि कोऊ धीर ना धरत हैं। चुन्नीलाल कहै त्यों पलासन की लाली लखे बिलखि बियोगिन के जियरा डरत हैं॥ मौर वारे मंजुल रसालन पै धीर धीर भीर भीर भौंरन के गुंज गुँजरत हैं। मदन गुरू के मनो चेला चहुं ओरन तें मान के उचाटन के मंत्र उचरत हैं॥ १८९॥

चांदनी के आंगन बिछौना बिछे चांदनी के फैल रही चांदनी सोहाई देव भूम भूम। तोही बिन फीकोई लगत चल चंदमुखी तेरेई चरन चरचत मुख चूम चूम॥ देख चल आली कैसो राख्यो है चंदोवा तानि तामे सुख दान तो बिरह गिरै घूम घूम। झीनी झीनी झालर जुन्हाई की झलक तैसो झिल मिल झालरैं रहीं हैं झुकि झूम झूम॥ १९०॥

सवैया।

और सो कौतुक बोलैं हंसे पर पीतम की तू पियारी है प्रान की। केतो चुनै चिनगी को चकोर पै चोप है केवल चंद छटान की। जौलों नहीं तुम तोलों अली गति

दास के ईस पे और तियान की। भास तरैयन में तब लौं लव लौं प्रगटै न प्रभा जग भान को॥ १९१॥

द्वार के द्वारिया पौर के पौरिया पाहरुआ घर के घन स्याम हैं। दासो के दास सखीन के सेवक पार परोसिनि के धन धाम हैं॥ श्रीधर कान्ह भरे इहि भाइन मान करै इतनो पर वाम हैं। एक कहै बिसरामथली वृषभानलली की गली के गुलाम हैं॥ १९२॥

है यह नायक दच्छिन छैल सुतो अनकूल कियो चित चोर है। है अभिमानी सु आपने रूप को दीन ह्वै तोसों रहै निसि भोर है। है तन सांवरो गोरो रंगो मन तेरई प्रेम पस्यो झकझोर है। है सुखदायक नैनन नागर है ब्रजचंद पै तेरो चकोर है॥ १९३॥

मानवती वृषभानकुमारि लला मनुहारि करो रस डोरो। श्रीपति कोटिक भांति मनाइ रहे गहि पाय पै मान न छोरो॥ ताके हिये उपचार विचार निहारि तऊ न हैं उत्तर भोरो। खंडित कौल को लै दल कामिनी बंधुक के दल सों गहि जोरो॥ १९४॥

मानी न मानवती भयो भोर सु सोच तें सोय गए मनभावन। तेह तें सासु कही दुलही भई बार कुमार को जाव जगावन॥ मान को रोस जगैबे को लाज लगी पग नूपुर पाटो बजावन। सो छवि हेरि हेराय रहे हरि कौन को रूसिबो काको मनावन॥ १९५॥

अथ प्रेमगर्विता * का उदाहरण—सवैया।

मोहि पठावे खरी हठि कै नहिं जाउं रहै मन में अनखानो। याही तें सासु उदास रहै उपहास करैं ननदो औ जिठानी॥ मौन गहीं मन मारे रहीं निज पीतम को कहौं कौन कहानी। जायबो वेगि लिवायबो मोहि सो- हात नहीं परभात को पानी॥ १८६॥

मनरंजन अंजन कै तन में अंग राग रचे रति रंगन में। गृह के सिगरे नित काज करैं गुरु लोगन के सत सं- गन में॥ कहिये कहि कौन सों कौन सुने सु परे बनै प्रेम प्रसंगन मे। धनि वे धन्न हैं तिन के लहने पहरे गहने नित अंगन मे॥ १८७॥

अथ रूपगर्विता का उदाहरण—कवित्त।

नेक जो हंसो तो लाल माल होत हीरन की नेक जो मुरों तो मेरी नील मनि झलकी। अंजुरी भरी है मुख धोयवे को झारी लेके सखिन निहारी दुति राती होत जल की॥ जो मैं रचों चीर तो कुचील जुरे जोबनन दे- खिवें को आंखें गुनधरहू की ललकी। आंगन काढ़ों तो भौंर भौरन अंधेरो होत पाय जो धरों तो महि होत म- खमल की॥ १८८॥

* प्रेम गर्विता और स्वाधीनपतिका मे क्या अन्तर है?

आजु हौं गई तो सखु न्योते नँदगाव ब्रज सांसति बड़ी है रूपवती बनितान की। घेर लीनी तियन तमासो करि मोहि लखे गहि गहि गुलुफ लुनाई तरवान की ॥ एकै बलि बोल २ औरन बतावै रीझ रीझ कुँवराई अरुनाई मेरे पान की ॥ घूंघट उघारि मुख लखि लखि रहैं एकै एकै लगी नापन बड़ाई अँखियान की ॥ १९९ ॥

छाई छबि अमल जुन्हाई सो बिछौनन पै तापर जुन्हाई जुदी दीपति रही उमङ्ग ॥ कवि परमानन्द जहांई अवलोकियत जहां तहां नीलकंज पुंजन परै प्रसंग ॥ सोनजुही माल किधौं माल मालती की पहचानियत कैसे सनो पंकज सुगन्ध संग । आवत निहारो हौं तिहारे सेज प्यारे पग धरत चुवोई परै गहब गुलाब रंग ॥ २०० ॥

सवैया ।

न्हातई न्हात तिहारई स्याम कलिन्दियो स्याम भई बहुते है ॥ धोखेहू धोयहों यामे कहूं तो यहै रंग सारिन में सरसै है ॥ सांवरे अंग को रंग कहूं यह मेरे सुअंग में जो लगि जैहै ॥ छैल छबीले छुओगे जो मोहिं तो गातन मेरे गोराई न रैहै ॥ २०१ ॥

—❋✿❋—

अथ दश विधिनायकाकथन—दोहा ।

प्रोपितपतिका खंडिता कलहंतरिता होइ ।
विप्रलब्ध उतकंठिता बासकसज्जा जोइ ॥ २०२ ॥

स्वाधिनपतिका ५ हत हैं अभिसारिका बखान।
प्रगट प्रवत्स्यतप्रेयसी आगतपतिका ज्ञान ॥ २०३ ॥
ये सब दस विध नायका कविन कही निरधार।
तिन के लच्छण लच्छ सब क्रम तें कहत विचार ॥२०४॥

अथ प्रोषितपतिका का लच्छण।

प्रिय जाको परदेस में प्रोषितपतिका सोइ।
उदित उदीपन तें जु तन संतापित अति होइ।

मुग्धा प्रोषितपतिका— यथा कवित्त।

मांग सिख नौ दिन को न्योते गे गुबिन्द तिय सौ दिन समान छिन मान अकुलावे है। कहे पदमाकर छपाकर छपाकर ते बदन छपा कर मलीन मुरझावे है॥ बूझत जु कोऊ कै कहारी भयो तोहि तो औरही को औरै कछु बेदन बतावे है। आंसू सकै मोच ना सकोच बस आलिन में उलही बिरहबेल दुलही दुरावै है॥ २०६॥

मध्या प्रोषितपतिका यथा।

जादिन तें पीतम विदेस को गमन कोनो तादिन तें ललना अनंद सों छरी रहै। अहमद केहू मिस हेर हेर चहू ओर आंगुरीन छाले परे गनत घरी रहै॥ सोचत सकोचन तें बतियां दुरावती है मोचन चहति प्रान औधक परी रहै। इन्दुमुखी जंभा लागी सुरत अचंभा लागी कंचन के खंभा लागी रंभा सी खरी रहै॥ २०७॥

आह के कराह कांपि छसतन बैठी आप चाहति सं-देसो कहिवे कों पै न कहि जात। फेर मसि भाजन मँगायो लिखवे को कछू चाहति कलम गहिवे को पैं न गहि जात॥ एते माझ देव अंसुवान को प्रवाह बाढ़ो चाहे संभु थाह लहिवे को पै न लहि जात । रहि जात गात बात बूझे तें न कहि जात वहि जात कागद कलम हाथ रहि जात॥ २०८॥

प्रौढ़ा प्रोषितपतिका यथा—सवैया।

पिय साखि दै चैत के चन्दहि जीत्यों तहां मै लगो अति नेरे रही। पुनि सेवक सों करि सेवक सारदी हारदी मोको उजेरे रही॥ तन बूड़ो अवे श्रम पानिप सों पुलकावलि हू को तरेरे रही। बलि द्वैज के कोन से जीतवे काज उए अथये लगि हेरे रही॥ २०९॥

टीका।

वहिरंगिनी सखी की उक्ति नायका प्रति—द्वितीया का चन्द्रमा देखने में व्यंग। प्रौढ़ा (पण्डिता) नायका द्वितीया का बाल चन्द्रमा सर्व प्रिय जान, निज नायक की दृष्टि परिवो मान, एक टक देखे है कि इसी (बाल चन्द्रमा) द्वारा इन तृषित नैनों को सफल करिये। ऐसे औसर में सात्विकसम्पन्ननायका की कान्ति देख, सखी पूछति है॥

अथ परकीया प्रोषितपतिका यथा ।

जाहि दवानल पान किये तें बढ़ी हिय में सरदी स-रदे सों । दास अघासुर जोर ह्यो जो लख्यो बतसासुर से वर दे सो ॥ बूड़त राखि लियो गिरि लै ब्रज देस पुरंदर बेदरदे सों । ईस हमें परदे परदे सो मिलों उड़ि ता हरि सों परदे सों ॥ २१० ॥

मधु मास में दास जू बीस बिसे मन मोहन आय हैं आय हैं आय हैं । उजरे इन भौनन को सजनी सुख पुंजन छाय हैं छाय हैं छाय हैं ॥ अब तेरी सौं मेरी न संक इ-कंक व्यथा सब जाय हैं जाय हैं जाय हैं । अवलोकि गो-पालहिं दास जू ये अँखियां सुख पाय हैं पाय हैं पाय हैं ॥ २११ ॥

जाके लिये डार दई भार माझ कुल कान तन मन धाम धन प्रानहू न्योछावरे की । जासु मुख देखे बिन पल हू पर्यो ना कल भूल गई सुध बुध भई गति बावरे की ॥ छायगो दुरन्त वह कन्त बिज्ञयानन्द जू हाय निबही ना दई ओछी प्रीति पांवरे की । ताप तन ताई लिखि लाख-हू पठाई पाती पाखहू बिताई पै न पाई सुधि सांवरे की ॥ २१२ ॥

अथ गनिका प्रोषितपतिका यथा ।

मन मोहन मेरे गए जब तें तब तें ना कहूं कल पा-

वनो है। हम कासों कहैं दिल की बतियां छतियां वही छैल पै तावनो है॥ सु दमोदर जू निसबासर ही उनहीं के सु ध्यान में धावनो है। धन देवे धनी बनी आवै जबै कोऊ भांति बसंत बितावनो है॥ २१३॥

अथ खण्डिता लक्षण--दोहा।

अनत रमे रति चिन्ह लखि पीतम के सुभ गात।
दुखित होय सो खंडिता भाखत मति अवदात॥ २१४॥

मुग्धा * खण्डिता यथा कवित्त।

मुंदि गो मयंक परजंक पै परी है कहा आज की घरी की यह आनद निहारे किन। कहै पदमाकर त्यों रंग में रंगीलेई छबीले छैल ऊपर फबीले चौर ढारे किन। एहो सुखदान प्रान प्यारे को बखान करो प्यारो पलकों सें तू पगों की धूर झारे किन। मंगलामुखी के बंगला तें प्रात आए रंग लालन को देख मंगलारतो उतारे किन॥

मध्या खण्डिता--कवित्त।

ख्याल मन भाए कहूं करि कै गोपाल घरे आए अति आलस भरेई बड़े तरके। कहै पदमाकर निहारि गज गामिनी के गजमुकतान के हिये पै हार दरकै। एते पै न

* जैसे मुग्धा खण्डिता होती है तैसे धीरादि क्यों नहीं होतो ?

आनन ह्वै निकरै बधू के बैन अधर उराहने सु दीवे काज फरके। कंधन तें कंचुकी भुजान तें सु बाजूबंद पौचन ते कंकन हरेई हरे सरके ॥ २१५ ॥

अथ प्रौढ़ा खंडिता--सवैया।

हारिकाछाप लगै भुजमूल कह्यो फल बेद पुरानन तीन है ॥ कागद ऊपर छाप सुनी जेहि को सिगरे जग जाहिर गौन है ॥ आप लगाई जो कुंकुम की सो सोहाई लगै छवि सों उर भौन है ॥ छाती की छाप को प्यारे पिया कहिये बलि याको महातम कौन है ? ॥ २१६ ॥

पगछाप सु भाल मे लाल कहा हिय को अहो माल दई गुनहीनी। पल पीक की लीक रची असुची बलि मे नखरेख खची दुखभीनी ॥ यह स्यामलता अधरान धरी सु करी घनस्याम सु नीति प्रवीनी। मुखही तो अलीक रचे हैं लला तुम काहे सजाय समीपिन कीनी ॥ २१७ ॥

परकीया खण्डिता--सवैया।

आए कहूं रति मानि के मोहन मोहिनी देखि भई मनहीनी। सुन्दर दोस तुमैं न कछू विधि मेरे लिलाट मे यों लिखि दीनो ॥ बैर कर्यो सिगरे जग सों तुम सों हित सो तुमहूं यह कीनो। सुन्दरि यों इतनो कहिके भरि सांस लयो अँखिया भरि लीनो ॥ २१८ ॥

जोरि के कोरिक प्रानन भावते संग लए सखियान में आवत। भीजी कटाछन सों घन आनद छाय महा रस को चरचावत। ऐंड़ भरे फिरि या जिय को गति जानत जीवन होय जनावत। मीत सुजान अनूठिये रीति जिआय के मारत मारि जिआवत ॥ २१९ ॥

गनिका खण्डिता सवैया।

अंत की प्रीति करी सो करी अब आन परी तुमै औ-रन की दब। लालन राखिये लालन हार करी जिहि प्यार भरी कर दै सब ॥ को बिन काज करै बकवाद सुनी हती आज लई लखि वा छब। आज तें राज करो बलि जाउं सु काज कहा हमसों तुमसों अब ॥ २२० ॥

— ❀❀❀ —

अथ कलहांतरिता लक्षण ॥ दोहा।

पीतम को अपमान करि पुनि पाछे पछताय।
कलहंतरिता नायका ताहि कहत कविराय ॥

मुग्धा कहांतरिता—कवित्त।

तोसों कह्यो तब नाह की ओर सु हेरिये तेरे हहा हरि खात है। आंखिन ओट लह्यो तबहीं छिन मे पुनि और कछू न सोहात है ॥ पायन प्रानपियारो पर्‌यो तुव पै कछु ऐंठि जुदी होइ जात है। तोहि परी यह बानि कहा छिनहीं रिस औ छिनहीं पछतात है ॥ २२२ ॥

लखि लाल लजाय रही ललना कहि सुन्दर बैठि अ-लीगन मे । हरि हारे बुलाय न बोली जबै तब वेऊ गए उठि के बन मे ॥ करते इतनी तो करो पहिले पुनि कैसी रची है तिया तन मे ॥ कहि कै न सकै सखिहू सों कछू पछताति महा मनहीं मन में ॥ २२३ ॥

मध्या कलहांतरिता—कवित्त ।

झालरनदार झुकि झूमत वितान बिछे गहब गलीचा और गुलगुली गिलमै । जगर मगर पदमाकर सु दीपन की फैली जगा जोति केलि मंदिर अखिल मै ॥ आवत तहांई मनमोहन के लाज रैन जैसो कछू करी तैसी दिल ही की दिल मै । हेर हरि बिलमें न लोभी हिलमिल मै रही हों हाय मिलि मे प्रभा की झिलमिल मै ॥ २२४ ॥

प्रौढ़ा कलहांतरिता ।

बैठी रतिमंदिर मे सुभग बनाए वेस जाके रूप आगे रति रूपहू निदरिगो । आयो तहां लाल तासों बोली नहि बाल नैक ऐसो कछू अकस अखारो आनि अरिगो ॥ एते माझ रूस हनुमान मनभावन गो लागो पछतान प्रेमपुंज यों पसरि गो । कान तें पैठि हिए बसो है जो मान सोई हाय इन आंखिन तें आंसू ह्वै निकरि गो ॥ २२५ ॥

आली है तिहारे सम कोऊ न हमारो हितू रूसि बन-माली हाली हम सों जुदै भयो । बीती हैक जाम रैन प-

रत न चैन क्योंहू दूजो है नबैरी मेरो मनहीं खुदै भयो ॥ कहै हनुमान कीनो मान धौं कहा तें हाय आज सब सौतिन के मन को मुदै भयो । बिन पिय प्यारे री दिवाकर समान मोहि आकर कलेस को निसाकर उदै भयो ॥२२६॥

भई चूक बड़ी हम तें सजनी वह हूक मिटै नहिं नावरे की। विजयानन्द रूठि गयो जब तें तब तें गति ह्वै रही बावरे की ॥ घर बाहिरहू ना सुहात कछू भई छीन दसा तन भांवरे की । खटकै हो सनेहभरी बतरानि चितौनि अरी वह सांवरे की ॥ २२७ ॥

बरवै खानखाना ।

नयना मति रे रसना निजगुन लीन ।
कर तू पिय झझकारे अजगुत कीन * ॥ २२८ ॥

सवैया ।

पी सों झुको रसना बिन काज लखे गुन नाम सयान

* कलहन्तरिता नायिका कहती है कि नयना (नीति विहीन) मति (निषेधार्थक) और रसना (रसविहीन) ने निज प्रीतम के प्रति यदि अनुचित आचरण किया तो कुछ आश्चर्य नहीं क्योंकि उन्हों ने निज नाम के अनुसार ही किया परन्तु हे कर कर्थात् प्रीति का करनेवाला कर नाम रखा कर जो तूने प्रीतम को झिझकार दिया यही बड़ा आश्चर्य किया ॥

तिहारे । नयना चले अति रूखे रहे तुम ताही तें नाम ए जानत धारे ॥ सन्त विरुद्ध चल्यो अतिहीं जिहि तें दुख नेक टरै नहिं टारे । पाय सुलच्छन नाम अरे कर काहे को नन्दलला भभकारे ॥ २२९ ॥

परकीया कलहान्तरिता । सवैया ।

नित ठान्यो अठान जेठानिन सों पुनि सासु को केती रिसाई सही । टन तूल गनी सब सौतिन को ननदी को अदीन ह्वै दाह दही ॥ इतनो कियो जाके लिये हम सुन्दर ताहि सों आज हौं रूसि रही । सखि सोचति हौं तब तें चित मैं विधि की गति जाति कछू न कही ॥ २३० ॥

गनिका कलहान्तरिता ।

कै पटुता परवीन तिया मनुहारि के बोल कहे मन माने । लै बहु रंगन अंगन में अँगराग लगाय सुगन्धन साने ॥ बङ्क लखे भृकुटीन के भायन सूधे सुभायन सों रस साने । ही हठि कै दृग दै कजरा कर फूल हरा गजरा नजराने ॥ २३१ ॥

कवित्त ।

ससकि ससकि उठै कसकि कसकि हियो याही अप-सोस तें कढ़ै ना भौनकोने सों । एक तान लागे मुकुतान के अनेक हार बकसत राज काज रूपे सों न सोने सों ॥ भनत कविन्द ऐसे नाह सों गुनाह बिना कियो मैं बिगार

रार टरै कौन टोने सों । एरी मेरी कुमति तैं कलह कराई अब सुलह करावै कौन साँवरे सलोने सों ॥ २३२ ॥

विप्रलब्धा लक्षण दोहा ।

लखि सूनो संकेत जो पिय बिन अति अकुलाय ।
ताहि विप्रलब्धा कहत सुकविन के समुदाय ॥ २३३ ॥

मुग्धा विप्रलब्धा ।

केलि के बगीचा तें अकेलो अकुलाय आई नागरि नवेली वेली देखत हहर परी । कुंज के अवास तहां गुंजरत भौंर पुंज सीतल समीर सोरे नीर की नहर परी ॥ देव तिहि काल गूंदि ल्याई माल मालिन यों देखत बिरह विष व्याल की लहर परी । छोहभरी छरी सी छबीली छिति मांह फूल छरी सो छुवत फूलछरी सी कहर परी ॥२३४॥

मध्या विप्रलब्धा ।

घटा घहराति बिज्जु छटा छहराति उठि आई है हरबराति ऐसे मेघझर में । काम की चपेटें लिये लाज की लपेटें तहां हरि सों न भेट भई कुंज केलि घर में ॥ जकी सी रही है तकि सुन्दर अचम्भित ह्वै हालो ना परति गई बूड़ि सोच सर में । आधे आधे आंखिन सों हेरति अलीन तन आधो वात आनन में आधिक अधर में ॥ २३५ ॥

प्रौढ़ा विप्रलब्धा ।

उन्नत उरोज अबला को सेत कंचुकी है राखो ना क-

कूक चित चोप रंगरेजे में । मलमल सारी सजी मोतिन किनारीदार झिलिमिली जोति होति चांदनी अमेजे में ॥ बिहँसि बदन बिमला सी सो अटा पै गई पेखे ना प्रबीन बेनी पिय सुख सेजे में ॥ जरद भई है वह दरद बतावै कौन सरद मयंक मारी करद करेजे में ॥ २३६ ॥

परकीया विप्रलब्धा ।

गंजन सु गुंज लग्यो तैसो पौन पुंज लग्यो दौ सम निकुंज लग्यो गुंजन सों गजि कै । कहै पदमाकर न खोज लग्यो ख्यालन को घालन मनोज लग्यो तीखे तीर सजि कै॥ सूखन सु बिम्ब लग्यो दूखन कदम्ब लग्यो मोहि न बिलम्ब लग्यो आई गेह तजि के । सीजन मयङ्क लग्यो सीतङ्ग न अंक लग्यो पंक लग्यो पायन कलङ्क लग्यो बजि कै ॥

चन्दद्युति मन्द भई फन्द में परी हौं आनि ननद करैगी सोर छाड़ गलबान दै । सासु सतैहै जेठपतिनो रिसैहै बङ्क बचन सुनैहै कहौं जोर जुग पान दै ॥ सौलों बिनती है गिनती है कै हहा लों देव करो कहा चाहति रहन कुल-कान दै । दान देरी जिय को नदान निरदई कान्ह बसी सब रैन मोहि अब घर जान दै ॥ २३७ ॥

गनिका विप्रलब्धा ।

निसि अँधियारी तऊ प्यारी परबीन चढ़ि माल के स-

नोरथ के रथ पै चली गई । कहै पदमाकर तहां न मन-मोहन सों भेंट भई सटकि सहेट तें अली गई ॥ चन्दन सों चांदनी सों चन्द सों चमेलिन सों और बन बेलिन के दलन दली गई । आई हुती छैल को छले को छल छन्दन सों छैल तो छल्यो न आप छैल सों छली गई ॥ २३८ ॥

उत्कण्ठिता लक्षण । दोहा ।

पिय सहेट आयो नहीं चिन्ता मन में आन ।
सोच करै सन्ताप सों उतकण्ठिता बखान ॥

मुग्धा उत्कण्ठिता ।

खरी दुपहरी भरी हरी हरी कुंज मंजु देव अलि पुंजन के गुंज हियो हरि जात । सीरे नद नीरन गँभीरन समीर छांह सोवे परे पथिक पुकारे कीर करि जात ॥ ऐसे में किसोरी भोरी गोरी कुंभिलाने मुख पंकज से पाय धरा धीरज में धरि जात । सोहैं घनस्याम मग हेरति हथेरी ओट ऊंचे धाम बांम चढ़ि आवति उतरि जात ॥ २४० ॥

मध्या उत्कण्ठिता । दोहा ।

पिय आयो नहिं यह व्यथा रही जु बाल दुराय ।
मूँदे नेह की बास लों मुख पर प्रगट लखाय ॥

मध्या उत्का यथा ।

आये न कन्त कहाँ धों रहे भयो भोर चहै निसि जाति सिरानी । यों पदमाकर बूझ्यो चहै पर बूझि सकै न सकोच

को सानो ॥ धारि सकै न उतारि सकै सु निहारि सिँगार हिये हहरानो । सूल से फूलन के फर पैं तिय फूलछरी सी परी मुरझानो ॥ २४२ ॥

बारही बार बिलोकति हारही चौंकि परै तिनके खुरकेहूं। सेज-परी मतिराम बिसूरति आई अहो अबहीं लखि मैहूं ॥ संग सखान के खेलत हौ अजहूं रजनीपति के अथयेहूं। लालन बेगि न जाहु घरें फिरि बाल न मानिहै पाय परेहूं॥ २४३ ॥

प्रौढ़ा उत्कंठिता । कवित्त ।

बैठी रंगरावटी में हेरत पिया की बाट आये ना बिहारी भई निपट अधीर मैं । देवकीनंदन कहै कारी घटा घेरि आई जानी गति प्रलै की डेरानी भय भीर मैं ॥ सेज पै सदासिव की मूरति बनाय पूजो तीन डर तीन ताको करो ततबीर मैं । पाखन मैं सांवरो सुराखन मैं अछैबट लाखन मैं लाखन को * लिखो तसबीर मैं ॥ २४४ ॥

परकीया उत्कंठिता ।

डर भो नगर कैधों काहू सों झगर कैधों बीचही बगर

* पंडिता नायका ने शिव, सांवरो, अक्षयबट और लाखन (लक्ष्मण) को स्थापित कर काम, अनल, अंबु और अनिल से अपने को रक्षित किया ॥

आनि सखा बिरमायो है। लीलाधर गैल में कि भूल्यो त-मरेल में किधौं सु काहू खेल में सखान अरुझायो है॥ दू-तिही सों तोष भो कि मोही सों सरोस भो कै कलह प-रोस भो सुघर हरि धायो है। केलि की न चाह धौं हिये न की उछाह धौं सुकौन हेत नाह धौं सहेट नहिं आयो है॥

गनिका उत्कण्ठिता। सवैया।

सेज सुधारि बिछौनन झारि सुगन्ध बगारि करी मन भाई। मण्डन अंग सिंगार सिंगारन हारन पौर लगी अकु-लाई॥ बाहर तें चलि भीतर आवत भीतर तें पुनि बाहर जाई। जेहर की धुनि तालहि दै तिय देहरी में जनु मैन नचाई॥ २४६॥

वासकसज्जालक्षण दोहा।

साजै सेज सिंगार तिय पिय मिलाप के काज।
वासकसज्जा नायका ताहि कहत कविराज॥ २४७॥

मुग्धा वसकसज्जा—सवैया।

भौन के कोन में भीतर जाय के बैठि सिंगार को साज बनायो। सुन्दर सीस को फूल दियो सिर मानो मनोज़ को छत्र चढ़ायो॥ देखति है दुरि द्वार को ओर न काहू सखीन सों भेद जनायो॥ देखि चरित्र नवोढ के मैन सु आपनी कीरति को फल पायो॥ २४८॥

मध्या वसकसज्जा—कवित्त ।

धारे लाल सारी प्यारी हीरन किनारीवारी अंगन अनंग दुति रंग चढ़ि आयो है। दामोदर कहै बाल बैठी है विनोद भरी लाल को विलोकिबे को मोद मढ़ि आयो है॥ झांकी झुकि झपकि झरोखा खोलि घूंघट को वदन बिकास को प्रकाश बढ़ि आयो है। जोरि कै नछत्रन वि- थोरि घन घोर मानो फोर रविमंडल को ससि कढ़ि आयो है॥ २४९॥

प्रौढ़ा वासकसज्जा—सवैया ।

भाखति है मुख बैन सखीन सों लाख हिये अभिलाषन जो है। कोमल हासहि नैन बिलासनि अंग सुबासन कै मन मोहै॥ मूरतिवंत किधों तुलसी तुलसीवन मैं रति सूरति सोहै। कुंज विराजति जोय बधू कमला जनु कुंज कुटी मइं सोहै॥ २५०॥

परकीया वासकसज्जा—कवित्त ।

पावन पलोट पोट सांझ तें सोआई सासु कहत क- हानी देवरानी नोद घिरकी। ननद पठाई रात जागिबे परोसिन के मूंद के किवार बेनि गूंदि राखी सिर की॥ सारी सुक पींजरा पै पंवई गिलाफ डारि भीतर धरावत हिये मैं प्रीति थिर की। चंद सो बदन ढांकि झाकति झ- रोखा बैठि मंद करि दीपक कमंद डारि खिरकी॥ २५१॥

गनिका बासकसज्जा—सवैया।

नीर के तीर उसीर के मंदिर धीर समीर जुड़ावत जोरे। त्यों पदमाकर पंकज पुंज पुरैन के पात परे न जे पोरे॥ ग्रीषम की क्यों गनै गरमी गजगौरन चाह गुलाब गभीरे। बैठी बधू बनि बाग बहार में बार बगार सेवार से सोरे॥ २५२॥

स्वाधीनपतिका लच्छण—दोहा

जा तिय के अधीन ह्वै पीतम रहै हमेस।
स्वाधीनपतिका नायका भाखत कला असेस॥ २५३॥

मुग्धास्वाधीनपतिका—कबित्त।

केलिकोठरी तें कढ़ै बाहिर घरीकहू न छोड़ खेल संग के सखान को दियो है री। गेह के उचित जन हास परहास करैं तज चित मैं न नेक सकुच कियो है री। परिपूर जोबन न झलक सरीर आइ उर अबहीं तें यह भावहि लियो है री। जादिन तें आइ गौनहाइ बाल ता दिन तें सांवरो सलोनो पर टोनों सो कियो है री॥ २५४॥

मध्या स्वाधीनपतिका—सवैया।

लै परजंक धरे भरि अंक निसंक ह्वै खावत प्रेम उपायन। चौंक परे तें परे उर लाग हियो सो हियो अनुराग सुभायन। लाजन हौं लरजी गहिरी बरजी गहिरी कहरी

कह दायन। जागत जानि कहानी कहै अरु सोवत जानि पलोटत पायन ॥ २५५ ॥

प्रौढ़ा स्वाधीनपतिका—कवित्त।

चाह के हैं चाकर गुलाम गोरे गातन के सेवक हैं साचे सुघराई सुखदान के । खानेजाद खासे खूबसूरत के भोज भने जोरावरदार तेरे कदम ललाम के ॥ छौरा छाँह छवि के पिछौरा पाय पोंछन के भौंरा खुसबोई मुख मधुर बतान के । मोह के मोसाहब मोसद्दी दृग फेरन के हेरन के हुकुमी हजूरी हँसिजान के ॥ २५६ ॥

फूलन सों बाल को बनाय गुहो बेनी लाल भाल दीनी बेंदी मृगमद की असित है। अंग २ भूखन बनाये ब्रजभूखन जू बीरी निज कर सों खवाई कर हित है। ह्वैके रसबस जब दैवे को महावर को सेनापति स्याम गह्यो चरन ललित है । चूम कर प्यारे को लगाय लई आँखिन सों एहो प्रानप्यारे यह अति अनुचित है। २५७।

परकीया स्वाधीनपतिका।

नखन बिलोकतहीं नखन बितीत भयो आँगुरीन पेखि कछू आड़ ना कराई मै। गुल पग धाय मोरबानहू मझाय पीडुरीन पर जाय जुथ्यो जहन भोराई मै। भौन कवि कहै घाघरीहू मै घुमरि आयो नेकहू मुख्यो न लङ्क लचक लराई

मै। लूटि गयो लालचो लजीलो मन मेरो हाय उन्नत उ-
रोज धराधर की तराई मै ॥ २५८ ॥

ढुरि ढुरि परै बेनी बिलुलि नितम्बन पै घेरि घेरि घू
मरत घाघरो घनेरी है । फेर २ फिरत निपट लचकीली
कटि फेरि दृग फेरि २ फेरि मुख फेरो है ॥ भुज की डुलनि
वा खुलनि कुच कोरनि को चाहि २ परमेस भयो चित
चेरो है। झुकि झुकि झूकति भरति घट ज्यों ज्यों त्यों त्यों
सैन के भभूकन भरत घट मेरो है ॥ २५९ ॥

उझकि झरोखा ह्वै झमकि झुकि झाँको बाम भूल
गई स्याम जू की खबर तमासा की। कहै पदमाकर चहूँघा
चैत चाँदनी सो फैल रहो तैसियै सुगन्ध सुभ स्वासा की ॥
तैसी छवि तकत तमोर की तरौनन की वैसी छबि बसन
की बारन की बासा की। मोतिन की माग की मुखौं की
मुसकानहुं की नैनन की नथ की निहारिबे की नासा की॥

सवैया ।

लाल की चूनरी चोकनो गात चकोर थकै मुखचन्द के
धोखे। लासी लटैं लटकैं कटि खीन पयोधर है मनमोहन
पोखे । वेधे मुबारक के उर मैं सर एको परै ना कटाच्छ
के ओखे। वाको न राखो कजाकी कछू जब बांकी चितौन
तैं झांको झरोखे ॥ २६१ ॥

गनिका स्वाधीनपतिका—कवित्त ।

अतर लजात मृगमद पङ्कजात पारजात वारिजात सब सौरभ को तंत्र है। श्रीपति अगर में अगर उदगार सो है वगर २ छवि छाजत अनन्त है। हो करन सुख मुख सौत को मसोकरन मदन जसीकरन जीकरन जंत्र है। पिय को रसीकरन रति को हँसीकरन सीकरन तेरो री बसीकरन मंत्र है। २६२॥

अभिसारिका लक्षण—दोहा।

करै सलन चरचा चलै पहुँचे जो पिय पास।
बोल पठावै सिख सुनै अभिसारिका प्रकास॥ २६३।

मुग्धाभिसारिका—दोहा ।

नैन चकोरन चन्द्रिका प्यारी आज निसङ्क।
आस वास आवत नखत लीने बीच ससङ्क॥ २६४ ॥
चलिये नवला वदन तें नाम तिहारे लाल।
हाँसी बातन में कछू हाँसी निकरी हाल॥ २६५।

मध्याभिसारिका—कवित्त ।

सखिन समाज तें उठाय अरबिन्दनैनी दत्त कवि कहै जात बीती जात रतियां। भूखन बनाय पहराय जरतारी सारी हीरन किनारी दै सँवारी हंस गतियां। किङ्किनी की नीकी जोति झलर मलर होति लाज तें नवेली के कढ़ै न

मुख बतियां । नूपुरन दाबि दाबि भूपर धरति पग दन्त दाबि अधर हथेरी दाबि छतियां ॥ २६६ ॥

प्रौढ़ाभिसारिका ।

सहज सुबास जुत देह की दुगुन दुति दामिनि दमक दीप केसर कनक तें । मतिराम सुकवि सिरोस सुकुमार अंग सोहत सिंगार चारु जोबन बनक तें ॥ सोयबे को सेज चली प्रानपति प्यारे पास जगत जुन्हाई जोति हँसन तनक तें। चढ़त अटारी गुरुलोगन की लाज न्यारो रसना दसन दाबे रसना झनक तें ॥ २६७ ॥

मन्द मन्द चली नदनन्द पै अनन्दभरो उमग अनन्द संभु मन्द मुसकान की। बोलत अली सों बिहँसत ललना के लटकन की लुरन औ मुरन अधरान की ॥ फहरात छोर छहरात लहँगे को छबि गूजरी जराय की वो जावक ज-पान की। पगन की लाली पग नखन उजाली आगे आली सी परति जाति आली मुकतान की ॥ २६८ ॥

परकीयाभिसारिका ।

बांसुरी के बीच एक भौंर डारि ल्याई सखी ढाँकि पट पल्लव सों महा बुद्धि भारी सों। भनत पुरान यामे आपही तें धुनि होत कान दैके कह्यो सुन राधा सुकमारी सों । रीझ रोझवारी जाहि आपही मगन भई नभ तन चितै

मुख मूधो स्याम सारी सों। आँचर में गांठ दै बिहँसि उठि चली आली प्यारी कही आज ह्यांहीं रहो ना हमारी सों ॥

सूझत न गात बीति आई अधरात अरु सोये सब जानि गुरुजन जे वगर के। छपि के छबीली अभिसार को किवार खोल्यो खुलगी सुगन्ध चारु चन्दन अगर के ॥ देव कहै भौंर पुञ्ज आये कुञ्ज कुञ्जन तें पूछ पूछ पाछे परे पाहरू डगर के। देवता कि दामिनि मसाल कैधौं जोति ज्वाला झगरे परत जागे सगरे नगर के ॥ २७० ॥

गनिकाभिसारिका—सवैया ।

रुचि पाय झवांय दई मेहँदी जिनके रँग होत मनो नग है । अब ऐसे में स्याम बुलावैं सखी कहि क्यों चलौं पङ्क भयो मग है। अधरात अँधेरी न सूझ परै भजि जोय सो दूतन को संग है। अब जाउँ तो जात धुयो रग है रंग राखो तो जात सबै रंग है ॥ २७१ ॥

दिवाभिसारिका ।

सारी जरतारी की झलक झलकत जैसी केसर को अंगराग कीनो सब तन मे । तीखन तरनि के किरनि ते दुगुन जोति जगत जवाहिर जराउ आभरन मे। कवि मतिराम आभा अंगन अंगार कैसो धूम कैसो धार छवि छाजत कजन मे। ग्रीषम दुपहरो में पिय को मिलन चली जानी जात नारि ना दमारि जात वन मे ॥ २७२ ॥

कृष्णाभिसारिका—सवैया।

कज्जल सी निसि सज्जल से घन तज्जल में चली संग न सखी। कुंज अन्धारी सिधारी हुसेन बिहारी पै जाति टी सुधि में नखी। किञ्चिक दव्वत सर्प लग्यो पग सर्प घसीटत एक पगख्यो। जोर जजीरन सो जकख्यो मनो छूटि चल्यो मनमत्थ को हत्थो ॥ २७३ ॥

एक तो अन्धारी दुजे कारी घटा घेरि आई तीसरी अन्धारी भई काम अन्धराई की। चौथे अन्धकार बड़ो नन्द के कुमार विना पांचवी भई है मुगधा की मुगधाई को। एते तमता में चली तामरसनैनी सु देख्यो इक सांप तड़िता के उरभाई की। उरग उठाय उर लाय लपटाय लोनी हाय हाय दैया गिरी न्वैया री कन्हाई की। २७४।

शुक्लाभिसारिका—कवित।

सजि ब्रजचन्द पै चली यों मुखचन्द जाको चन्द चांदनी को मुख मन्द सो करत जात। कहै पदमाकर त्यों सहज सुगन्धही तें कुंजवन पुंजन में कुंज से भरत जात ॥ धरत जहाईं जहां पग है सु प्यारी तहां मंजुल मजीठही के माठ से ढरत जात। हारन तें हीरा सेत सारी के किनारन तें वारन तें मुकता हजारन झरत जात ॥ २७५ ॥

प्रवत्स्यतप्रेयसी लच्चण—दोहा।

चलन चहै परदेस को जा तिय को जब कन्त।
ताहि प्रवत्स्यत प्रेयसी भाखत कवि मतिवन्त। २७६ ॥

मुग्धा प्र०—सवैया ।

सेज परी सफरी सी पलोटति ज्यों ज्यों घटा घन की गरजै री । त्यों पदमाकर लाजहि ते न कहै दुलही हिय को हरजै री। आली कछू को कछू उपचार करै पै न पाय सकै मरजै री। जाय न ऐसे समै मथुरै यह कोउ न कान्हर को बरजै री ॥ २७७ ॥

मध्या प्र० ।

सूखे अजौ न ते औधि के घीस गने जे परे अंगुरीन में छाले । मैन के बानन के अति गाढ़े बने घने घाय अजौं उर आले ॥ आये सुने कि सुन्यो चलिबो सु हिये लगि दूर किये न कसाले । आंखें लजीली कै यों कहि राधिका राखति गोकुलचन्द के चाले ॥ २७८ ॥

पी चलिबे की चली चरचा सुनि चन्दमुखी चितई दृग कोरन । पोरी परी तुरतै मुख पै बिलखी अलि व्याकुल मैन मरोरन ॥ को बरजे अलि कासों कहै मन झूलत नेह ज्यों लाज हिंडोरन । मोती से पोय रहे अँसुवा न गिरे न फिरे बरुनीन की कोरन ॥ २७९ ॥

जाके बिलोकि हुलास कै फांस परे तें उदास नहीं कबही को । नेकहू दूर भयो न कबौं कितहू नितहू सुठि मालसो ही को । औचक सो बिजयानन्द पी के पयान समै लखि टीको दही को । पोर गम्भीर उठी हिय मो जनु तीर सों तीख्यो लग्यो दुलही को ॥ २८० ॥

कवित्त ।

बैठी है सखिन संग पिय को गमन सुन्यो सुख के स मूह में वियोग आग भरकी । गंम कहै त्रिविध सुगंध लै वह्यो समीर लागतहीं ताके तन भई व्यथा ज्वर को। प्यारी को परसि पौन गयो मानसर पै सुलागतहीं औरै गति भई मानसर की । जलचर जरें औ सेवार जरि छार भई जल जरि गयो पङ्क सूख्यो भूमि दरकी । २८१ ।

प्रौढ़ा प्र० ।

जाही जुही मल्लिका चमेली मन मोदिनी की कोमल कुमोदिनी की उपमा खराब की । कहै पदमाकर त्यों ता रन विचारन को विगर गुनाह अजगैबी गैर आब की ॥ चूर करी चोखी चांदनी को छवि छलकत पलक में लीनो छीन आब महताब की। पा पर कहत पीय कापर परैगी आज गरद गुलाब की अवाई आफ़ताब की । २८२ ॥

कैधों वाढ़ी बाड़व अनल ज्वाल जाल के त्रिलोचन के लोचन के दीप दीपै गथ की । कैधों मारतण्ड को प्रचण्ड को प्रभा हैं कैधों लपट झपट धाई विरही विपथ की ॥ राते ऋतुराज के समाज के धुजा हैं कैधों श्रोनित भरी हैं मुनि मैनङ्ग सुरथ की । किंसुक कुसुम्भ जालें फूली वनमालें किधों सेस मुख ज्वालें के मसालें मन मथ की। २८३ ।

परकीया प्र० सवैया।

बात बिठोक की टेर कहै कहूं गागर रीतियै आनि दिखावै। सूनो के पाय तो आपहि रोकि के आज रही कहि यों ललचावै। झांकि झरोको अजान सी ह्वै के बिछोह के पीर को गीतन गावै। प्यो परदेस को चाहै चल्यो पै परोसिन सों कहूं जान ना पावै॥ १८४॥

गनिका प्र० दोहा।

चलत पीय परदेस को बरजि सकौं नहिं तोहि।
लै ऐहौ आभरन जो जियत पाइहौ मोहि॥ २८५॥

सवैया।

प्रीति की रीति अनोखी अहै बिछुरे ते महा दुख देखि दसाहीं। जानत हैं जन वेई भले जिन पै इन की है परी परछाहीं। याते बहोर २ निहोर कहौं विजयानन्द जू तुव पाहीं। दीजिये मोहि कछू अवलम्बन जो हो लग्यो निज अङ्गन माहीं॥ २८६॥

आगतपतिका लक्षण।

आवत बलम बिदेस तें हरषित होय जु बाम।
आगतपतिका नायका ताहि कहत रसधाम॥ २८७॥

मुग्धा आगतपतिका सवैया।

कानि करै गुरु लोगन की न सखीन की सीख नहीं मन लावति। ऐड़ भरी अँगराति खरी कत घूंघट में नए

नैन नचावति ॥ मंजन कै दृग अंजन आंजति अंग अनङ्ग उमङ्ग बढ़ावति । कौन सुभाव री तेरो पर्यो खिन आंगन में खिन पौरि में आवति ॥ २८८ ॥

मध्या आगतपतिका ।

आज सखी ननदो कर प्यार विभूखन भूखन दै पठए हैं। मङ्गल मूल बनाय विचित्र सु फूल दुकूल निहारि नए हैं ॥ आनद को सु घरी उघरी सिगरे मन वांछित काज भए हैं । बूझति तोकहँ बासर के काह री अब केतिक जाम गए हैं ॥ २८९ ॥

प्रौढ़ा आगतपतिका ।

परदेस तें सुन्दर पीतम आए सुने अति हास बढ़े सिगरे । उर कण्ठ लगाय लई ललना गहि गाढ़े अनन्द सों अंक भरे ॥ तरकी सुतनी दरकी अँगिया मनिमालन तें मणि लाल गिरे । जनु पी के मिले तिय के हिय के अँगरा बिरहागिन के निकरे ॥ २९० ॥

कवित्त ।

धाई ओर २ तें वधाई पिय आगम की सुख कर कोर कोर भांवरे भरति है । मोर मोर वदन निहारत विहारी भूमि धौंर २ आन के घरी सी उघरति है ॥ देव कर जोर जोर वंदत सुरन गुरु लोगन के टोल २ पायन परति है ॥ तोर २ मोतिन के हार पूरे चौकन नछावर को छोर २ भूखन धरति है ॥ २९१ ॥

परकीया आगतपतिका सवैया।

आवत ज्यों मथुरा में सुन्यो हरि गेहनि तें तिय दौर करी सी। लाज को छोर ज्यों डोरी सों टूटत हाथ तें छूटि चली चकरी सो ॥ देखत वा सुभ मूरति को कवि सुन्दर यों हीं रही पकरी सी। हाली न चालो ठगो सी सबै ते छकी सी थकी सी जकी जकरी सी ॥ २८२ ॥

आए री पीय परोसिन के सु भई सुनि मो मन मोद मई है। हौं कवि दूलह वाको दसा लहि जाति जरी तन ताप तई है ॥ मोहि बकावैं सबै घर की सु कहो बहू वेदन कौन भई है। और के आनँद आनँद होत जरै जिय को यह रीत नई है ॥ २८३ ॥

गनिका आगतपतिका।

काल्ह की सांझही तें सजनी हौं खरी दुचिती अँसुवान बहाऊँ। आज तो वायस मो घर आय के बोलि गयो सखि होत पहाऊँ ॥ जो अब के अपनी इन आंखिन सन्तन प्यारे को देखन पाऊँ। रागिनी रागहि जाउँगी बागहि कागहि पागहि पाग बँधाऊँ ॥ २८४ ॥

इति दशनायका।

उत्तमादि प्रकृतिक त्रिविध भेद—दोहा।

केहूं ऐगुन कन्त के लखै न हित के जोर।
पियमयङ्कमुख के भए रमनी नैन चकोर ॥ २८५ ॥

पिय सनमुख सनमुख रहति बिमुख बिमुख ह्वै जाति।
धनि दरपन प्रतिबिम्ब लों तेरी गति दरसाति ॥२९६॥
ज्यों ज्यों आदर सों ललन पानिप देत बनाय।
त्यों त्यों भामिनि नैनसों खिनखिन ऐंठति जाय ॥२९७॥

उत्तमा यथा—कवित्त।

झांके फूलबाग में झरोखे अनुरागभरी देखे तहां आप ऐसे चरित बिहारी के। कहै कवि दूलह बखानत बनै ना जैसे लहलहे लोचन ललित सुकुमारी के॥ फूले अङ्ग अङ्ग बाढ़े उरज उतङ्ग फैली छबि की तरङ्ग मुखचंद के उजारी के। ज्यों ज्यों परनारी पिय लेत भरि गोद त्यों त्यों हिये होत परम प्रमोद प्रानप्यारी के। २९८।

मध्यमा यथा।

फैल रही चैत की सु चांदनी रुचिर कैधों केतकी सुवास छायो सहन अटारी को। बेनी कवि दम्पति रमत रति रंगन में पति के वदन कढ्यो नाम और नारी को। भौंहें सतराय तिरछौंहे मुंह नाय अलसौंहे बड़ो घूंघट झुकायो स्याम सारी को। मानो एकबारही अन्धारी को पसारो भयो छप्यो चन्द बिन्दु मनो छायो घटा कारी को।

अधमा यथा।

मान निज करै पिय कान्ह जिय जान ऐसे ऐसही सयानी मांझ जान परी कांची सी। बातन बटोर तोसों

कहै गठ छोर कोऊ जानत भोरो भटू मान लेत सांची सी ॥ भनत गुमान कही आवत न मेरे कान जान परी मोको अब कौन मति राची सी । कौन है अजान एरी कहै सु-खदान तोंसों लागी रहै तेरे कान कारनपिसाची सी ॥२९९॥

सवैया ।

पांवरी आनि भिखारी मनो पजनेस सदा चित देत है फेरी । जो को कठेठो अठेठो गँवारिन नेक नहीं कबहूं हँसि हेरो ॥ आंधरे रूप के जोम तें बावरी जानि परै परपीर ना एरी । नन्दकुमारहि देखि दुखी छतिया कसकी ना कसाइन तेरी ॥ ३०० ॥

चतुर्विध नायकाजाति * कथन दोहा ।

पद्मिनि चित्रिनि संखोनी अरु हस्तिनी बखान ।
विविध नायका भेद में चारि जाति तिय जान ॥३०१॥

पद्मिनी यथा—दोहा ।

तन अमोल कुन्दन बरन सम सिरीस सुकुमार ।
सुच्छम भोजन रस सुरति सो पदमिनि निरधार ॥
तन सुबास दृग सलज्ज सुभ मन सुचि करम पुनीत ।
इन सुवरनबरनो लई जगत निकाई जीत ॥ ३०२ ॥

---

* नायका लक्षण का स्थान तज कर यहां जाति विभेद क्यों हुआ और जैसे नायका जाति वर्णन किया वैसे नायक जाति क्यों नहीं ? कोकवालों ने संयुक्त वर्णन किया है ।

चित्रिनी यथा ।

जिहि मृगनैनी को रहै नृत्य गीत में ध्यान ।
चोप सदा पिय चित्र सों वह चित्रिनी सुजान ॥३०४॥
मित्र नाहिं चितवत कहीं चित्र रही चित लाय ।
पत्री हेरति है कोऊ पत्री सनमुख पाय ॥ ३०५ ॥

संखिनी यथा ।

देह छीन मोटी नसैं कुच लघु निलज निसंक ।
कोपवती नख दन्त रुचि संखिनि पी के अंक ॥३०६॥
सनख हियो लखि लाल को यह मन होत सँदेह ।
नखन खोदि चाहति कियो लालन के हिय गेह ॥

हस्तिनी यथा ।

थूल अंग लोमन क्यो गोरी भूरे केस ।
गजगौनी दुरगन्धिनी भनी हस्तिनी भेस ॥ ३०८ ॥
ठेगनो मोटी गोरटी जोबनमद ऐंड़ाति ।
सखिन संग गजगामिनो चली ठानि सों जाति ॥३०९॥

इति नायका भेद ।

अथ नायक विभेद दोहा ।

सुन्दर गुण मन्दिर जुवा जुवति विलोकैं जाहि ।
कवित राग रस निपुन हो नायक कहिये ताहि ॥

कवित्त ।

मंजु मोर मुकुट निपट घुघुरारी लटैं झूलि २ कुण्डल कपोलन पै झलकैं । बारिजबदन रसरूप को सदन लच्छ दमकै रदन भरि भरि छबि छलकैं ॥ कानन छुवत कोये नैन मैन कोटि मोहे सोभा सर लखि २ मानो मीन ललकैं। देखिबे को स्याम सोम देतो दृग रोम २ सो न कीनो विधि औ अवधि कीनो पलकैं ॥ ३११ ॥

ग्वारन को यार है सिंगार सुख सोभन को साचो सरदार तीन लोक रजधानी को । गाइन के संग देख आपनो बखत लेख आनद बिसेष रूप अकह कहानी को ॥ ठाकुर कहत साचो प्रेम को प्रसंगवारो जा लखि अनंग अंग रंग दधि दानी को । पुन्य नन्द जू को अनुराग ब्रजवासिन को भाग जसुमति को सोहाग राधारानी को ॥ ३१२ ॥

चन्द्र नखचन्द्रिका चकोर पदकंजन पै मेरो मन मंजुल मलिन्द ललकन पै । बंसी त्यों बिसाल लाल अधर अमोलन पै वारों कुरबिन्द दन्त कुन्त कलिकन पै ॥ छबि पै छपाकर प्रभाकर प्रतापही पै वारों कोटि काम कामनीय झलकन पै । पन्नगीकुमार औ कदम्बिनी दवार वारों बांकुरे बिहारी की अमोल अलकन पै ॥ ३१३ ॥

सवैया ।

सिरमोर पखान छरा छबि पुंज बिराजत गुंज को माल

गरै । मुख पूनो सुधानिधिहू न गनै दृग नील सरोजनहू निदरै । घन से तन बीजुरी पीरो भगा बगपांतिन ज्यों मुकुता की लरै । निकरै हिय ते न जुवा छबि सों हरि आनि भवै इत ह्वै निकरै ॥ ३१४ ॥

पति भेद दोहा ।

सुकियापति को पति कहैं परकीया उपपत्ति ।
वैसिक नायक की सदा गनिकाही सों रत्ति ॥ ३१५ ॥

पति यथा कवित्त ।

बांधे मंजु मौर सीस कंचन घटित सिरपेच कलँगी की छवि पुंजन ठन्यो है री । जामा जेबदार औ कुसुम्भी कटि फेटा पट बाजूबन्द जटित उमैड़ सों तन्यो है री ॥ दामोदर सुकवि अनंग धरि रूप मानो अंग २ सोभा की तरंग उफन्यो है री । नवल बनी को अवनी को प्रानप्यारो नीको नवलकिसोरनो को बनरा बन्यो है री ॥ ३१६ ॥

पिय भई प्यारी गहि चरन मनावै बांधे जरकसी चीरा सिर जरद अमैठो है । तदपि न मानै तानै भृकुटी कमानै आनै कोमल सुभाव कीनो अतिही कुठैठो है ॥ कहत किसोर देख देखत महो की ओर वरवस आली री हिये में जात पैठो है । अमल अनूप रूप राधिका को ठान आज परम सुजान कान्ह मान कर बैठो है ॥ ३१७ ॥

आई चलि कालिही तू मायके तें एरी अलि कौन बिधि कैसे मिलि नेह जाल नाख्यो तू। मेरे जान ईस प्यारो रूप की मयूख सींच बचन पियूख कैधों मृदु हँसि भाख्यो तू॥ कीनो सुभ चार कैधों औरही बिचार सुनो तूही निरधार चार सुख अभिलाख्यो तू। एरी अरविन्दनैनी पिकबैनी भोरही तें गोकुल के चन्द को चकोर करि राख्यो तू॥२१८॥

सवैया।

पांव धरे दुलही जिहि ठौर रहै मतिराम तहां दृग दीने। छोखो सखान के साथ को खेलिबो बैठि रहे घरही रसभीने॥ सांझहि तें ललकैं सनहीं मन लालन यों रस सों बस कीने। लोनो सलोनी के अंगन माह सु गौने की चूनरी टोने से कीने॥ २१९॥

उपपति यथा कवित्त।

कुण्डल कपोलन पै कटि पट पीत सोहै बरनी न जात मोपै रूप की निकाई है। कालिदास दूलह से उलहे फिरत हरि जानि ना परत काला दूतो ने सुनाई है॥ भेटहू भई है ना सहेटहू को ब्योंत लग्यो करबे को चाहत गोबिन्द मन भाई है। गौनहाई एक बाल काहू की जु आई देखो गोकुल को न्याव सेज साजत कन्हाई है॥ ३२०॥

चन्दमई चम्पक जराव जरकसमई आवतहीं गैल वाके कमलमई भई। कालिदास मोद मद आनद बिनोदमई

लाल रंग मई भई बसुधा सुधामई । ऐसी बनि बानिक सो मदन छकाई रसिकाई की निकाई लखि लगन लगी नई । नेह को हितै करि गोपालै मोह दै करि सखिन दुचितै करि चितै करि चली गई ॥ ३२१ ॥

कुंजन तें आवति नवेली अलबेली चली सोभा अंग अंगन की आवत उदै भई । देवकीनदन मुख छबि की निकाई लसै चारो ओर चांदनी प्रकास कर ह्वै रई ॥ स्याम मुख भाखो तुम को हौ कित जैहो मुनि बैन मग थाको फिर वाही ठौर ठै गई । लालन की ओर दृग जोर कसि कोर तन तोर झकझोर चित चोर करि लै गई ॥ ३२२ ॥

हाथ हँसि दीनो भीति अन्तर परोस प्यारी हाथ साथ छकी मति कान्हर प्रवीन की । निकस्यो झरोखन ह्वै बिकस्यो कमल जैसे ललित अँगूठी जामें चमक चुनीन की । कालिदास तैसी सोभा मेहँदी के बुन्दन की चारु नख चन्दन की लाल अँगुरीन की । तैसी छबि छाजत है छपा की औ छला को पुनि कंचनचुरीन की जराऊ पहुंचोन की ॥

सवैया ।

आखिर जाये अहीर के हौ जिय जानत नेक ना मेरे सुभाय हो । दै दधि दान जु पै सुरझो पदमाकर फेट कहा अरुझाय हो । जो रस चाहत हौ तुम सांवरे सो रस गोरस

रोके न पाय हो। पैहो कबै जब गोधन गाय हो बीन ब-जायहो मोहि रिझाय हो ॥ ३२४ ॥

वैमिक यथा ।

कानन तान तरंगन में रम होय गए सब भाँति अयाने। जा उर पै दृग बानन के न लगे रुचि राखन हेत निसाने॥ औ सरदार सुने सिसिकी रतिमें बिन मोल न आप बिकाने। क्यों करतार किये तिनको जिन बारबधू के बिलास न जाने॥

चतुर्विधनायक लक्षण—सवैया ।

सो अनुकूल जो एक तें दूजिये नारि कहूं सपने नहिं जाने। दक्छिन सो सबको सम जाने सदा रहैं जासो सबै सुख माने॥ धृष्ट वहै अपराध भयो बरजेहु खिझै रस ठा नई ठाने। सो सठ जो कपटी रस केलि में सुन्दर नायक चारो बखाने॥ ३२६ ॥

अनुकूल यथा ।

नारि पराई तें बोलिबो को कहै क्योंहूं न काहु को भूलहु हेरे। मेरो लखै मन वेई औ मैंहूं लियो उनको लि-खि चित्र हिये रे॥ बांधि सकै उनको मन को बँध्यो रैन दिना रहे-मेरई नेरे। लेस नहीं उनमें अपराध को मान की हौसें रही मन मेरे॥ ३२७ ॥

डोलत हैं इक संग खरे इक संगही बोलत हैं मन भा-यक। दूसरी बात न जानत ये निसबासर संग रहैं सुख-

दायक ॥ कौन समान करै इनकी गति ये इनहीं को सदा खग नायक । देखि परे खगराजन में इक सारस सांचे सिपारस लायक ॥ ३२८ ॥

दक्षिण यथा ।

वहि अन्तर गूढ़ अगूढ़ निरन्तर कासकला कहि कौन गने । कहि केसव हास बिलास सबै प्रतिद्योस बढ़े रस रीति सने ॥ जिनको जिय मेरई जीव जियै सखि काय मनो वच प्रेम घने । तिनको कहे आन बधू के अधीन सु सोपरतीत कियो सपने ॥ ३२९ ॥

धृष्ट यथा ।

ऋतुराज के आगम लोग सबै सु गनै गरुवे बड़ भागन में । इनके मत लैके मलिन्द सदा नित आय के गुंजत आंगन में ॥ जिनके सुचि सुन्दर बोल सुने मन होहि नहीं अनुरागन में । कत कोकिल कूर किये विधना सखि बोले सदा वन बागन में ॥ ३३० ॥

शठ यथा ।

बोल यहै वृषभानसुता को सुनायो जु कान्हर कौन हूं फेरे । सुन्दर नन्द के मन्दिर भीतर कैसो चितेरु चितेरयौ चितेरे ॥ राधिका दौर चली सुनि देखन भेद न जान्यौ गई जव नेरे । पीछे तें आय गही पिय प्यारी पै लै गयो लंगर धाम अँधेरे ॥ ३३१ ॥

मानी, वचनचतुर, क्रियाचतुर को लक्षण दोहा ।

करै जु तिय पै मान पिय मानी कहिये ताहि ।
करै बचन की चातुरी बचनचतुर सो आहि ॥ २३२ ॥
करै क्रिया की चातुरी क्रियचतुर सो जान ।
इनके उचित उदाहरन क्रम तें कहत बखान ॥२३३॥

मानी यथा कवित्त ।

कूजत सिखंडी हैं कलिन्दनन्दिनी के तीर वा कदम्ब खण्डनि कदम्बनि विहरि के । ताके तरे कौतुक सु अद्भुत है कृष्णलाल रावरे चलेतें हौं दिखाऊंगी दवरि के ॥ ठाढ़ी हेमलतिका पै नागिनि कुटिलकारी पूंछ छवि छाई छिति छोर लों पसरि के । कंज केलि केहरि सकूप गिरि कम्बु कीर कैरव कलानिधि को फन सों पकरि के ॥ २३४ ॥

कंचन कलस पर पन्नगकुमार राजे आछी आतसी में रूप मुकुता मचत है । बिम्ब पर कीर कीर ऊपर कमल तापै मनमथ धनुहाव भाव सो रचत है ॥ द्विजराज श्रीपति परम आचरज यह मुनिगनहूं के लखि मानस लचत है । घन पर बिज्जु बिज्जु ऊपर सरद चन्द चन्द पर राहु तापै सूरज नचत है ॥ २३५ ॥

जुगुल कुम्भ के बीच देख्यो रेख जोन्हई को ताके अध अर्ध इन्दु अंक में अवनि जात । सावक भुजंग जुग मोहत जुगल ओर जलचर जुगल जलूस के न ठहरात । रघुराज

आरसी है ताके बीच वारिद है सुक मुख लोने एक मध्य मे सुजलजात। विम्ब फल अन्दर बिलोके हैं अनार बीज कौतुक सकल ससि मण्डल में दरसात॥ ३३६॥

सवैया।

कोमल कंजन की कलिका अलि काहे न चित्त तहां तू लगायो। मंजरी मंजु रसालन की तिनको रस क्यों नहिं तो मन भायो॥ फूली सु औरै अनेक लता हरि दास जू पायो वसन्त सुहायो। छोड़ गुलावन के वन तू कटसैरवा पै किहि कारन आयो॥ ३३७॥

केवरी केतकी औ करना नव कंज परागन के रस की है। खूभी गुलाव नेवारी जुही अरु बेला सुवास दिना दस की है॥ चन्दन चूर मृगम्मद धूर कपूर की पांड़री की खस की है। माथुर प्यारे सुगन्धन में सव तें खुसबू ये सिरे जस की है॥ ३३८॥

वचनचतुर यथा कवित्त।

दूसरे की वात सुनि परत न कान जहां कोकिल कपोतन की धुनि सरसाति है। छाय रहे द्रुम वहु वेलिन सों मतिराम अलिकुलकलित अँधारी अधिकाति है॥ नखत से फूलि रहे फूलन के पुंज वन कुंजन में होत जहां दिन-हो में राति है। ता वन की वाट कोउ संग ना सहेली कहि कैसे तू अकेली दधि वेचन को जाति है॥ ३३९॥

क्रियाचतुर यथा सवैया ।

होरी के औसर गोरो सबै मिलि दौरी लखे जब कान्हर आयो । ह्यां इनमें निज भावती देख भयो मनभावन को मन भायो ॥ हाथ पसारे न सूझ परै तहँ यों कछु लाल गुलाल उड़ायो । बाहन बांधि हिये लगि कै हरि राधिका के मुख सो मुख छ्वायो ॥ २४० ॥

प्रोषित लक्षण दोहा ।

व्याकुल होय जु विरहबस बसि बिदेस में कन्त ।
ताही को प्रोषित कहत जे कोबिद बुधिवन्त ॥२४१॥

प्रोषित यथा कवित्त ।

परी तेरे सुमुख सुधाधर को दुति जापै लालित कियो री बचनामृत अगाधा सों । सेवक त्यों तेरही उरोज सुधा कुंभन को परसि प्रसेद पूर पूर मन साधा सों ॥ एरे मन्द पौन बेगि करि जैये गौन पुनि ऐसई सुनैये गो सनेस मेरो राधा सों । तेरी गुही गर जो न होती बनमाल तो बचावतो को मोहि बिरहानल की बाधा सों ॥ ३४२ ॥

प्रान जो तजैगी मदनाग में मयंकमुखी प्रानघाती पापी कौन फूली है जुही जुही । भृङ्गीगन गान कैधौं मैन कैधौं मैन बान दक्छिन पवन कैधौं कोकिला कुही कुही ॥ मधु के मयंक के मकरन्द लाल तरुनाई रजनी निगोड़ी रंग रंगन

छुही छुही । जौलौं परदेसी प्यारे मनमें बिचार करैं तौ लौं तूती प्रगट पुकारो रे तुही तुही ॥ ३४३ ॥

मोद मदमाती नख रेखन बिलोकि छाती राती ह्वै न-वेली चली सेज तजि कैसे कै । कहै पदमाकर कह्यो मैं कै कहां तू चली यों कहि गह्योई ऐंच अंचल अनैसे कै ॥ ताही समै रोस करि अधर कपाय कछू दृग भरि भावती सुबोलि उठी ऐसे कै । छोड अरे छोड़ सुख मोर के कहे जे बैन वे अब बिसारे कहो बिसरत कैसे कै ॥ ३४४ ॥

सवैया ।

काहू की भूल न भूलत हौ झुकि झूलत हौ परि प्रेम के झूलहि । प्रीति हिये पहिचानत हौ नहि जानत हौ विरहा तन सूलहि ॥ मोद भरे मन माहि मलिन्द रहौ अ-नकूल सुखी सुख मूलहि । को तुम सो कहिये जग मे नित सेवत हौ इक सेवती फूलहि ॥ ३४५ ॥

अथानभिज्ञ लक्षण दोहा ।

बूझै जो न तियान के ठाने बिविध बिलास ॥
सु अनभिज्ञ नायक कह्यो वहै नायकाभास ॥३४६॥

यथा सवैया ।

सूने अवास में पाय के बालमै बालविनोद के छन्द ब-ढ़ावै । छन्द कवित्त पढ़ै वहुतै गजराज भनै सुर पंचम

गावै ॥ कंज बिलोकनि कोरनि सों मुसुकाति महा छवि छाक छकावै । ह्वै निरसंक भरो चहै अंक पै बालम बंक न अंक में आवै ॥ ३४७ ॥

मंजन कै अति रंजन अंजन दै कर खंजन नैन नचावै ।
अम्बर भूषन बेष बनाय अनेक वै कंचुकी चोवा चढ़ावै ॥
साज सिंगारन सेज बिछाय कै सुन्दर मन्दिर सूनोबतावै ।
बूझत है न इतै पर कूर तौ और कहा कोउ ढोल बजावै ॥

इति नायक * विभेदः अथ चतुर्विधदर्शन ।

रति आलम्बन होत है दम्पति दरसन पाय ।
यातें दरसनहू धय्यो आलम्बन में ल्याय ॥ ३४९ ॥
सो दरसन ग्रन्थन मते बरनत हैं कवि चारि ।
श्रवण स्वप्न अरु चित्र में पुनि प्रतच्छ विचारि ॥
श्रवण नहीं दरसन बनै पै दीपति जुत आय ।
यह रति आलम्बन करत तातें बरनो जाय ॥ ३५१ ॥

तत्रादौ श्रवण यथा—सवैया ।

आनन पूरन चन्द लसै अरबिन्द बिलास बिलोचन पेखे ।

* कई भेद नायक विभेद के छुटे जाते हैं जो स्थानाभाव से यहां पर नहीं लिखे जाते । अन्त में अनभिज्ञ नायक कवियों ने क्यों लिखा ? "सुन्दरीसर्वस्व" कार ने इस भेद को न जाने क्या समझ कर छोड़ दिया है ॥

अम्बर पीत हँसे चपला छबि अम्बुद मेचक अंग उरेखे ।
कामहु तें अभिराम महा मतिराम हिये निहचै करि लेखे:
तैं बरन्यो निजबैनन सों सखि मैं निजनैनन सों मनो देखे ॥

पट पीत धरे कटि पै सरदार अपार कला करि जैबो करै । मृदु बोलन हाय कपोलन तें रुचि स्वाद सुधा को पुरैबो करै ॥ भुज भेंटत भाव सबै रस के सब कै चितचाह बतैबो करै । कित धों वह नन्दकुमार अरी बिन देखत आप दिखैबो करै ॥ २५२ ॥

चित्रदर्शन यथा ।

देखे चितेर में ठाढ़े हैं कान्हर टेढ़े भये मुंह नारि मुराये । फैसे बजावत हैं मुरली तिरछे तकि भौंह सों भौंह जुराये ॥ चोटी की टेव यहां लों परी यह राखिये बात कहां लों दुराये । मोहनि मूरति सुन्दर सूरति चित्रहु में चित लेत चुराये ॥ २५४ ॥

सांवरे अंगन में नख तें सिख लों सुखमा के समूह सने हैं । याही बिसासिन बांसुरी में बस कीवे के ब्यौंत न जात गने हैं ॥ एई बड़े दृग हैं जिन गोप बधू उर घायल कीन्हे घने हैं । बाके हैं जैसे कछू सुनि राखे हैं चित्र में वेई चरित्र बने हैं ॥ २५५ ॥

स्वप्न दर्शन यथा ।

सूने सकेत में सोंधे सनो सपने में नई दुलही तू मिलाई । दौंह गयो पदमाकर दूर सो भौंहैं मरोरत सेज लों

आई । या मन की मनहीं में रही जु समेटि तिया छतियां सों लगाई । आंखें गईं खुलि सीवो सुने सखि हाय मैं नीवो न खोलन पाई ॥ ३५६ ॥

लै सपने अपने मन को दुलही उलही छवि भाग भरी सो । अंक निसंक सो लै परजंक लला मुख चूमि सुचारु धरो सो । यों लपटी चपटी हिय सों जसवन्त विसाल प्रसून छरी सो । नैनन के खुलते वह मूरति पास परी उड़ि जात परी सो । ३५७ ।

कवित्त ।

आये कान्ह द्वार आली वगि उठि देखो धाय काह्न यह बात कही आनद सुधामई । केतिको दिना के हिये तपन बुझायवे को हौंहूं परसाद प्यारे देखन तहां गई । झूठो सुख सपने में करन न पायो एहो निरदई ऐसी मोहि तुरत दगा दई । जौ लौं भरि नैन वह मूरति निहारि देखों तौ लौं नैन छोड़ि नींद बैरन बिदा भई ॥ ३५८ ॥

सपने में आयो सखी सांवरो सलोनो वह जिहि अंग अंग सों अनंग को लजायो है । मोहनी सी बातें कहि कहि गहि गहि बांह भांति भांति हरख हजार उपज़ायो है ॥ कहै सिवदत्त मोपै कछूना कह्योई परै बिरह बियोग बिना नाह ने भज़यो है । जौ लौं हँसि हँसि गरे लाऊं री रसिक राय तौ लौं वा वजरमारो गजर बजायो है ॥ ३५९ ॥

सपनेहूं सोवन न दयो निरदई दई बिलपत रहौं जैसे जल बिन झखियां। कुन्दन सँदेसो आयो लाल मधुसूदन को सबै मिलि दौरीं लेन अंगन बिलखियां॥ बूझै समाचार ना मुखागर सनेसो कछू कागद लै कोरो हाथ दीनो लैके सखियां। छतियां सों पतियां लगाय बैठी बांचिबे को जौ लौं खोलौं खाम तौलों खुल गईं अखियां॥ ३६०॥

प्रत्यक्षदर्शन।

मृगहू तें सरस बिराजत बिसाल दृग देखिये न अति दुति कौलहू के दल में। गंग घन द्विज से लसत तन आभूषन ठाढ़े द्रुम छांह देखि ह्वै गई बिकल मैं॥ चखचित चाय परे सोभा के समुद्र मांझ रहो ना सँभार दसा औरै भई पल मे। मन मेरो गरुवो गयोरी बूड़ि मैं न पायो नैन मेरो हरुवो तरत रूप जल मे॥ ३६१॥

निपट असित गात याही मग आवै प्रात कोन कहीं वात जात गौवन के पाछै री। कोटिन अनंग के अनंग होत देखे अंग बालका प्रसंग स्वच्छ काछनो को काछै री॥ कहै कवि नन्द देखि आनद को कन्द रूप को ना फँसि जात मन्दहास फन्द डारै री। मोहतो तत छन जगी सी लन्ज लच्छन वे आछी २ अच्छन की कुटिल कटाच्छैं री॥३६२॥

जादूगर सांवरो न जानी कस जादू करी पण्डित प्रवीन हौं बिकानी प्रानप्यारे पै। आंगन सों जात अटा नट की

बटा सी गैल छैल की छटा सी छबि देखति हौं हारे पै ॥ घूघट के ओट चोट लागी इन नैनन में ऐसी लोट पोट भई पोत पटवारे पै आई पनघट पै न घर को न घाट की हौं नोखोरी नवल नट अटको हमारे पै ॥ ३६३ ॥

मंजुल मुकुट करे निकट घरीक रह्यो उत तें उचटि लीनी लटन मे लट गो। कहै बलभद्र लोनी लट तें उलट फेर ग्रीवा कलकंठ की निकाई में समिट गो ॥ भूलो २ फिर्यो फेर ग्रीवा कल कंठहू तें आंगुरीन नाभी तें अचाँक आन छुट गो। अटगो न मेरो मन कट गो निपट आली कटि के निकट पीतपट मे लपट गो ॥ ३६४ ॥

गौनहाई एक ब्रज गोकुल गँवारि आई ताके सुखपाल कर मोतिन सँवारे हैं। ताने छिन एक घनस्याम मनमोहन को माधवीनिकुञ्ज के विकास में निहारे हैं ॥ छोड़ के संकोच सोच पूछति सहेलिन सों कैसे काम कैवर कुसीम भर मारे हैं साँवरे से चारु खेलें सखन मझार पिय एही अनुहार कैधों यही प्रानप्यारे हैं ॥ ३६५ ॥

अथ पूर्वानुराग ।

जो पहिले सुनि के निरखि बढ़े प्रेम को लाग ।
बिन मिलाप ह्वै बिकलता सो पूरबानुराग ॥ ३६६ ॥
यातें दरसन में लिख्यो लै पूरब अनुराग ।
जो रसिकन प्यारो सदा दम्पति हिय अनुराग ॥३६७॥

पूर्वानुराग यथा—कवित ।

जैसी छवि स्याम की पगी है तेरी आँखिन में तैसी छवि तेरी स्याम आँखिन पगी रहै । कहै पदमाकर ज्यों तान में पगी है त्योंहीं तेरो मुसक्यान कान्ह प्रान में पगी रहै ॥ धीर धर धीर धर कीरतिकिसोरी भई लगनि इतै उतै बराबर जगी रहै । जैसी रट तोहि लगी माधव की राधे तैसी राधे राधे राधे रट माधवैं लगी रहै ॥ ३६८ ॥

भेद बिन जाने एतो वेदन बेसाहिबे को आज हौं गई तो बाट बंसीबट वारे की । कहै पदमाकर लटू ह्वै लोट पोट भई चित में चुभी जो चोट चोप चटवारे की ॥ बावरी लौं बूझति बिलोकति कहा तू बीर जाने कहा कोऊ पीर प्रेम हटवारे की । उमडि २ बहैं बरसैं सु आँखिन ह्वै घट में बसी जो घटा पीतपटवारे की ॥ ३६९ ॥

आय कै निकट वह पीतपटवारो भट अटपटे बैन बर जोर बतरात है । देत ना भरन घट पट को पकर रहे नट लौं नचावे नैन नैक न डरात है ॥ मोह तें अधिक उर औ- टत है लाजन तें लंगर निकट हटके सो अधिकात है । घर घर घेर सुनैं मग हट जात है री पनघट जात ताको पन घट जात है ॥ ३७० ॥

चहत दुरायो तोसों की लगि दुराऊँ दैया साची हौं कहौं री बीर सब सुख कान दै । साँवरो सो ढोटा एक

ठाढ़ो तीर जमुना के सौतन निहाखो नीर भरि अँखियान दै। वा दिना तें मेरिहो दसा को कछु बूझै मत चाहै जो जिवायो मोहि वही रूप दान दै। हाहा कर पाय परौं रह्यो नाहिं जाय घर पनघट जान दैरी पन घट जान दै॥

सवैया।

कुञ्ज गई हुती लै सखियान को आयो तहां कढ़ि नन्द को बारो। मोरपखान को मौर धरे गरे गुञ्ज हरा छबि पुंज बगारो॥ हेर अजान सो ह्वै रही बीर अधीर ह्वै जा छन मोहि निहारो। बू गयो नेह को बीज हिये मन लै गयो मोहन मोहीनिवारो॥ ३७१॥

आनद बीज वई अँखियानि जमाई बियान की जी में जई है। बेल ब ़ाई चवाव की जो ब्रजधामन धामन फैल गई है। दास लगाय कै तांवरि फूल फली दई आनि कृसानु मई है। प्रीति बिहारी की मालिनि री यह वारी में रीति बगारी नई है॥ ३७२॥

दोहा।

संग्रह कियौ अजान यह रस ग्रन्थन को सार।
छमिहौ चूक सुजान पुनि करिहौ लै परचार॥
सम्बत गुन श्रुति अंक विधु माधव पूरन इन्द।
यह मनोज की मञ्जरी विकसी हेत मलिन्द॥

इति श्रीमनोजमंजर्य्या द्वितीयकलिका समाप्ता।

ग्रंथावली जिस्के द्वारा यह मंजरी सुगंधित हुई है।

रसार्णव, रसप्रबोध, रसरत्नाकर, रसराज, रसिकमोहन, रसिकप्रिया, कविप्रिया, काव्यरसायन, काव्यनिर्णय, शृङ्गार शिरोमणि, शृङ्गारलतिकासटीक, सुन्दरशृङ्गार, शृङ्गारसंग्रह, शिवसिंहसरोज, सुधासर, शार्ङ्गधरपद्धति, शब्दार्थभानु, व्यंग्यार्थकौमुदी, बिहारीसतसई, बरवैव्यंग्यविलास, बलराम कथामृत अङ्करत्नाकर, अङ्गदर्पण, अनुरागबाग, दिगविजय-भूषण और जगतबिनोद इत्यादि । इन ग्रंथों के अतिरिक्त कई उद्दण्ड कवियों से अपूर्व स्फुट कविता तथा मत भेद मिले हैं [जो किसी ग्रन्थ में नहीं दीखते] अतएव उपरोक्त ग्रन्थकार तथा सहायक महाशयों को अनेकशः धन्यवाद है। जिन सतकवियों के नामादि में स्टार [*] लगे हों उन्हें जानना चाहिये कि विद्यमान और सहायक हैं।

कवियों की नामावली जिनको इस कलिका में कवित्त हैं।

१ * अजान (ग्रंथकार)
२ अहमद।
३ आलम।
४ ईस।
५ कविन्द।
६ कालिदास।
७ किसोर।
८ कुमार।
९ कुन्दन।
१० कृष्णलाल।
११ केसव।
१२ कोलाहल।
१३ खानखाना (नव्वाब)
१४ गजराज।
१५ ग्वाल।
१६ गिरधारी।
१७ गुमान।
१८ गोपाल।
१९ गंग।
२३ जगदीस।
२४ जबरेस।
२५ जसवन्त (म जोधपूर)
२६ जोयसी।
२७ ठाकुर।
२८ दत्त।
२९ दयादेव।
३० * दामोदर।
३१ दास (भिखारी)
३२ द्विजदेव (म॰ अयोध्या)
३३ दूलह।
३४ देवकीनन्दन।
३५ देव।
३६ नन्द।
३७ पजनेस।
३८ पदमाकर।
३९ परसाद।
४० परताप।
४१ परमानन्द।

२० घनआनंद ।
२१ चिन्तामणि।
२२ ० चुन्नीलाल ।
४५ प्रवीन ।
४६ प्रवीनवेनी ।
४७ वलदेव ।
४८ वलभद्र ।
४९ * विजयानन्द ।
५० व्रजचन्द ।
५१ वेनी ।
५२ वंसीधर ।
५३ भगवन्त ।
५४ भोज ।
५५ भौन ।
५६ मकरन्द ।
५७ मकुन्दलाल ।
५८ मतिराम ।
५९ मन्य ।
६० महाकवि ।
६१ माथुर ।
६२ मुवारक ।

४२ परमेस ।
४३ पुरान ।
४४ पण्डित प्रवीन ।
६६ मण्डन ।
६७ रघुराज (म॰ रीवाँ)
६८ रसखान ।
६९ रसलीन (गुलामनवी)
७० रसाल ।
७१ राम कवि ।
७२ रिषिनाथ ।
७३ लाल कवि ।
७४ लीलाधर ।
७५ सदानन्द ।
७६ सरदार ।
७७ सिवदत्त ।
७८ सिरताज ।
७९ श्रीधर ।
८० श्रीपति ।
८१ सुकदेव ।
८२ सुन्दर ।
८३ सूरति ।

६३	* मूंगा।	८४	सेनापति।
६४	मोहनलाल।	८५	सेवक।
६५	मंचित।	८६	सोभ।
८७	संकर।	९१	संभु।
८८	संगम।	९२	हनुमान।
८९	सन्त।	९३	हरदास।
९०	सन्तन।	९४	हुसेन।
		९५	हृदेस।

मनोजमञ्जरी।

तृतीय कलिका।

परमोत्तम स्फुट कवित्तों का नायिकाभेद को क्रम से अपूर्व संग्रह।

डुमराँवँनिवासी नकछेदी तिवारी उपनाम अजान कवि द्वारा संगृहीत।

पूर्णानन्द एकबार समग्र देखने से होगा नकि रख छोड़ने से।

काशी

भारतजीवन यन्त्रालय में मुद्रित हुई।

सन १८९४ ई०।

तृतीय बार १०००] [मूल्य।) मात्र

मनोजमंजरी॥

तृतीयकलिका।

उद्दीपनानन्तर सखी, सखा, दूती और षट् ऋतु
आदि वर्णन।

डुमराँवनिवासी नकछेदी तिवारी उपनाम
अजानकवि द्वारा संगृहीत और प्रकाशित।

"सोनजुही सी राधिका, अतसि कुसुम से स्याम।
मो हिय चमन बसन्त में, फूले रहैं मुदाम" ॥ १ ॥

अधूरा देखने से न देखना अच्छा।

काशी।

भारतजीवनप्रेस में मुद्रित हुई।

सन् १८६४ ईस्वी।

भूमिका ।

प्यारे रसिकगण !

श्रीरसिकशिरोमणि साँवरे की अनूठी कृपा से यह तीसरी कलिका दूसरीबार बिकसित हुई कहिये कुछ सुगन्ध है ? मै तो हर्षित हूं कि कुसुमाकर वायु ने प्रथम और दूसरी कलिका की भांति इसे भी सुगन्धित कर विकसित किया, लीजिये एकबार समग्र देखिये तदनन्तर जो कुछ किसी प्रकार की न्यूनता हो उसे कृपापूर्वक पूर्ण कीजिये और साथही यह आशीर्वाद दीजिये कि "अजानहजारा" अपने पूर्णरूप से शीघ्र प्रकाशित हो ।

डुमराँव
भाद्रशुक्ला पूर्णिमा
सम्वत् १९५१

रसिकजनचरणानुरागी
अजान ।

मुद्रित विषयों का सूचीपत्र।

श्रीगणेशाय नमः ।

मनोजमञ्जरी ।

तृतीय कलिका ।

मङ्गलाचरण—छप्पै ।

समय सांझ नभ मांझ श्यामघनघटा घनेरी ।
बहुरि प्रबल तमपटल सकल धरनीतल घेरी ॥
पुनि तमाल तरुजाल सघन बन दीखत आगे ।
सहज भीरु नवनारि बहुरि अकमर भय लागे ॥
अस मन बिचारि गिरधर सुघर डगर छाड इमि सखिबयन ।
सुनि बिजयनन्द धरि अङ्क भरि बिहरत हरि बितरैं चयन॥

कवित्त ।

गिरिपति लागो मेरु मेरुपति लागो भूमि भूमिपति लागो कोल कच्छप के चारो सो । दिगपति लागी दिग-पालन के हाथ हठी सुरपति लागो सुरराज छत्रधारी सो ॥ दानपति करन करनपति लागो बलि बलिपति लागो कय-लास के बिहारी सो । तीनों लोकपति ब्रजपति सो लगी है ब्रजपति को लगी है वृषभान की दुलारी सो ॥ २ ॥

दोहा।

थाई कारण को सुकवि कहत बिभाव बिसेख।
सो द्वै विधि आलम्बनरु उद्दीपन अवरेख ॥ ३ ॥
आलम्बन अवलम्बि रस जामे रहै बनाय।
उद्दीपन दीपन करै रस कों परम सोहाय ॥ ४ ॥

यथा छप्पै।

दम्पति जोवन रूप जाति लच्छनजुत सखिजन !
कोकिल कलित बसन्त फूल फल दल अलि उपवन ॥
जलजुत जलचर अमल कमल कमला कमलाकर ।
चातक मोर सु सब्द तड़ितवन अम्बुद अम्बर ॥
सुभ सेज दीप सौगन्ध गृह खान पान परधान मनि।
नव नृत्य भेद बीनादि सब आलम्बन केसव बरनि ॥ ५ ॥

आलम्बनोद्दीपन—दोहा।

आलम्बन के भेद तिय नायक बरनि बिसेख।
अब उद्दीपन के कहत जे हैं भेद असेख ॥ ६ ॥
सखी सखा दूती सु वन षटऋतु उपवन पौन।
उद्दीपनहिं बिभाव में बरनत कवि मतिभौन ॥ ७ ॥
चन्द चाँदनी चन्दनहुँ पुहुप पराग समेत ।
योंहीं और सिंगार सब उद्दीपन के हेत ॥ ८ ॥

सखी * वर्णन ।

जिन ते नायक नायिका राखैं कछु न दुराव ।
सखी कहावैं ते सुघर साँची सरलसुभाव ॥ ९ ॥

हितकारिनि विज्ञानिनी अन्तरङ्ग बहिरङ्ग ।
चारि भेद ये सखिन के बरनत बुद्धि उतङ्ग ॥ १० ॥

क्रमशः उदाहरण ।

चित चाहत अलि अंग तुव लहि दीपक परिमान ।
लै लै जनम पतङ्ग को सदा वारिये प्रान ॥ ११ ॥

गुञ्ज लेन तू आज कत कुञ्ज गई यह काल ।
कण्टकक्षत नख चाहिकै चखन चाहि कै बाल ॥ १२ ॥

मनमोहन ल्यावति नहीं मोहन ल्यावति धाय ।
कारे याहि डस्यो नहीं कारे डस्यो बनाय ॥ १३ ॥

पिय देखतहीं काम तें गह्यो कम्प तिय आय ।
सीत जानि अलि अग्नि को ल्याई वेगि जराय ॥ १४ ॥

सखीकर्म्म ।

काज सखिन के चारिये मण्डन सिक्षादान ।
उपालम्भ परिहास पुनि बरनत सुकवि सुजान ॥ १५ ॥

मण्डन तियहि सिँगारिबो सिक्षा विनयविलास ।
उपालम्भ सु उराहनो हँसी करब परिहास ॥ १६ ॥

---

* सखी, सखा और दूती में क्या अन्तर है ? प्राय: क्रिया का सङ्कर होता है । और उद्दीपन में क्यों लिखा ?

मण्डन यथा।

सखी तिया की देह में सजे सिँगार अनेक।
कजरारी अँखियान में भूल्यो काजर एक॥ १७॥
कहा करौं जो आँगुरिन अनी घनी चुभि जाय।
अनियारे चख लखि सखी कजरा देति डराय॥ १८॥

शिक्षा यथा—कवित्त।

लैहै वालि जूरो तज पानिप सो पूरो निज गुनन गरूरो कुण्डली को रूप रैहै री। हरिदास ऐसो चोटो एड़िन लौं लोटिये तो मोतिन की कांचुरी की सोभ सरसैहै री। जाय मत गोकुले विलोकि तोहि दूरही तें कुञ्जनतें बांसुरी वजाय आय जैहै री। कालो जान आलो रसख्याली पकुवैहै कहूँ व्यालो सम वेनो वनमाली लखि पैहै री॥ १९॥

जाय जिन या समै तू राधे सुन स्याम पाहिं बार बार तोहिं करजोरि कर हारी री। भारो गिरि-भार कर माहँ लै उचाए हरि ता तरे दुरे हैं गाय गोपिका विचारी री॥ तेरे नैन तेरे बस नाहिं ह्वाँ साचो मैं तो लाल ललचैहै लखि रूप की उजारी री। स्वेद कम्प ह्वैहै गिरि गिरि है अवसि आज पैहै तू कलङ्क लोग देहैं तोहिं गारी री॥२०॥

भृकुटी कमान तानि फिरति अनोखो कहा कहत किसोर कोर कज्जल भरै है री। तेरे दृग देखे मेरो कान्हर

डेरात इतै मघवा निगोड़ी उतै रोस पकरै है री ॥ कोरति-कुमारी है दुलारी वृषभान जू को मेरी सीख मान तेरो कहा बिगरै है री। चञ्चल चपल ललचौंहैं चख मूद तौलों जौलों गिरधारी गिर नख पै धरै है री। २१ ॥

सवैया।

एक घरी पल ओट भये दिन वैतिक लौं तू कछू नहीं खाति है। प्यास को नाम न लेति अरी दल पङ्कज सो निसि में कुम्भिलाति है॥ सीख सुने हरिशङ्कर की अपने मन में अतिही अनखाति है। भामरी खाय न घाम री मैं सुन कामरीवारे पै का मरी जाति है। २२ ॥

चाह नहीं औ नहीं चरचा कहूँ प्रीति की रीति नहीं इक ठौरे। झूठी मिठान लगी है जहान में साच में रोचक नाहिने औरे ॥ ठाकुर लालच में लचि कै अब लोभ को लोग जहां तहां दौरे। मेरही देखत मेरी भटू सिगरो जग ह्वै गयो और को औरे। २३ ॥

उपालम्भ यथा—कवित्त।

दया करि चितै चित हित को चुराय लियो फिरि हित चितए न यही सोच नित है। दिलदारजन परबस में बसे जे तिनै नेसुक न चाव निसुबासर चकित है ॥ देखे टक लागे अनदेखे पलकौ न लागे देखे अनदेखे नैना नि-

मिख रहत है। सुखी हौ जू कान्ह तुमै काहू की न चिन्ता वह देखेहू दुखित अनदेखेहू दुखित है ॥ २४ ॥

ब्रज वहि जाय ना कहूँ यों आय आँखिन ते उमडि अनोखो घटा वरसति मेह की । कहै पदमाकर चलावै खान पान को को प्रानन परी है आनि दहसति देह की॥ चाहिये न ऐसो वृषभान की किसोरी तोहि आई दै दगा जो ठोक ठोकर सनेह की । गोकुल की कुल की न गैल की गोपालै सुधि गोरस की रस को न गोवन को गेह की ॥

दोहा ।

कैसे आए हो निरखि तुम तहँ नन्दकिसोर ।
भरभरात भामिनि परी घरघरात घनघोर ॥ २६ ॥

परिहास यथा—कवित्त ।

वृन्दावन चन्द अहो आनद के कन्द तुम माधव मुकुन्द हो अनन्द छवि जोरी के । नन्द जू के नन्द वलदेव के सहोदर सखान में मराहे घनस्याम मति भोरी के॥ फागुन के औसर फजीहत वजाय ढोल कहत कहाए वृषभान की किसोरी के । गायन के रहुआ गुलाम व्रजगोपिन के हो हो हरि भडुआ हजार दार छोरी के ॥ २७॥

सवैया ।

री ललिता वह कौन सी पाहुनि आई तिहारई न्योति वुलाये । छोटी सी छाती छवानि लों वेनी नरोत्तम रूप की

लूटि सी पाये । सारी हरी अँगिया घनबेलि की घूमत सो लहँगा थिरकाये । कञ्ज सो आनन खञ्ज से नैननि एड़िन ईंगुर सो लपटाये ॥ २८ ॥

दोहा ।

लाय बिरी मुख लाल के खैंच लई तब बाल ।
लाल रहे सकुचाय तब हँसी सबै दै ताल ॥ २९ ॥

सखा वर्णन ।

कहे जु नायक के सबै प्रथमहि बिबिध प्रकार ।
अब बरनत हों तिनहिं के सचिव सखा जे चार ॥ ३० ॥
पीठमर्द बिट चेट पुनि बहुरि विदूषक होय ।
मोचै मान तियान के पीठमर्द है सोय ॥ ३१ ॥
सु बिट बखानत हैं सुकवि चातुर सकल कलान ।
दुहुन मिलावे मैं चतुर वहे चेट उर आन ॥ ३२ ॥
स्वांग ठान ठाने जु कछु हाँसी बचन बिनोद ।
कह्यो विदूषक सो सखा कविन मानि मन मोद ॥ ३३ ॥

पीठमर्द यथा—कवित्त ।

लाल अपने पै अलि इतो ना रिसैये बलि कहा भयो बातें हँस्यो नेक नँदनन्द है । बैठि बोलियत हिलिमिलि खेलियत कहा सुन्दर यों कीजियत हिये मैं दुखदन्द है । हाहा पेख सौंहें तोहि कोटि कोटि सौंहें करो ऐसे समै

मान तेरी ऐसो मति मन्द है। कैसो नीको नायक सकल सुखदायक सो कैसी नीको चाँदनो औ कैसो नीको चन्द है॥

पुहुप पलासन के आसन अनूप बैठि सौरभ गुलाब आब आसव भरत है। त्रिविध समीर माल मण्डल मलय कर फेरत प्रसिद्ध सिद्ध रूप बिलसत है॥ चुन्नीलाल कहै ये संजोगी रितुराज आज साज विश्वविजय विनोद बितरत है। तंत्र कर कोकिल मलिन्द जप जोग जंत्र मञ्जुल मनोज मंत्र साधन करत है॥ ३४॥

दोहा।

हौं गुवाल पै भल चहत तेरोई ब्रजबाल।
चलति क्यों न नँदलाल पै लै गुलाल रँगलाल॥२५॥

विट यथा—सवैया।

पीतपटो लकुटी पदमाकर मोरपखा लै कहूं गहि नाखो। यों लखि हाल गुपाल को ता छिन बालसखा सुकला अभिलाखो॥ कै कल कोकिल कैसो कुहू कुहू कोमल कोक की कारिका भाखो। रूसी हुती ब्रजबाल कै सामुहैं आइ रसाल की मञ्जरी राखो॥ २६॥

चेटक यथा।

देव सँजोगतें आनि जुरे दोउ कुञ्ज में कान्हर राधिका रानी। खेले न बोलि सकै कहि सुन्दर सोऊ त्यों बैठि रहै

चुप ठानो ॥ मेरो सकोच कियो इन दोउन चातुर चेटक यों जब जानी । या मिसि आप उहां तें उठ्यो जमुनातट जात हौं पीवन पानी ॥ ३७ ॥

विटूषक यथा ।

आपहिं कुञ्ज के भीतर पैठि सुधारि के सुन्दर सेज बिछाई। बातें बनाय अनेकन भांति की माधो सों आनि के राधा मिलाई ॥ आली कहा कहों हाँसी की बात विटूषक जैसी करी है ढिठाई। जाय उहां पिछुवार उतै फिरि बोलि उठ्यो वृषभान की नाई ॥ ३८ ॥

इति सखा ।

अथ * दूती वर्णन ।

दोहा ।

मिलि न सकै जे तिय पुरुष तिहि चित हित उपजाय ।
छल बल आन मिलावई सो दूती ठहराय ॥ ३९ ॥
ताके हैं है भेद यह कोविद करत बखान ।
प्रथम दूतिका कहत पुनि बान दूतिका जान ॥ ४० ॥
पठई आवै और की दूती कहिये सोय ।
अपनी पठई होय सो बान दूतिका जोय ॥ ४१ ॥

---

* जैसे सखी सखा निर्माण किया तैसे दूती दूत क्यों नहीं ?

जाति भेद की दूतिका कविजन कहे अनेक ।
ग्रन्थ बाढ़िवे के लिये कहे न यामे एक ॥ ४२ ॥
प्रकृति भेद है तीनि बिधि सकल दूतिका मांहि ।
उत्तम मध्यम अधम यह बरनत सुकवि सराहि ॥ ४३ ॥
केवल अपनी जुक्ति सों रचना करति विचित्र ।
बरनत उत्तम दूतिका कविजन परम पवित्र ॥ ४४ ॥
सिखई बातन में मिलै जो तिय करति बसीठ ।
है वह मध्यम दूतिका रहति बचाये दीठ ॥ ४५ ॥
केवल सिखई बात को निसिदिन करति बखान ।
अधम दूतिका कहत हैं ताको सुमति सुजान ॥ ४६ ॥
बान दूतिकाहू त्रिबिधि बरनत कवि अभिराम ।
हित अनहित अरु हिताहित भाखति वचन सुदाम॥४७॥
इक दूती के भेद को षटबिधि कियो बखान ।
स्वयं दूतिका सातई बरनत सकल सुजान ॥ ४८ ॥
जौ क्योंहूँ न मिलै कहूँ ऋसव दोऊ डीठ ।
तौ तव अपने आपही बुधि बल करति बसीठ ॥ ४९ ॥
विनय सु निन्दास्तुति विरह कहिबो औ परबोध ।
सङ्घट्टन ये काज षट भाखत सबै सुबोध ॥ ५० ॥

क्रमश: उदाहरण ।

उत्तमा दूती यथा—कवित्त ।

सुन्दर सुदेस मध्य मूठो में समात जाको प्रगट न गात

वेस बदन सवारी है । कहै कवि दूलह सु रमनी नेवाज औ छँटाक भरो तौल मानो साँचे कैसी ढारी है ॥ पेटी है नरम अति लीजिये गोविन्द गहि निपट नवेली पै समर सुर वारी है । रीझि गुनमान गोसे गोसे सो मिलैगी सुल- तान के कमान के समान प्रानप्यारी है ॥ ५१ ॥

सवैया ।

को हमैं रोकि सकै धरनी में जहां चहीं जाय तहां छल घोरीं । मैं बहुरूपिनो सेवक स्याम सु मोहनो मंत्रन के सर छोरीं । राधिका को कछु तें कछु कै इसि केलि के कुञ्ज तरङ्ग में बोरीं । रावरे के अनुसासन प्रीति अकासनहूं को तिया सन जोरीं ॥ ५२ ॥

दार गलो है भलो विधि सों बहु चाउर ह्वैगो सुगन्ध भरी जू । देखि बराबरो रीझि रहोगे सु पापर पूरो करी न डरी जू ॥ है तरकारो सवाद भरो बनि गो-रस सेवक भूख हरी जू । सोंधो सलोनी सुधा सो रसोली सु कन्त ए- कन्त में भोग करी जू ॥ ५३ ॥

मध्यमा दूती यथा ।

अबहीं वृषभान को मान बढ्यो अनुमानहुँ सों नहिं जाँचहुंगो । कटि लाड़िली देति दिखाई नहीं सेवकाई बिना किमि राचहुंगो ॥ बरसान है धीर धरौ उरवा पुरवा हौं स्वरूप सवाचहुंगो । घनस्याम तुमै बिजुरी सों मिलाय मयूरनी की सम नाचहुँगो ॥ ५४ ॥

दोहा।

वेगि आय सुधि लेहु यह अली कह्यो घनस्याम।
मैं देख्यो वह चातकी रटति तिहारो नाम॥ ५५॥

अधमा दूती यथा।

कैसी धौं तेरी अरी परी बान यह आन।
जैसीयै मोते कहत तैसी करति बखान॥ ५६॥

हितवान दूती यथा—कवित्त।

सुथरी सुमीली सुजसीली सुरसीली अति लङ्क लचकीली काम धनुष हलाका सी। कहै कवि तोख होती सारी तें नियारी जबै कारी बदरी तें कढ़ै चन्द के कलाका सी॥ लोने लोने लोयन पै खञ्जन झमक वारों दत्तन चमक चारु चञ्चला चलाका सी। साँवरे सुजान कान्ह तुम तें छिपाऊँ कहा सेज पै सोआऊँ आनि सोने की सलाका सी॥

देखतहीं सबही के सुधि बुधि भूलि मन अटक रहैगो ऐसी चटक चढ़ाऊँगी। रोखी तजि उत्तम अनोखी चारु चोखी कर नेह पट पोखी आछो ओप अधिकाऊँगी॥ कहै हरदास एरी सुघर सयानी सुन लेउँगी रँगाई रग रंग सो बनाऊँगी। पाग यह स्याम की रँगोंगी पीत रंग तेरी चूनर सुरंग स्याम रंग रँगि ल्याऊँगी। ५८॥

आज एक ललना अन्हात में निहारी लाल पीन पयोधर वीन वानो छीन लङ्क है। जमुना के जल बीच कराठ

के प्रमान पैठि धोये जो लिलार लाग्यो मृगमद अङ्क है ॥ मुख अरु पानि के परस होत रघुनाथ आनि ऐसो लसी सोभा परम असङ्क है । बारिज जो नातो मानि धीज करिवे को मानो कौल कलानिधि में को धोवत कलङ्क है ॥

आज एक ललना जवाहिर खरीदवे को आई हुती सुभग सोहाई हाट बारे को । करके लिये तें भये मुकुता प्रवाल फेर गुंजा से लखाने परे दीठि दृग तारे को । भनि हरिचन्द मोतीचूर से देखाने जब हास को विलास बाढ्यो सुखमा कतारे को । बीजक खरीद घटी नफा को बतावे कौन अकल हेरानो आन जौहरी बेचारे को ॥ ६० ॥

प्रेम हंस लोनो छाँह चितऊ हरख पायो जागो पञ्चवान जिहि लगि छबिछाई है देवकी नँदन कहै सारँग गुनीन गायो पाहरू पुकारे धुनि चटक लगाई है ॥ दृग मुख अधर बिलोकि हौं तो रीझो लाल ऐसो एक बाल देखि कुञ्जन में आई है । दुपहर कैसे कञ्ज इन्दु अधरात कैसो प्रात जैसे अरविन्द तैसा अरुनाई है ॥ ६१ ॥

उठी अँगिरात परजङ्क परभात समै आज एक ललना निहारी बलबीर मै । अधखुली आँखिन को आभा अज बेस बेस कुन्दन सो दीपै तैसी दीपति सरीर मै ॥ उरजन मध्य में बिराजी इमि राम राजी मुख सुखमा की छटा छाजी छबि भोर मै । चन्द के उदोत मानो जोरी चक्रवाकन को बैठो है बिछुरि के तरनिजा के तीर मै ॥ ६२ ॥

ठाढ़ी भई न्हाय दिये केस छिटिकाय वह आपने सु-
भाय सीस पोंछति दुकूल सो। कारे सटकारे मानो विधि
ही सँवारे इत एड़िन सों लागे उत लागे भुजमूल सो॥
तामे बसे कहूं २ बसीकर आखत से सीकर लसत मिलि
मालती के फूल सो। बड़े बड़े बीन बीन जौहरी मदन
मानो पोहि राखे मेरे जान मोती मखतूल सो॥ ६३॥

सवैया।

बिचरे मृग लोनें मृगी थरि में तिनके सुख की सरि
कौन कहा। सुख क्रीडत कीर सुकी को लिये कल को-
किला कोकिल कूजे जहा॥ भ्रमरीजुत भृङ्ग निकुञ्जन में
मकरन्द पिये मदमत्त महा। सुख जोवै मयूर मयूरिनि को
सुख सोवै परेवा परेई तहां॥ ६४॥

हिताहित बान दूती यथा।

चन्दन चढ़ावै ना लगावै अङ्गराग कछू चौसरा चमेली
के नवेली भार क्यों सहै। पेन्है ना जवाहिर जवाहिर से
अङ्ग दत्त भौंरन के भय भाजि भौन भीतरै गहै॥ राति ह्व
दिवस छवि छटा छहराती चारु अंगना अनंग को न ऐसी
छवि को लहै। कैसे वह चन्दमुखी आवै नद नन्द बंधु
बधुन चकोरन के नैनन घिरी रहै॥ ६५॥

अहित बान दूती यथा।

पौरही में ठाढ़े रहो बाढ़े घर ही के लला चौको है

हमारो यहां बूझनो सहल है । अरज तिहारी घरी हैक में करैंगी अबै मोजराई सखिन की चहल पहल है ॥ गोकुल के नाथ आये गोपन के साथ दोजे सिगरी बिसार यहां गुरुता गहल है । अदब से रहो बेअदब को कहो न बात वृन्दावन महारानी राधा को महल है ॥ ६६ ॥

स्वयं-दूती यथा ।

सहर मझावत पहर एक लागि जैहै छोर में नगर के सराय है उतारे को । कहत कविन्द मग माझही परैगी साँझ खबर उड़ानो है बटोही हैक मारे को ॥ घर के हमारे परदेस को सिधारे यातें दया कै बिचारी हम रीति राह बारे की । उतरो नदी के तीर बर के तरेही तुम चौंको जिन चौकी यहां पाहरू हमारे की ॥ ६७ ॥

ननद नवेली सो रिसानी रहै आठोजाम बगर हमारो जहां लागत न कर है । भनै नवरेस बट पार ये डकैत फिरैं रैन है अंधेरो एक भरो आगे सर है ॥ पीतम हमारे परदेस में बिचारे बसे स्याम घन घेरि आयो यही एक डर है । एरे बीर पथिक निगोरे कहो मान मेरो दूर है सराय जहां चोरन को घर है ॥ ६८ ॥

आये हो कहां तें कहां जावगे बटोही सुनो बसिहो कहा जू तुम आगे जङ्गलान में । दूर है सराय जहां बसैं चोर चौकीदार एक डर आवे नहिं और संगलान में । भनै

छबरेस देख फरस फुहारन के मन में बिचार करो अति अकुलान में। पीतम हमारे परदेस को सिधारे याते दूत तें निकसि बसो खस बङ्गलान में॥ ६८॥

सासु मेरी राधिका की सौति सो न जाने कछू पांचे ज्ञान इन्द्रिन सो ज्ञान ना बताई है। देवकीनँदन कहै सुनो हो बिहारीलाल पथिक तिहारे भागही तें रैन आई है॥ तीन मेरी दूती जे प्रबीन परमेश्वर तें रची बिधि एक करि हमैं कठिनाई है। एक सूरदास दासी एक जगन्नाथ दासी एक भृगुदास दासी ताकी एक आई है॥ ७०॥

आँगन हमारे बीच एक रूख बैर को है सोई दुसराई औ न कोई आस पासई। ननद जेठानी गई सकठ कहानी सुने आयो है बलौआ न्यौते लै सिधायो सासई॥ सैयां तो गोसैयां जाने कौन देस गौन कियो रहत कहाधौं औ बसत कौन वासई। दिया जे जरत बिन तेल सो झलमलात भूत औ पिसाचन सों अजू जिय त्रासई॥ ७१॥

दिनना घरीको घनघेरि घहरान लागे अवनि अँधेरी ह्वैहै आभा इन्दरन की। पथिक थोरोहो थोरी उमिरि अकेलो वीर अकुलाइ नाचौं गहौं गैल कन्दरन की॥ द्रुमन लतान में दिखातिये नजीकही सो दूर दूरताई सेतताई मन्दरन की। कवि पजनेस कोसे दाहिने दुओसे कोसे डगर नगीची बीच बाधा बन्दरन की॥ ७२॥

पावस अमावस की निसि अँधियारी कारी सासु है प्रवास मेरो ननद नदान जू । सूनो सुख भौन है परोस को भरोस कौन पाहरू न जागत पुकार परे कान जू ॥ पण्डित प्रवीन प्यारो बसत बिदेस पति लागो है अन्देस अति रसिक सुजान जू । एहो ब्रजराज राज सुनि के अरज मेरी आज बसि जैये बसि जैये तो बिहान जू ॥ ७३ ॥

सवैया ।

आधिक जाम करो बिसराम कुमार अराम को कुञ्ज इतै है । अन्त बसन्त के ग्रीखम को लपटैं न घटैं दिन साँझ समै है । छाँह घनो पियो नीरजनीर सुसीत समीर लगै सुख दैहै । हाल लखौ फल लाल रसीलो रसाल-लता में कहूँ मिलि जैहै ॥ ७४ ॥

जोतिसी पी परदेस गनो जो समुद्रको हाथ की रेख निहारो । नैक दशा करि नारी गहो तुम बैद जू व्याधि वियोग बिचारो । व्याकुलता भ्रमता तन में मदनेस जू गारुडी मंत्रन झारो । भावते भौन के भीतर मे छाँ विदेसी घरीक सो घाम निवारो ॥ ७५ ॥

अम्बर चारु पयोधर देखिकै कौन को धीरज जो न गयो है । भञ्जन जू नदिया इहि रूप की नाव नहीं रविछ्न भयो है । पन्थिक जानि बसो इहि देस भलो तुमको उप-

देस दयो है । या मग बीच लगे इक नीच जु पावक में जरि प्रेत भयो है ॥ ७६ ॥

सूनो परो कब को यह गेह औ साँकरो जामे न सूर प्रकास है। जौने पठायो बतायो यहां तिहिं रावरो कोनो खरो उपहास है । आई हौं भाजि बसौ अनते तू विदेसो कहौ यहां कौन सुपास है । भीतर भौन भुजङ्ग भरे अरु बाहर चौक चुरैल को बास है ॥ ७७ ॥

दोहा ।

बसो पथिक या पौर में यहां न आवै और ।
यह मेरो यह सासु को यह ननदी को ठौर ॥ ७८ ॥

दूती षट्कर्मान्तर्गत विनय यथा—कुण्डलिया ।

हा हा बदन उघार दृग सफल करैं सब कोय ।
रोज सरोजन के परै हँसी ससी की होय ॥
हँसी ससी की होय देख मुख तेरो प्यारी ।
विधना ऐसो रची आपने हाथ सँवारी ॥
कह पठान सुलतान मेटु उर अन्तर दाहा ।
करु कटाक्ष इहि ओर मोर बिनती सुन हा हा ॥७९॥

निन्दा यथा—सवैया ।

खेलति फाग सोहागभरी सुथरी सुर अंगना तें सुकुमारि है । जेये चले अठिलैये उतै इतै कान्ह खड़ी वृषभान

कुमारि है॥ सम्भु समूह गुलाब के सोसन ढारि कै केसर गारि बिगारिहै। पामरी पाँवड़े होति जहां तहां को लला कामरो पै रँग डारि है॥ ८०॥

खेलति होरी किसोरी जहां जिन पै रतिरम्भा रमा गई वारि कै। सोधीं तहां सजिये हरि जाय जहां जनिये कोउ ग्वारि गँवारि कै॥ सम्भु सरोज से पानि सुजान गहै पिच-कारी गुलाब जो गारि कै। सो न खराब करैगी लला कमरी पर केसर को रँग डारि कै॥ ८१॥

कञ्ज से सम्पुट हैं ये खरे हिय में गड़ि जात ज्यों कुन्त के कोर हैं। मेरु हैं पै हरि हाथ न आवत चक्रवती पै बड़ेई कठोर हैं॥ भावती तेरे उरोजन के गुन दास लखे सब औरई और हैं। सम्भु हैं पै उपजावै मनोज सुवित्त हैं पै परचित्त के चोर हैं॥ ८२॥

स्तुति यथा—कवित्त।

अंग तेरो केसर सो करिहौं केसर कैसी केसन की सरि कैसे करि सकै को तमै। कहै कविगङ्ग आछे छबि के छ-बीले नैन नीलेज नलिन ऐसे नाहीं देखे होत मै॥ अहे हे अहीरी तू यों इही कछु जानति है काके भाग औतरी है तोसी तेरे गोत मै। तरुनी-तिलक नन्दलाल त्यों तिलक ताकि तोपर ह्वौं वारौं तिल तिल कै तिलोतमै॥ ८३॥

सवैया ।

धनि है वह तात औ मात जनी जिहि देह धरी सो घरी धन है । धनि है वह ठाकुर ग्राम वही जहँ डोले लली सो गली धन है ॥ धनि है वह प्यारो तुमै दरसै परसै कर सोज बड़ो धन है। धनि है धन तू धन तेरो हितू जिहि की तू धनी सो धनी धन है ॥ ८४ ॥

दोहा ।

दिपति देह छवि गेह की किहि विधि बरनी जाय ।
जिहि लखि चपला गगन तें छिति पर फरकति आय ॥
तुव अंग सहज सुबास की सरि न लहै खस खास ।
नहिं चम्पक नहिं केतकी नहिं केसर को रास ॥ ८६ ॥
तेरी बानी बेनु सी बीना सी सुखदानि ।
तामें बीनाबादिनी बैठी आनि महानि ॥ ८७ ॥
मुख ससि निरखि चकोर अरु तन पानिप लखि मीन ।
पद पङ्कज देखत भँवर होत नयन रस लीन ॥ ८८ ॥

विरहनिवेदन यथा—कवित्त ।

एक हती खोनी पर एते पै न एते मान भई अति दूबरी बिरह ज्वाल जरतो । पास धरो चन्दन सुबासहो तें बाढ़े ताप होतो जो समीर तो उसासें ना उसरतो॥ चन्दन की रेख रही आभा पवसेख सुतो देखते बनत पै न कहत

बनै रती । ल्यावती गोबिन्द अरविन्द की कली में राखि जो न मकरन्द बीच डूबिबे को डरती ॥ ८९ ॥

दूरिही ते देखत बिथा मैं वा वियोगिनि की आई भले भाजि ह्यां इलाज मढ़ि आवैगो । कहै पदमाकर सुनो हो घनश्याम जाहि चेतत कहूँ जो एक आहि कढ़ि आवैगो । सर सरितान को न सूखत लगैगी देर एती कछू जुलुमिन ज्वाल बढ़ि आवैगी । ताके तन ताप की कहौं मैं कहा बात मेरे गातही छुवे ते तुमै ताप चढ़ि आवैगी ॥ ९० ॥

दोहा ।

कहा कहौं वाकी दसा जब खग बोलत राति ।
पीय सुनतहीं जियति है कहा सुनत मरि जाति ॥ ९१ ॥

मैं दीनो लीनो मुकर छुवत छनक गो नीर ।
लाल तिहारी अरगजा उर ह्वै लग्यो अबीर ॥ ९२ ॥

जब तें आइ तड़ित लों नीलाम्बर मैं कौंधि ।
तब तें हरि चकित भये लगी चखनि चकचौंधि ॥ ९३ ॥

प्रबोध यथा—सवैया ।

कञ्चन को ककई कर लै दरे हेर हँसौंहें कही यह नाइन। रात के सोवत को सपनो अपनो सुन लीजिये मेरी गोसाइन ॥ पै न चलाइये बात कहूं सुनि पावे न कोउ कहूं की चबाइन । नीखे वे ठाकुर नन्दकिसोर अनोखी बनी तूं नई ठकुराइन ॥ ९४ ॥

सङ्कट्टन यथा—कवित्त।

सोने की सी डार सुकुमार बारे हैं सेवार सुन्दर सुढार कटि मूठी में समानो है। मोतिन की माल मोती बेसर को लेत हाल मोती से दसन मुख मोती को सो पानो है॥ ल्याई हौं बुलाय के बलाय लेउ लाल बाल देखतही भलो मेरो मानिहो मैं जानो है। नैन सुखदैन चित चैन होत सुने बैन ऐन मैन मैनका कि मैनही की रानी है॥ ९५॥

कूक सुनि कोलिया मयूर मोर छाये वन पीहा लागें रटन पपीहा आठजामा को। हारी मति हारिल हरेवा पिञ्जरान परे तोता तूतो सारिका जपत गुन ग्रामा को॥ खञ्जन चकोरन की गिनती अजान कहा हँसत हेराने हंस छाड़ि मन कामा को। लाल मुनियां ह्वै लखि लीजो दूर ही तें न तो बाज होत बहरी समाज देखि स्यामा को॥

सवैया।

नव कुञ्जन बैठे पिया नँदलाल जू जानत हैं सब कोक कला। दिन में तहँ दूती भोराय के ल्याई महाकवि धाम नई अबला। तब धाय गहो हरिचन्द पिया तब बोली अजू तुम मोहि छला। हमैं लाज लगै बलि पाय परौं दिनहीं इहा ऐसो न कीजे लला॥ ९७॥

दोहा।

गोरी को जु गोपाल को होरी के मिसि ल्याय।
निजन साँकरी खोरि में दोऊ दियो मिलाय॥ ९८॥

रमनी रमन मिलाय यों दूती रहति बराय ।
घन दामिनि को जोरि कै ज्यों समीर रहि जाय ॥ ९९ ॥

इति दूती भेद अथ सूर्य्योदय चन्द्रोदय वर्णन ।

उद्दीपन के हेत के हेत जानि रवि चन्द ।
बरनत उद्दीपनहिं में सुमिरि साँवरो चन्द ॥ १०० ॥

सूर्य्योदय ।

सूर उदय तें अरुनता पय-पावनता होय ।
संख वेद धुनि मुनि करैं पन्थ चलै सब कोय ॥ १०१ ॥
कोक कोकनद सो कहत दुख कुवलय कुलटानि ।
तारा औषधि दीप ससि घुघू चोर तम हानि ॥ १०२ ॥

यथा सवैया ।

बीत गई सिगरी रजनी चहुँओर तें फैल गई नभ लाली । कोक-वियोग मिट्यो परिपूर उदै भयो सूर महा छबि साली॥ बोलि उठे बन बागन में अनुरागन सों चहुँघा चटकाली । सुन्दर स्वच्छ सुगन्ध सनै मकरन्द भरै अरबिन्द तें आली॥ १०३ ॥

चन्द्रोदय व०—दोहा ।

कोक कोकनद बिरह तम मानिनि कुलटनि दुख्ख ।
चन्द्रोदय तें कुबलयनि जलधि चकोरन सुख्ख ॥ १०४ ॥

यथा कवित्त ।

हरत किसोर जो चकोरन को ताप कर कुमुद कलाप मुकुलो कर सुछन्द भो । मानिनोनहूं के मन दरप दलित कर कन्दरप कन्दलित कर जगबन्द भो ॥ मुद्रित कमल अवलोकर तिमिर धवलो कर दिसान कवलो कर अनन्द भो । अम्बुधि असित कर लोकन मुदित कर कोक अमुदित कर समुदित चन्द भो ॥ १०५ ॥

द्वादश मास वर्णन तत्रादौ चैत्र वर्णन ।

चम्पक चमलिन के चमन चमतकार चमू चञ्चरीक को चितौत चोरें चित हैं । चाँदी को चबूतरा चहूँघा चम चम करै चन्दन सों गिरधरदास चरचित हैं । चारु चाँद तारे को चदोवा चांद चाँदनो सो चामोकर चोपन पै चञ्चला चकित हैं । चूनिन को चौको चढ़ी चन्दमुखी चूड़ामनि चाहन सों चैन करें चैन के चरित हैं ॥ १०६ ॥

छप्पय ।

फूली लतिका ललित तरुन, टन फूले तरवर ।
फूली सरिता सुभग सरस, फूले सब सरवर ॥
फूली कामिनि कामरूप, करि कन्तनि पूजहि ।
सुकसारो कुल केलि, फूल कोकिल कल कूजहिं ॥
कहि केसव ऐसे फूल महँ, सूल न फूल लगाइये ।
पिय आप चलन की को कहै चित्त न चैत चलाइये ॥

बैशाख यथा—कवित्त ।

मैन मदमाते मजेदार मनोहर महा मुनि मनिमन्तन के मन के मथन हैं। मुनिन को महल महाल मनो मन्मथ को गिरधरदास तामे मोदमई मन हैं। मञ्जु मल्लिकान की महँक मञ्जरीन की मधुप फिरैं मत्त मधुमादक मगन हैं। माधव के मास मध्य माधव मयङ्कमुखी मौज करैं मिले मनो मानिनी मदन हैं॥ १०८॥

छप्पय ।

केशवदास अकाश अवनि बासित सुबास करि ।
बहत पवन गति मन्द गात मकरन्द बिन्दु धरि ।
दिसि विदिसिन छवि लागि भाग पूरित परागवर ।
होत गन्धही अन्ध बधिर बौरो विदेसि नर ॥
सुनि सुखद सुखद सिख सीख पति रति शिखई सुखसाख में।
बरबिरहिनि बधत बिसेख करि काम विसिख वैसाख में ॥

जेष्ठ यथा—कवित्त ।

जमह जराउ जामे जरे हैं जवाहिरात जगमग जोति जाकी जग लौं जगति है । जामे जदु जागि जान प्यारी जातरूप ऐसी जगमुख-जाल ऐसी जोन्ह सी जगति है ॥ गिरधरदास जोर जबर जवानी को है जोहि जोहि जल-जाह्न जीय में जकति है । जगत के जीयन के जीय सौं जुराये जीय जोय जोषिता को जेठ जरनि जरति है॥११०॥

छप्पय ।

एक भूत मै होत भूत भज पञ्चभूत भ्रम ।
अनिल अम्बु आकाश अवनि ह्वै जात आगि सम ॥
पन्थ थकित मद मुकित सुखित सर सिंधुर जोवत ।
काकोदर करि कोश उदरतर केहरि सोवत ॥
पियप्रबलजीवइहिविधिअबल सकलविकलजलथलरहत ।
तजि केशवदास उदास मग जेठ मास जेठहि कहत ॥१११॥

आषाढ़ यथा—कवित्त ।

आनन अमल उड़ अधिप अधिक आछो अम्बुज सो अदभुत आभा ईछननि में । अमय अमोल ओज आगर अनूप अति अमल उरोज अहैं ईस उन्नतनि में ॥ आछे अवलोके तें अनङ्ग अंग ना उमादि आवती न गिरधरदास आदरनि में । अबला अनोखी ऐसी ईस सो उमङ्ग सजैं आयी है असाढ़ ओढ़े आनँद अवनि में ॥ ११२ ॥

छप्पय ।

पवन चक्र परचण्ड चलत चहुँओर चपल गति ।
भवन भामिनी तजत भ्रमत मानहुं तिनकी मति ॥
संन्यासी इहि मास होत इक आसनवासी ।
पुरुषन की को कहै भये पच्छियो निवासी ॥
इहि समय सेज सोवन लियो श्रीहि साथ श्रीनाथहूँ ।
कहि केसवदास असाढ़ चल मैं न सुन्यो श्रुति गाथहूँ ॥

श्रावण यथा—कवित्त ।

सोना से सरीर पै सिँगारन सुभग सजि सेज साजि साजि स्याम संगम सुखन मैं। सुन्दरी सिरोमनि सोहागिनि सलोनी सुचि स्यामा सुकुमारि सोहै सीसा के सदन मैं ॥ सोस सीस सुमन सोहायो गिरधरदास सूर सरसात ज्यों सकारे सरपन मैं । सिन्धुसुता सैलसुता सारदा सची सो सुचि सावन मैं सरसै सरस सखियन मैं ॥ ११४ ॥

छप्पय ।

केशव सरिता सकल मिलत सागर मन मोहै ।
ललितलता लपटाति तरुन तन तरुवर सोहै ॥
रुचि चपला मिलि मेघ चपल चमकत चहुँओरन ।
मनभावन कहँ भेंटि भूमि कूजत मिसि मोरन ॥
इहि रीति रमन रमनीन सों रमन लगे मनभावने ।
पिय गमन करन की को कहै गमन न सुनियत सावने ॥

भाद्र यथा—कवित्त ।

नभ नीर देत नील नीरद नगेस कैसे नाद करैं सुनि नाक नाग करैं नति है । नदी नद नारे नीर निधि नीर पूरे नये नलिन नसाये त्यों निदाघता नसति है। गिरधर-दास नग मोहनीप नग धरे नाग अति नाचैं नेह नदी निकरति है। नभ मास नागर को नागरी निरखि ऐसे नवल निकुञ्ज में निपुन निरतति है ॥ ११६ ॥

छप्पय।

घोरत घन चहुँओर घोष निर्घोषनि मण्डहिं ।
धाराधर धर धरनि मुसल धारन जल छण्डहिं ॥
झिल्लीगण झनकार पवन झुकि २ झकझोरत ।
बाघ सिंह गुञ्जरत पुञ्ज कुञ्जर तरु तोरत ॥
निसिदिन विशेष निहि सेष मिटि जात सुओली ओढ़िये ।
देसहि पियूष परदेस विष भादों भौन न छोड़िये ॥ ११७ ॥

आश्विन यथा—कवित्त।

केतकी कुमुद कञ्ज केवरा कदम कुन्द कुसुम कलित भये कानन कतार मे । कुंज कुंज केकी कीर कोकिला कलोल करैं कोकी कोक किलकैं त्यों कालिन्दी कछार मे ॥ कीरतिकुमारी कंजनैनी कल कमला सी काम की सी कलना कलित करतार मे । गिरधरदास करैं केलि कोक कलाधर कोटि कोटि भांति कान्ह कुँवर कुँवार मे ॥ ११८ ॥

छप्पय।

प्रथम पिण्ड हित प्रगट पितर पावत घर आवैं ।
नव दुर्गनि नर पूजि स्वर्ग अपवर्गहि पावैं ॥
छत्रन दै छितिपतिहि लेत भुव लै संग पण्डित ।
केशवदास अकाश अमल जलथल जनमण्डित ॥
रमनीय रजति रजनी सरुचि रमा रमनङ्ग रास रति ।
कल केलि कलपतरु क्वार महिं कान्त न करहु विदेस गति॥

कार्त्तिक यथा—कवित्त।

कलित कलाधर में कुन्द कलिका कतार कंज पै कमान कीर पासक विकल है । कानन में करनफूल गिरधरदास कान्ति कुन्दन सी केहर सो कमर कुसल है ॥ कुन्तल कुटिल कण्ठ कम्बु सो कपोत मोहै देख कलिताई काम कामिनी कतल है ऐसी कमनीय कंजमुखी कन्त कान्हर सों करै केलि कातिक में करन कमल है ॥ १२० ॥

छप्पय।

बन उपवन जलथल अकाश दीसन्त दीपगण ।
सुखह्नो सुख दिन राति जुवा खेलत दम्पतिजन ॥
देवचरित्र विचित्र चित्र चित्रित आँगन घर ।
जगत जगत जगदीस जोति जगमगति नारि नर ॥
दिन दान न्हान गुनगान हरि जनम सफल करि लीजिये ।
कहि केसवदास विदेसमति कन्त न कातिक कीजिये॥१२१॥

मार्गशीर्ष यथा—कवित्त।

अतिहि अराम देत ऐन को अराम अभिराम आठो ओर ओप्यो ऐस अवलन में । आसन अनूप आप ईस है आसीन जापे अच्छ अवलोकि है उदासी अम्बुजन में ॥ गिरधरदास एको उपमा न आवति है ईंगुर सी आछो अरुनाई अधरन में। अंगधर इन्दुमुखी ओज सों अमल ऐसे लसे अञ्जनन से अजब अगहन में ॥ १२२ ॥

छप्पय ।

मासन में हरि अंस कहत यासों सब कोऊ ।
स्वारथ परमारथनि देत भारतमय दोऊ ॥
केशव सरितासरित फूल फूले सुगन्ध गुर ।
कूजत कुल कल हंस कलित कलहंसनि के सुर ॥
दिन परम नरम सीत न गरम करम करम यह पाइयतु ।
करि प्राननाथ परदेस को मारग सिर मारग न चितु॥१२३॥

पूस यथा—कवित्त ।

पवन के पायन की पलङ्ग पुरट बनी पलङ्ग पुरन्दर की पावती न परतल । पाटी पद्मराग परबाल औ पिरोजन की आपे पर्यो पद्म सो परम पट परिमल ॥ गिरधरदास पौन पुहुप पराग लै प्रगट पहुँचावैं परमा सों पूरो पल पल । प्रेम पगे पूस में प्रिया को पिया प्यार करैं प्यारे को लखत पद्मिनी है ना परहिं पल ॥ १२४ ।

छप्पय ।

सीतल जलथल बसन असन सीतल अनरोचक ।
केशवदास अकास अवनि सीतल असुमोचक ॥
तेल तूल तामोल तपन तापन नव नारी ।
राज रङ्क सब छोड़ि करत इनहीं अधिकारी ॥
लघु घोस दीह रजनीरवन होत दुसह दुख रूस मैं ।
यह मन क्रम वचन विचारि पिय पन्थ न बूझिय पूस में ॥

माघ यथा—कवित्त ।

मनिमय महि मुददानि मनोहर मञ्जु मानिक के मन्दिर महान मूसैं मन हैं । मालती को, महँक मलिन्द मँदमाते फिरैं मिले मकरन्दन सौं मौलसिरीपन हैं ॥ गिरधरदास मुकुताहल की माला धरें मदन महीपति के मद मरदन हैं । माघ के महीना मैन मोहन मयङ्कमुखी मज़ेदार मौज करैं मन में मगन हैं ॥ १२६ ॥

छप्पय ।

बन उपवन केकी कपोत कोकिल कल बोलत ।
केसव ले भ्रमर भूभरे बहुभांतिन डोलत ॥
मृगमद मलय कपूर धूर धूसरित दसौदिसि ।
ताल मृदङ्ग उमङ्ग सुनत संगीत गीत निसि ॥
खेलत बसन्त सन्तत सुघर सन्त असन्त अनन्त गति ।
घर माह न छोड़िय माह में जो मन माह सनेह मति॥१२७॥

फाल्गुण यथा—कवित्त ।

गिरधरदास फूलवारे फूले फूलन सौं फलवारे फलन सौं फलित फबत हैं । फटिक से फरस पै फरस फरास रच्यो फबनि सौं फलक निवासीहो फबत हैं ॥ फ़ाटक फराक फनधर फन फबनि को फरक में फरकी फिरोजा की फकत हैं । फरहत भरे फूलें फागुन में फनी बन्धु फौज की फिरनि ऐसो फिरनि फिरत हैं । १२८ ।

छप्पय ।

सोक साज तजि राज रङ्क निरसङ्क बिराजत ।
जोइ भावत सोइ कहत करत पुनि हँसत न लाजत ॥
घर घर जुवती ज्वान जोर गहि गाँठनि छोरहिं ।
बसन छीनि मुख मीड़ि आँजि लोचन तृन तोरहिं ॥
पट बास सुबास अकास उड़ि भूमण्डल सम मण्डिये ।
कहि केसवदास विलासनिधि फागुन फाग न छण्डिये॥१२९॥

इति मास * अथ ऋतु—बरवै ।

बर बसन्त मधु माधव अति सुखदान ।
कहत जेठ सुचि † ग्रीषम तापनिधान ॥ १३० ॥
सावन हिय हुलसावन भादों मास ।
बरसा रितु कवि बरनत सहित हुलास ॥ १३१ ॥
आसिन कातिक कविजन सरद बखान ।
बिलसत लखि अम्बुज को परम निदान ॥ १३२ ॥
अगहन पूस परम जन कहत हिमन्त ।
जामे सुख सों बिलसत कामिनि कन्त ॥ १३३ ॥

---

* बारहों मास नायिका ने यात्रा निषेध किया तो किस मास में नायक विदेश गया और नायिका प्रोषित पतिका हुई? यदि हर मास में गया तो नायक कैसे हुआ?

† शुचि - आषाढ़ ।

सिसिर माघ अरु फागुन आनँदखान ।
नृत्य गान करि हरषत परम सुजान ॥ १३४ ॥
या बिधि कविजन षटरितु करत बिधान ।
यातें यामें बरन्यो निपट अजान ॥ १३५ ॥
अब षटरितु के क्रम तें लच्छन लच्छ ।
बरनत मत कवि मग लखि सुन्दर स्वच्छ ॥ १३६ ॥

दोहा।

बरनि बसन्त सु पुष्प अलि बिरहि बिदारन बीर ।
कोकिल कलरव कलित बन कोमल सुरभि समीर ॥१३७॥
ताते तरल समीर सुख सूखे सरिता ताल ।
जीव अवल्ल जलथल बिकल ग्रीषम सफल रसाल ॥१३८॥
बरषा हंस पयान बक बादर दादुर मोर ।
केतिक कंज कदम्ब जल सो दामिनि घनघोर ॥ १३९ ॥
अमल अकास प्रकास ससि मुदित कमल कुल कास ।
पन्थी पितर पयान नृप सरद सु केसवदास ॥ १४० ॥
तेल तूल तामोल तिय ताप हरन रविवन्त ।
दीह रजनि लघु द्यौस सुन सीत सहित हेमन्त ॥ १४१ ॥
सिसिर सरस मन बरनि सब केसव राजा रङ्क ।
नाचत गावत रैन दिन खेलत रहत निसङ्क ॥ १४२ ॥

तत्रादौ बसन्तागमन यथा कवित्त।

गुंजरन लागीं भौंर भौरें केलिकुंजन में कैलिया के

मुख तें कुहुकन कढ़ै लगी। द्विजदेव तैसे कछू गहव गुला-
वन तें चहकि चहूँघा चटकाहट बढ़ै लगी ॥ लागो सर
सावन मनोज निज ओज रति विरही सतावन की वतियां
गढ़ै लगी। हीन लागो प्रीति रीति बहुरि नईसी नवनेह
उनईसी मति मोह सों मढ़ै लगी ॥ १४३ ॥

गौनहद हीन लागे सुखद सु भौन लागे पौन लागे
दुखद वियोगिन के जियरान। सुन्दर सवाद लै सु भोजन
लमन लागे जगन मनोज लागे जोगिन के जियरान। क
हत गुलाव वन फूलन पलास लागे सकल विलासन के
समय सु नियरान। दिन अधिकान लागे रितुपति आन
लागे तपन सु भान लागे पान लागे पियरान ॥ १४४ ॥

वैसही विदेस के जवैया रहे गौन तजि मौन तजि वैसे
मंजु कोकिल कलाप भो। द्विजदेव वैसही मलिन्दन को
मोद कर मल्लिका मधुप माधवीन सों मिलाप भो॥ वैसही
सँजोगी जुरि जोवन लगे हैं कुंज वैसही वियोगिन के वृन्द
को विलाप भो। वैसही बहुरि मोह वान बरसन लागे
वैसही सगुन फेरि मनसिज-चाप भो ॥ १४५ ॥

माते मकरन्द के मलिन्दगन गुंजरत मन्द मन्द सोई
मन्त्र मोहन सुनायो है। कहै गिरधारी खुली खोपरी क-
पोतिन की तोमरी को तान कोकिलान सुर गायो है ॥
गोसो सो निकल रहीं कलियां गुलावन की नये नये आ-

मन की जात उपजायो है । राज व्रजराज जू को रानी करिबे को आज बाजीगर व्रज में वसन्त बनि आयो है ॥

फूले हैं पलास लाल लहरें निसान सोई बौरे हैं रसाल बरछी सो धार साने की । गुंजरत मंजुल मलिन्द छन्द आस पास मन्दगति भासत मयन्द हैं पयाने की ॥ गोकुल पराग रज उड़े पन्थ फूलन के कोकिला बिरद बर बोलें बीर बाने की ।मान बलवन्त गढ़ काटा करिबे को अन्त आयो न बसन्त सैन मैन मरदाने की ॥ १४७ ॥

तारे जहां सुभट नगारे पिकनाद जहां पैदल चकोर कोर बाँधि बद बेस की । गुंजरत भौंर पुंज कुंजरत भोर जहां पौन झकझोर घोर घमक हमेस की ॥ भनत कविन्द सर फौज है बसन्त आली मिलै तन्त कन्त सो मनोज मान पेस की । मानवारी गढ़ी बेगुमान ढाहिबे के लिये चढ़ी असवारी है निसाकर नरेस की ॥ १४८ ॥

वसन्तराजश्री यथा ।

अवनि अकास अम्बु अनिल अनल आभा औरे भांति भई जो मनोज महि मन्त की । करजनि मानि या दिसानि है गई है मन्द मति छ्वै गई है सब जानु जग जन्त की ॥ कहत किसोर जार जरब कुजोगिन को भोगिन को भावती वियोगिन के अन्त की । उलही उमङ्गन तें लखि लसि रही तैसी लहलही लौंदन पै लहर बसन्त की ॥ १४९ ॥

दौरें दौरें डोलतीं सुगन्ध मनो डारन तें औरे औरे फूलन पै दुगुन फबी है फाव। चोथते चकोरन सों भूले भये भौंरन सों चाख्यो ओर चम्पन पै चौगुनो चढ़ो है आव ॥ द्विजदेव की सों दुति देखत भुलानो चित दस गुनो दीपति सों गहव गछे गुलाब। सौ गुनै समीर ह्वै सहस गुने तीर भये लाख गुनो चाँदनो करोर गुनो महताब ॥ १५० ॥

वल्ली को वितान मल्लीदल को बिछौना मंजु महल निकुंज है प्रमोद बनराज को। भारो दरबार भिरो भौरन को भीर बैठो मदन दिवान इतमाम काम काज को॥ पंडित प्रवोन तजि मानिनी गुमान गढ़ हाजिर हजूर सुनि कोकिल अवाज को। चोपदार चातक बिरद वढ़ि बोले दर दौलत दराज महराज रितुराज को ॥ १५१ ॥

मदन प्रशंसा।

आगे आगे दौरत वकील गन्धवाह ऐसे पाछे पाछे भौंरन की भीर भट भोम है। वाजे राजे किङ्किनी मजीठ कल गाजे जवे घूँघट ध्वजा में मैन सीम धुज सीम है॥ छ्यालाल सौरभ पै चन्दन पै जाको जीत ऐसो कौन भूतल में गव्वर गनीम है। मदन महीप वाज सदन सु सिरताज मदन वहादुर को कापर मुहीम है ॥ १५२ ॥

बसन्त वायु वर्णन ।

कैसी अलि राजे अलि अवलि अवाजे आज सुमन सुमन राजैं छिन छिन छूकैंये। कहत गुलाल औ रसालन पै सुकजाल बोलत बिसाल तेन भोगत मरूकैंये ॥ धीर को धराती छाती कौन अबला को अब कोक की कला की कोकिला की सुनि कूकैं ये । जल थल गञ्जन सरस रस रञ्जन सु मान को प्रभञ्जन प्रभञ्जन की झूकैंये ॥ १५३ ॥

बागन में चारु चटकाहट गुलाबन की ताल देत तालिया तुलै न तुक तन्त की । गुञ्जत मलिन्द वृन्द तान की उपज पुञ्ज कलरव गान कोकिलान किलकन्त की। गोकुल अनेक फूल फूले हैं रँगे दुकूल झूमे आम बौर हाव भाव रसवन्त की । लहरैं तरुन तरु छहरैं सुगन्ध मन्द नाचत नटी लों आवै बैहर बसन्त की ॥ १५४ ॥

मलयज गिरि तरु कोस तें कढ़ो है चढ़ी मञ्जु मकरन्द पुंज पानिप अपार सी। कहत किसोर चारों ओरन बिखम वेस प्रबल प्रचण्ड पेखि झरपत झार सी ॥ अलि विष बूड़ी बलि करत कहा है जापै सौरभ की लहर धरी है खरी धार सी । रहति न रोकी बरे चहति वियोगिन पै बैहर बसन्त की तिरीछी तरवार सी ॥ १५५ ॥

सवैया ।

सुन्दर सोहै सुगन्धित अंग अभंग अनंग कला ललिता

है । तैसो किसोर सोहात सुजोगिन भोगिनहूँ को मनो हरता है ॥ संग अली अवली रवि राजत अंग रसीली बसो-करता है। कोमलताजुत बीर बसन्त की बेहर के बनिता के लता है ॥ १५६ ॥

कवित्त ।

बिहरैं बिपिन में त्रिटप की हलाय डार कियो पतझार जाकी गति है दिगन्त लों। महँक सुगन्ध मधु फूलन क-पोलन के माते मधुकर गुंजरत रसवन्त सो ॥ सिंह सम सिसिर के सीत को सिसिर करि दीनो है भगाय ब्रज बड़े बलवन्त जो । मन्द मन्द चलत झरत मकरन्द मद मदन मतंग कैधों मारुत बसन्त को ॥ १५७ ॥

मधुव्रत वर्णन ।

हहराय उठत परत भहराय भू मे मंजु २ गुंजरत कुंज २ इतराय । आय चारु चूमत पुहुप पटली को पाय पुनि मधुपो को अङ्क भरत निसंक धाय ॥ खाय २ घूमरी को भरमत ठौर २ दौर २ ओकवि पराग धूसरित काय । पाय मधुरस आज निपट अघाय धाय दुख बिसराय का न करत मधुपराय ॥ १५८ ॥

सरद निसा की निसिनाथ की उजेरी जोहि रह्यो जाके लग में अनंग रस पैवे को । थिरत न क्योंहू कहूं फिरत

फिस्यो है फेरि बन बन व्याकुल बिषाद बिसरैबे को ॥ कीजे ना गरब एरे किंसुक प्रसून तो पै बैठ्यो नाहिं भवँर सुगन्ध रस लैबे को । मालती के बिरह बिकल कलकानि ह्वै कै आयो ताहि जानि कै दवागि जरि जैबे को ॥ १५९ ॥

सामान्य बिरहिनी यथा ।

सौगन्द करैंगी हम साँवरे सुजान मन जान तुम कहो हम क्योंहूं ना चलायहैं । कालिदास बाग बन पवन सुमन मधु मधुकर कोकिल समेत लिखवाय हैं ॥ क्योंकर चलोगे हमे छाडि कै छबीले छैल चतुर चितेरिन के हाथ दै पठाय हैं जमना समेत ब्रजमण्डल समेत चन्द चाँदनी समेत चैत चित्र मै लिखायहैं ॥ १६० ॥

मधुकर माल बन बेलिन के जाल पर कोकिल रसाल पर कुहुक अमन्द को । मन्द पौन सीतल सुबासमई बागन बिलासमई कालिदास रास मकरन्द को ॥ देखिये सयान बड़साख मैं पयान करै कान्ह को दया न होत गोपिन के वृन्द को । कैसे देखि जीहैं चढ़ि चाँदनी महल पर सुधा को चहल बसुधा को चारु चन्द को ॥ १६१ ॥

विशेष बिरहिनी यथा ।

अवनि तें अम्बर तें द्रुमनि दिगम्बर तें अपर अडम्बर तें सखि सरसो परै । कोकिला की कूकन तें हियन को हूकनि तें अतन भभूकनि तें तन तरसो परै ॥ कहत कि·

सोर कंज पुंजन तें कुंजन तें मंजु अलि गुंजन तें देख दरसो परै । बसन तें बासन तें सुमन सुबासन तें बैहर तें बन तें बसन्त बरसो परै ॥ १६२ ॥

सांझही तें दर परदान देहौं दुरि रहो एक जिय संक या कलानिधि कसाई की । कन्त की कहानी सुनि श्रवन सिहानी रैन रञ्चक बिहानी या बसन्त अन्त घाई की ॥ कनको न नेक आली पलको लगन पाई टरि कित गई नींद नैनन में आई को । कुहूकह्यो कोकिला कुमति मै उघाल्यो दृग जागि कै जु देखों ज्वाल जरत जुन्हाई को ॥

प्यारे के वियोग आलो उठी आगि वृन्दावन जरती सहैट कुंजें सुन्दरी महा महा । बौरें कचनार आँच उठति पलासन तें कुसुम करील डीठ परति जहाँ जहाँ ॥ मंसाराम तिने भेंटि आवत समीर बीर तयो जात तन आली लगति तहाँ तहाँ । मृग अधमारे बिललात हैं भवँर कारे कोइ लिया काँप लै पुकारति कहाँ कहाँ ॥ १६४ ॥

जेइ जेइ सुखद दुखद अब तेइ तेइ कवि मण्डन बिछुरत जदुपत्ती । सीतल मन्द सुगन्ध लगत जेइ तेइ बन अनिल अनल सो तत्ती ॥ तरु भये तीर व्याल भइ वेइलि जम भइ जमुन कुसुम भो कत्ती । जेइ बन तब बिहरत गोपाल संग तेइ वन अब बिहरन लगि छत्ती ॥ १६५ ॥

सवैया।

आयो बसन्त तमालन तें नवपल्लव की इमि जोति जगी है। फूलि पलास रहे जितही तित पाटल रातहि रंग रँगी है॥ मौर के अम्बन सार भई तिहि ऊपर कोकिल आनि खगी है। भागन भाग बचो बिरही जनु बागन बागन आग लगी है॥ १६६॥

फूले घने तरु जाल बिलोकि हुते कछु सूने सुभाय ससेरो। आगि सी लागी पलासन देखि तजे भय सों कहूं भागि बचेरो। छूटे सचान से ये अब तौ द्विजदेव चहूंदिसि कोकिल बैरो। ह्वै है कहा सजनी अबधौं बचि है किहि भांति सों प्रान पखेरो। १६७।

आहि कै काँपि कराहि उठी दृग आसुन मोचि सकोचि घरी है। लै कर कागद कोरी लला लिखिबे कहँ बैठी वियोग कथा स्वै। ऐसे में आनि कहूं द्विजदेव बसन्त बयारि कढ़ी तितही ह्वै। बात की बात में बौरी तिया अरु प्रोत ह्वै पाती परी कर तें चू। १६८।

अथ संजोगिनी।

आवतही हहराय हियो सुख अन्त कियोई हिमन्त कुचाली। त्यों द्विजदेव या पांचै बसन्त के पोत करो सिगरो तन साली॥ ज्ञारतो ज्वालन होरी न क्यों लखि सूनो नि-

केत विना वनमाली। सीत के अन्त बसन्त के आगम भावतो जोपै न आवतो आली॥ १६९॥

बसन्त को आशीर्बाद।

मिलि माधवी आदिक फूल के व्याज बिनोद लवा बरसायो करै। रचि नाच लतागन तानि बितान सबै विधि चित्त चुरायो करै॥ द्विजदेव जू देखि अनोखी प्रभा अलि चारन कीरति गायो करै। चिरजीवी बसन्त सदा द्विजदेव प्रसूनन की झरि लायो करै॥ १७०॥

इति बसन्त।

अथ ग्रीष्म तत्रादौ ग्रीष्म समय प्रभाव।

कवित्त।

चण्ड कर झारत झकोरत सरोस पौन तोरत तमाल गन मन्द दिन भारो सो। घर्ष के धरनि गिरि तमके प्रताप जाको देखत मजेज रेज जगत निहारो सो॥ तरु छीन छाया सर सूखत समुद्र बन करन बिचार देखो आतप अंगारो सो। छावत गगन धूर धावत धधात आवै चाय चढ़ो ग्रीषम गयन्द मतवारो सो॥ १७१॥

जीवन को नास कर ज्वाला को प्रकास कर भोरही तें भासकर आसमान छायो है। धमका धमक धूप सूखत तलाव कूप पौन को न गौन भौन आगि में तचायो है॥

तकि थकि रहे जकि सकल बिहाल हाल ग्रीषम अचर चर खचर सतायो है। मेरे जान कान्ह वृषभान जगमोचन को तीसरे त्रिलोचन को लोचन खोलायो है ॥ १७२ ॥

जेये बिना जीरण सो जल की जिकिर जीभ जर्यो जात जगत जलाकन के जोर तें । कूपसर सरिता सुखाय सिकता मै भई धाई धूरि धौरन धराधर के ओर तें ॥ बेनी कवि कहत अनातप चहत सब अगिनि तो आतप प्रकास चहुंओर तें । तावा सो तपत धरा मण्डल अखण्डल सुमार' तण्ड मण्डल दवा सो होत भोर तें ॥ १७३ ॥

तपत प्रचण्ड मारतण्ड महिमण्डल में ग्रीषम की तीखन तपन आरपार है। गिरधर कहे कांच कोच सो वहन लाग्यो भयो नद नदी नीर अदहन धार है ॥ झपट चहूँहन तें लपट लपेठो लूह सेस कैसी फूक पौन भूकन की झार है। तावा सी अटारी तपी आवा सी अवनि महा दावा से महल औ पजावा से पहार है ॥ १७४ ॥

तपें इत जेठ जग जात है जरन जासों ताप की तरनि मानों भर निकरत है इतही असाढ़ उत नूतन सघन घन सीतल समीर हिये हीतल भरत है। आधे अंग ज्वालन के जाल बिकराल आधे सुखद समोद हिये धीरज धरत है । सेनापति ग्रीषम तपत रितु भीषम है मानो बड़वानल सो बारिध बरत है ॥ १७५ ॥

उछरि उछरि भेकी छपटैं उरग पै उरग पग केकिन के लपटैं लहकि है। केकिन की सुरति हिये की ना कछू है भये एकी करी केहरि न बोलत बहकि है॥ कहै कवि ब्रह्म वारि हेरत हरिन फिरैं बैहर बहति बड़े जोर सों जहकि है। तरनि के तावन तवासी भई भूमि रही दसहू दिसान में दवा सी यों दहकि है॥ १७६॥

प्रबल प्रचण्ड चण्डकर की किरिनि देखो बैहर उदण्ड नवखण्ड घुमिलत है। अवनि कराही कैसो तेल रतनाकर सो नैन कवि ज्वाला की जहर झलकत है॥ ग्रीषम की ज्वाल जाल कठिन कराल यह काल ज्वालामुखीहू की देह पघिलत है। लूका भयो आसमान भूधर भभूका भयो भभकि भभकि भूमि दावा उगिलत है॥ १७७॥

आवासी अवनि धुन्धी धूप रूप धूमकेतु आँधी अन्त कूप डारै लोचन अनैसे कै। जमक जलाकन की नाकन को लोहू चलै व्याकुल जगत सांझ पावै जैसे तैसे कै॥ लोकपति लूक से उलूक से लुकात बेनी कुञ्ज छाया जहां तहां छाय रहो ऐसे कै। कोठरी तखाने खसखाने जलखाने बिन ग्रीषम के बासर बितीत होत कैसे कै॥ १७८॥

सीरे तहखाने तामें खासे खसखाने सोंधें अतर गुलाब को बयारैं रपटत है। भूधर संवारे हौज छूटत फुहारे और बारे भारे ताव दान धूप दपटत है॥ ऐसे समै गौन कहु

कैसे के बने तो प्यारे सुधा के तरङ्ग प्यारो अंग लपटत है। चन्दन किवार घनसार के पगार दई तऊ आनि ग्रीषम को झार झपटत है ॥ १७९ ॥

घोरि घनसारन सों सखिन कचूर चूर लीपे तहखाने सुख दीने है दुदण्ड को। तामें खसखाने बने उजरे बिताने सुर भौन के समाने जे निदाने ठानैं ठंड को॥ बहुत गुलाब के सुगंध सों समीर सने परत फुही है जल जंत्रन के तण्ड को। बिसद उसीरन के फोर परदान प्यारे तऊ आनि बेधतीं मरीचैं मारतण्ड को ॥ १८० ॥

ग्रीष्मोपचार यथा।

महल सुमालती के चन्दन चहल बीच सींच कर संदल सों तर कर राखौंगी। भर भर हौदन गुलाब औ सिताब आव आफताब नेक कहूं तनक न राखौंगी॥ खस की खुसोको चिकैं चक्षत चहूँघा चारु परत फुहार फुही फुंकरत राखौंगी। बल्लभ बिलोको क्यों न आज ब्रजराज साज कावहू सुगंध रचि सेज सजि राखौंगी॥ १८१॥

चन्दन महल मध्य चन्द्रक चहल चारु चाँदनी सी चिकैं चन्द चाँदनी सोहाई है। तर अतरन कर बिजन बयार नीर नहर विमल बारि चौगटद चलाई है॥ फरस गुलाबन को परत फुहीसी परमानँद गुलाबन की गिलम बिछाई है। ग्रीषम गरम घर्म पावै क्यों प्रवेस जहां आज महाराज ब्रजराज की अवाई है॥ १८२॥

जल जंत्र वर्णन—सवैया।

है जलजंत्र कै मोहनी मंत्र बसीकर सीकर के अवली सो। कै सिसिके हित मोद भरी जलजात अकास है भूमि थली सो॥ कै मुकताहल को बिरवा कि रचो हथफूल जलेस रली सो। कंज मनाल तें कै मकरन्द चलो तरराय के भांति भली॥ १८३॥

कवित्त।

अम्बर अतर तर चन्द्रक चहल तन चन्दमुखी चन्दन महल मैन साला से। खासे खसखाने तहखाने तरताने तने जजरे बिताने कुवे लागत हैं पाला से॥ दम कहै ग्रीषम गरम की भरम कौन जिनके गुलाब आब हौज भरे ताला से। झाला से झरत झर झाँपन सों बारा बाँधि धारा बाँधि छूटत फुहारा मेघमाला से॥ १८४॥

महमहे महल सुमल्लिका के राखे रचि मालती की चिकैं चारु चौगटद बिसाला सी। फरस गुलाब गुलआब के फुहारे भारे छूटत धुंधारे मनो मेघन की माला सी॥ दामोदर कहै जहां अतर तरंगै उठैं अंगें बदरंगें होत सौतिन को साला सी। करति कला है बाला आला सुखसेज्ञही में ग्रीषम बनाय राखी सिसिर के पाला सी॥ १८५॥

चन्दन चहल चोवा चाँदनी चँदवा चारु घनो घनसार घोरि सींच महबूबी के। अतर उमीर सीर सौरभ गुलाब

नीर गजब गुजारैं अंग अजब अजूबी के ॥ फेरन फबत फैली फूलन फरस तामें फूल सो फबो है बाल सुन्दर सुखूबो के। बिसद बिताने ताने तामें तहखाने बीच बैठो खसखाने में खजाने खोलि खूबी के ॥ १८६ ॥

अभिसार यथा।

भरियत गहरे गुलाब हद हौदन सुधरियत रजत फुहारे तदबीर के ढरियत ढारन सुढारन नहर नीर दरियत घनसार सरद गँभीर के ॥ करियत तर अतरन सों बिछौना कवि सोभ जू उवरियत बातायन तीर के। चन्दन पलंग अरविन्दन की सेज पर सुन्दरि सिधारी आज मन्दिर उसीर के ॥ १८७ ॥

जलक्रीड़ा यथा।

ग्रीषम विहार भौन साँवरे के ढिग गौन करि उतसाह सों सहेली लिये संग की। होत जल केलिन के विविध विधान तहां बाढ़ो है ललक उर मदन उमंग की ॥ ता समै भई जो सोभा बरनो न जात मापै दमकि उठी है दुति दूनो अंग अंग की। गागरी वे कैसो लगैं तरनि तरंगन में पानी पर पावक ज्यों फिरत फिरंग की ॥ १८८ ॥

थलक्रीड़ा यथा।

ग्रीषम निदाघ समै बैठे बन दोऊ जहां बाग में बहत बहतो लहै रहट की। लहलही माधवी लतान सों लपट

रही होतल को सीतल सोहाई छाँह बट की ॥ प्यारी के बदन स्वेद सीकर निहारि लाल प्यारो प्यार करत बयारि पीतपट की । पत्र बीच कहूँ कहूँ रवि की मरीचैं तहां लटकि छबीली छाँह छावत मुकट की ॥ १८८ ॥

दोऊ अनुराग भरे आये रंग भौन भाग मघवा सची को लखि लागत सहल है । बैठे एक आसन पै एकै संग एकै रंग चल्यो ना परत अंग कोमल काहल है । एकन लै अतर लगायो देव दुहुन के छिरक्यो गुलाब कीनें बिजन बहल है । लैकै कर बीनें परबीने अलियां अलापैं मञ्जु सुर पुञ्जन सों गुंजत महल है । १९० ॥

सीतल महल महा सीतल पटीर पंक सीतल कै लीप्यो भीति छिति छात दहरैं । सीतल सलिल भरे सीतल बिमल कुण्ड सीतल अमल जलजंत्र धारा छहरैं ॥ सीतल बिछौनन पै सीतल बिछाई सेज सीतल दुकूल पैन्हि पौढ़े हैं दुपहरैं । देव दोऊ सीतल अलिंगनन लेत देत सीतल सुगन्ध मन्द मारुत की लहरैं । १९१ ॥

चोवा चौक चाँदनी चँदोवा चिकैं चौकी चौक चम्पक चम्पावली चमेली चारु चोज है । खासे खस फरस उसीर खसखाननि में पनन कपूर चन्दनादि करि चोज है । लाली लखि ललित लली के लाल लोइन में अमल गुलाब दल मलत सरोज है । अवनि असीतल पै ग्रीषम तपीतल पै पिय हाथ हीतल पै सीतल सरोज है । १९२ ।

चन्दन चहल चित्रमहल छूदेस मोहै रस बतियान सों प्रमोद सखियान में। खासे खस फरस फुहारे फुही फैल फैल फैल भर सीतल समीर छतियान में। गोरे गात सोहै गरे गजरा चमेलिन के पोहे बर सुघर सहेली अति स्यान में। गोद लै उरोज कर परस गुलाब जल छिरकत लाड़िली लली के अँखियान में॥ १९३॥

बिरहिनी यथा।

ग्रीषम में भीषम ह्वै तपत सहसकर बापी ता रे नारे नद नदी सूखि जात हैं। झंझा पौन झरपि झरपि झकझोरि झोरि धूरि धार धूसरे दिगन्त ना दिखात हैं॥ श्रीपति सुकवि कहै आली बनमाली बिन खाली जग मोहि कैसे बासर बिहात हैं। तावा सो अजिर पग लावा से तचत घर भयो गिरि आवा से पजावा से धुंआत हैं॥ १९४॥

इति ग्रीष्म—अथ पावस।

तत्रादौ पावसागमन यथा छप्पै।

निलिव संग घन मत्त मत्त मातंग प्रमत्तहं।
तरल तुरङ्गम पौन गौन कीनेंव रस मत्तहं॥
चञ्चल अति चहुँओर तेग तड़िताहि चमंकिय।
अवनि रही जल पूरि पूरिरणरङ्गन रंजिय।
इहि कनिव मान चकचूर जिहि पावसधनु विद्या पढ़िव।
उद्धत मयूर करखा पढ़त पावस घन प्रगटिव चढ़िव॥१९५॥

करिव क्रुद्ध बड़ वुद्ध जुद्ध मण्डी घनघोरैं।
आनि रही जल पूरि धूरि दब्बिय छिति छोरैं॥
उमड़ि चले नद नद्द सद्द जल धारन झिल्लिय।
द्दिवन दव्यो दिवि देव व्योम तमतोम सुमिल्लिय॥
झंझा समीर उतपत उघप दिग्गमण्डल मण्डल छयव।
अति गरव गञ्ज ग्रीषम गरम पावस घनउद्धत भयव॥१९६॥

सवैया।

द्विज दीनन जीवन दाननि दै बिन पत्र जु साखिन राखि लयो। तन तापहि दूरि सु अम्बर धाम मैं चञ्चला को जिन बास दयो॥ जु बसायो विदेसी गुनीगन को सुख दम्पति पायो नयो उनयो। अचला हरि कीरति जासु धरी रितु पावस कै नृप नीति मयो॥ १९७॥

बिरहिनी यथा—कवित्त।

अमित सिखण्डिन की मण्डी धुनि मण्डल में झींगुर झकोर झिल्ली झरप झरापै री। चञ्चल ह्वै चपला चमंकै चण्ड चारोओर चातक चुनौती पीव पीवहि अलापै री॥ कहै नँदलाल गाढ़ अगम असाढ़* आयो दादुर दरेरन की दरत दरापै री। एरी उर कापै प्राननाथ कुबुजा पै अब कौन सहै दापै धुरवान की धरापै री॥ १९८॥

---

* आषाढ़ मास ग्रीष्म का है कवियों ने पावस में क्यों वर्णन किया?

आढ़ आढ़ करत असाढ़ आयो एरी आली डर से लगत देखि तम के जमाक तें । श्रीपति ये मैन माते मोरन के बैन सुनि परत न चैन बुंदियान के झमाक तें ॥ झिल्ली गन झांझ झनकारैं ना सँभारैं नेक दादुर दपट बीज तर से तमाक तें । भरको बिरह आग करको कठिन छातो दरकी सजल जलधर की धमाक तें ॥ १९९ ॥

कन्त बिन भावत सदन ना सजनि मोपै बिरह प्रबल मैन कोप्यो अति बाढ़ के । श्रीपति कलोलैं बोलैं कोकिल असोलैं खोलैं गौन गाँठि तोलैं गौन राखैं गाढ़ गाढ़ के ॥ हहरि हहरि हिय कहरि कहरि करि थहरि थहरि दिन बीति जिय माढ़ के । लहरि लहरि बीज फहरि फहरि आवै घहरि घहरि लठे बादर असाढ़ के ॥ २०० ॥

धमकि नगारन सो मेघन गरज कीनो चपला चमकि किरपान दरसायो है । भूपति मनोज को धुजान फहरान लागी बक मेड़रान आसमान भरि छायो है॥ दादुर नकीब चहुँओरसों पुकार करैं मोरन की हाँक सुनि सुरन जनायो है । ऐसो समै जानि कै गुमान मत ठान प्यारी गाढ़े दल साजि कै असाढ़ चढि आयो है ॥ २०१ ॥

घन दरसावन हैं बिज्जु तरपावन हैं चहूँओर धावन हैं बैहर सगाढ़ की । मानिनी भयावन हैं मोर हरखावन हैं दादुर बोलावन हैं अति आढ़ आढ़ की ॥ श्रीपति सो

छावन हैं झिल्ली झनकावन हैं बिरहो सतावन हैं चिन्ता चित बाढ़ की। लगन लगावन हैं मदन जगावन हैं चातको के गावन हैं आवन असाढ़ को ॥ २०२ ॥

कम्पू बन बागन कदम्ब कपतान खरे सूबेदार साहब समीर सरसायो है । कहै पदमाकर तिलङ्गी भीर भृंगन को मेजर तमूरची मयूर गुन गायो है ॥ काहट करै है घरराहट अटानन को येहो अरराहट अरावन को छायो है । मान मुख भंगी सफ जंगी ये निसंगी लिये रँगी रितु पावस फिरंगी बनि आयो है ॥ २०३ ॥

आई रितु पावस न आये प्रानप्यारे यातें मेघन बरज आली गरजन लावैं ना । दादुर हटकि बकि बकि के न फोरैं कान पिकन पटकि मोहि सबद सुनावैं ना ॥ बिरह बिथा तें हौं तो व्याकुल भई हौं देव चपला चमकि चित चिनगी उड़ावैं ना । चातक न गावैं मोर सोर ना मचावैं घन घुमड़ि न छावैं जौलों लाल घर आवैं ना ॥ २०४ ॥

सरद ससी तें अध ससी ह्वै बची हौं कवि चिन्तामनि तिमि हिमि सिसिर झमक तें । मारत मरूके बची बधिक बसन्तहू तें पावक प्रचार बची ग्रीषम तमक तें ॥ आयो पापी पावस ये प्रान अकुलान लाग्यो भयो री असान घोर घन के घमक तें । ताप तें तचौंगी जो पै अमिय अचौंगी आली अब ना बचौंगी चपलान की चमक तें । २०५ ॥

वियत विलोकतहीं मुनि मन डोलि उठे बोलि उठे बरही विनोद भरे बन बन। अकल विकल ह्वै बिकाने हैं पथिक जन ऊर्द्ध मुख चातक अधोमुख मरालगन । बेनी कवि कहत मही के महा भाग भये सुखद सँजोगिन बि- योगिन के ताप गन । कंज पुंज गंजन कपोटल के रंजन सु आये मानगंजन ये अंजनबरन घन । २०६ ॥

जल भरे झूमे मनो भूमे परसत आय दसहू दिसान घूमे दामिनी लए लए । धूमधारे धूसर से धूरवा धुधारे कारे धूरवान धारे धावैं छवि सो छए छए । श्रीपति सुजान कहै घरी घरी घहरात तापत अतन तन ताप सो तए तए । लाल बिन कैसे लाज चादर रहैगी बीर कादर करत मोहि बादर नए नए । २०७ ॥

धूम से धुधारे कहूँ काजर से कारे ये निपट बिकरारे मोहि लागत सघन के। श्रीपति सोहावन सलिल बरसावन सरीर में लगावन बियोगिन तियन के। दरजि दरजि हिय लरजि लरजि करि अरजि अरजि पाय पकरे मदन के । बरजि बरजि अति तरजि तरजि मो पै गरजि गरजि उठैं बादर गगन के । २०८ ।

तम की जमक बक पाँति की चमक जोति झींगन झमक चमकनि चपलान की । बैहर झकोरैं मोरैं सोरैं चहुँओरैं सोरैं प्रेम के हलोरैं घोरैं धुनि धुरवान की । र-

तिया जमकि आई छतिया उमगि आई पतिया न आई प्यारे श्रीपति सुजान की । नेह तरजन बिरहा के सरजन सुनि मान मरदन गरजन बदरान की ॥ २०९ ॥

मेचक कवच साजि बाहन बयारि बाज गाढ़े दल गाजि उठै दीरघ बदन के । भूषन भनत समसेर सोई दामिनी है हेत नर कामिनी के मान के कदन के ॥ पैदर बलाके धुरवान के पताके देखि घेरि घेरि आवैं चहुँओर ही सदन के । ना कर नरादर पिया सौं मिल सादर सु आए बीर बादर बहादर मदन के ॥ २१० ॥

दनकै दसो दिसा, दुनाली थोड़ दामिनि के घन के नगारे भारे उर डर भनके । भनकै भनाक भुण्ड झींगुर बिगुर बाजे सनके समीर तीर सक्र सरासन के । सनके समर मद मेचक झिलम धारे ठनकै नकीब दर्प दादुर दमन के । मन के नँदन के बिन कामिनि कदन के ये आए बीर बादर बहादर मदन के ॥ २११ ॥

तड़िता तरर त्यों इरम्मद अरर घनघोर की घ र भनकारैं झींगुरन की । पौन की लहक त्यों कदम की महँक लागी दाहक दहन लै लै सीसा उरगन की ॥ भनत कविन्द बिन नाह ये सनाह साजि पटा भर घटा फेरैं क्योंहूँ ना मुरन की । पेरैं भटू सन की अरेरैं करैं आठोजाम टेरैं बरहीन की दरेरैं दादुरन की ॥ २१२ ॥

मरज बढ़ावै महा दुर्जन फरज बाँधे काज ना करत कछू कारज सों आने री। चरजन जाने हिये दरज दुरावै हाय बरज न सीखै समै पीतम पयाने री ॥ भनै रघुराज अब अरज न सुनै नेक बिरही परज परजन अनुमाने री। तरजन जाने और हरज न जाने नेक गरजन जाने मेघ गरज न जाने री ॥ २१३ ॥

एक तो बिदेसी बिन ऐसई दुखी हौं मैं तो दूसरे प्रचण्ड लागे पावस सताने री । बचन जू बादर को आदर न मेरे यहाँ निपट अनारी आयो बिरह बढ़ाने री ॥ झरवे को हौंस है तो जाय मथुरा में झर साँवरो मिलैगो तोहि सौत के ठिकाने री । अरज न माने बीर हरज हमारो करै गरजन जाने मेघ गरज न जाने री ॥ २१४ ॥

धीर गयो ही को सुनि सोर बरही को बीर नाम लै लै पी को या पपीहा आन पी को है । मेघ अवली को घोर पौन अवली को बहै मार अवली को हाय मार अवली हौ है ॥ नाह से पथी को कहूँ आयबो न ठीको लख्यो देखि अवनी को रंग लागत न नीको है। डारै अधजी को मोहि कोने अधजी को यह रहत नजीको भेद जानत न जी को है ॥ २१५ ॥

आली रितु ग्रीषम बिताई दिन पीय बिन कठिन कठिन करि बची हौं मरी मरी । अब तो इलाज को रह्यो

ना कछु कान लखि उठीं ये घटान व्यथा उमड़ी खरी खरी ॥ अजहूँ न आए हरी झरी जल भरी भूमि चहूँओर देखो बन ह्वै रही हरी हरी। कूटन लगी री धीर धूरवा निहारी प्रान लूटन लगी री बोल मूरवा घरी घरी ॥२१६॥

पावस प्रवेस पिय प्यारो परदेस ये अँदेस करि झाँकति है महल दरी दरी। बकन की पाँति इन्दु बधुन की काँति लखि भांति भांति बादर बिसूरति घरी घरी ॥ पवन की झूकें सुनि कोकिल की कूकें गुनि उठो हिय हूकें लगी कापन डरी डरी। परी अलबेली जिय खरी तलवेली तकै हरी हरी बेली बकै व्याकुल हरी हरी ॥२१७॥

राजे रसमैरी तैसी बरषा समैरी चढ़ि चञ्चला न चैरी चकचौंधे कौंधे बारैरी। व्रती व्रत हारै हिये परत फुहारै कछु छोरै कछु धारै जलधर जलधारैरी ॥ भनत कविन्द कुंज भीन पौन सौरभ सों मदन कपाय के न पहरत पारै री। कामकेतुका से फूल डोल डोल डारैं मन औरें करि डारैं ये कदम्बन की डारैंरी ॥ २१८ ॥

हरे बन जरे से जरी सी लागी हरी भूमि कारी घन घटा ज्यों प्रलै की घेर घहरैं। लागे फनी फन की फुकार सी बयार बार बुन्द विष बान सम छाती छेद छहरैं ॥ गावैं मोर करखा यों बरषा समै में काम कालिदास कान्ह विन

गोकुल में थहरैं। महल झरोखन में झाँकतही लागि उठैं जमकी सी चाबुक ये जमुना की लहरैं ॥ २१९ ॥

झंझा पौन झूकैं अंग लागे सब सूकैं त्योंही उठत भभूकैं पञ्चबान जू के बान को। दसोदिसि हूकैं देखि दौरे मेह ढूकैं लगैं चातक उलूकैं भनि देवन अवान को ॥ झिल्ली नहिं भूकैं चुप होय जो मरूकैं त्योंहीं जल के कनूकैं होत प्यासी आय प्रान को। गए स्याम जू कैं उपजावैं हिय हूकैं एक धुरवा को धूकैं दूजे कूकैं मोरवान को ॥ २२० ॥

सीतल सुगन्ध मन्द डोलै कि न डोलै पौन धूरवा धुरारे चहै धावै चहै धावै ना। प्यारे मनभावन के आवन की औधि गई बिरह मुकाल चहै पावै चहै पावै ना ॥ प्रानन को प्यासी सौत पावस प्रचण्ड भई अब वै कलापी चहै गावै चहै गावै ना। जतन अनेकन सों अब ना बचौंगी बीर अब वै विदेसी चहै आवै चहै आवै ना ॥ २२१ ॥

बाजत नगारे घन ताल देत नदी नारे झींगुरन झाँझ भेरी भृंगन बजाई है। कोकिल अलापचारी नीलग्रीव पौन बीन धारी चाटी चातक लगाई है ॥ मनिमाल जुगुनू मुबारक तिमिर थार चौमुख चिराग चारु चपला जनाई है। बालम विदेस नए दुख को जनम भयो पावस हमारे ल्याई विरह बधाई है ॥ २२२ ॥

मोरन की सोर सुनि पिक की पुकार सुनि चातक

चिकार सुनि सूनी स्याम जामिनी । जुगनू चमक छवि गगन कुहुक रहैं झींगुर विसेष सेष डरी गजगामिनी ॥ झरिझरि आवै नोर काँपै सकल सरीर पीतम बिदेस कैसे धीर धरै कामिनी। मारि डारै मदन मरोरि डारै बादर दबाय डारै दादुर दरेरि डारै दामिनी ॥ २२३ ॥

सावन सोहावन या लगत भयावन सो आवन अवधि अब सोचैं गजगामिनी । ऐहैं बलबीर कबहूँ धों ह्यां कि नाहिं ऊधो कैसे धीर धरैं ये अधीर ब्रज कामिनी ॥ जब तब जींगन की जोति जगै ज्वालजैसी जम की जमाति सी जनाति जाति जामिनी । जारे हैं पपीहरा पुकारैं पीय पीय टेरि घेरि मारै बादर दरेरि डारै दामिगी ॥ २२४ ॥

बरसत मेह नेह सरसत अंग अंग झरसत देह जैसे जरत जवासो है । कहै पदमाकर कलिन्दी के कदम्बन पै मधुपन कीनों आय महत मवासो है ॥ ऊधो यह जधम जताय दीजो मोहन को ब्रज सो सुबासो भयो अगिनि अवासो है । पातकी पपीहा जलपान को न प्यासो काहू विथित वियोगिन के प्रानन को प्यासो है ॥ २२५ ॥

साची कहैं रावरे सों झाँवरे लगै तमाल आवै जिहि काल सुधि साँवरे सुजान को । फूल भार भरों डार जैसे जमजाल ऊधो कालिन्दी कछार सजो धार ज्यों कृपान को ॥ चपला चमक लगै लूक ह्वै अचूक हिये कोलिक कु

हूक बरजोर कोर बान की। कूक मोरवान की करेजा टूक टूक करैं लागति हैं हूकैं सुनि धुनि धुरवान की ॥ २२६ ॥

डोलैं पौन परसि परसि जल बुन्दन को बोलैं मोर चातक चकित उठी डरि मै । कहा लों बराऊँ दई मारे मैन बानन सों थकि रही केतिकौ उपाय करि करि मै ॥ दत्त कवि प्यारे मनमोहन न पाऊँ कहो मन समुझाऊँ री कहा लों धीर धरि मै । छाए मेघमण्डल सोहाए नभमण्डल में आए मनभावन न सावन की झरि मै ॥ २२७ ॥

मदमई कोकिल मगन ह्वै करत कूकैं जलमई मही पग धरत न मग मे । विज्जु नाचै घन में बिरह हिय बीच नाचै मीच नाचै ब्रज में मयूर नाचै नभ मे ॥ श्रीपति सुकवि कहै सावन सोहावन में आवन पथिक लागे आनँद भोऔंग मे । देह छायो मदन अछेह तम छिति छायो मेह छायो गगन सनेह छायो जग मे ॥ २२८ ॥

धावत धुरारे धुरवान की निहारी प्रिय चातक मयूर पिक आनँद मगन भो श्रीपति जू सावन सोहावन के आवन में बिरह सुभट ते वियोगिनी को रन भो । जलमई धरनि तिमिरमई दहदोह घनमई गगन तड़ितमई घन भो। छबिमई बन भो बिलाकमई तन भो सनेहमई जन भो मदनमई मन भो ॥ २२९ ॥

छायो नभमण्डल घुमड़ि घन श्रीकवि जू आनँद अथोर

चारोंओर उमगत है। पायो मद मालती को कुंज २ गुंजत है भौंर दुख पुंज गेह गेह तें भगत है। धायो देश देश ते विदेसी सब काए लायो निज निज ती को भरो मोद सों जगत है। आयो सखी सावन सोहावन सहो पै मोहि बिन मनभावन भयावन लगत है॥ २३०॥

इति विरहिनी।

अथ विरही।

घाघरे की घुमड़ उमड़ चारु चूनरी को पायन मलूक मखमल बार जोरे की। भृकुटी कुटिल छूटी अलकें कपोलन पै बडी बड़ी आँखिन में छबि लाल डोरे की। तरिवन तरल जराऊ जरबीली जोर स्वेदकन ललित बलित मुख गोरे की। भूलत न भामिनी की गावन गुमान भरी सावन में श्रीपति मचावन हिंडोरे की॥ २३१॥

चूनरी की चहक चमक चारु चोपन की चूरियों की चुहुर चितौन चखचोरे की। कहै पदमाकर मनोज मद माती मजा मेंहँदी की महँक मज़ेज मुख मोरे की। गोला गव्व गंजन गोराई गोला गालव की गहगही गालव गोराई गात गोरे की। हरित हराकी हीर हार की हमेलहू की हलन हियोई हरै हलग हिंडोरे की॥ २३२॥

संयोगिनी यथा—सवैया।

ऊँची अटा पै लखे घटा दोऊ दुल्हन की ह्वै रही रूप

छलासो। वेनी बड़े बड़े बुन्दन तें एकबारही वारिद कोन छलासी। चौंकि चली बिचली गच पै लचको करिहां कुच भार छलासी। त्यों घनस्याम गह्यो अबला फिरि के गरे लागि गई चपलासो॥ २३३॥

कवित्त।

मल्लिकन मंजुल मलिन्द मतवारे मिलैं मन्द मन्द मारुत मुहीम मनसा की है। कहै पदमाकर त्यों निनद नदीन नित नागर नवेलिन की नजर नसा की है॥ दौरत दरेरो देत दादुर सु दुन्दै दीह दामिनी दमंकन दिसान में दसा की है। बद्दलन बुन्दन बिलोको बगुलान बाग बंगलान बेलिन बहार बरसा की है॥ २३४॥

रामकृष्णवर्म्मा (उपनाम बीरकवि) रचित।

चारोओर घुमड़ घनेर घटा छाई घनश्याम की अवाई औ चढाई मनसा की है। बिरह बिथा में बिललात मान गौरव सो देख तो बिचार काम कौन सो दसा की है॥ चल बनमाली सों मिलाऊँ तोहि आली बलबीर की दुहाई बात छाड़ दै गुसा की है। मान कही मेरो कहा फेर पछताये घनश्याम सों न रूसै या बहार बरसा की है॥२३५॥

भई है चढ़ाई मनमत्थ महिपाल जू को चारोओर दादुर नकीब की पुकारे हैं। झिल्लीगन अटल सिपाह झनकारैं जोर मोर मरदानन की माची ललकारैं हैं॥ बकपाँति

बड़े २ बीरन की लागी पाँति कोकिला अलाप फौजदार की हुकारै हैं । दामिनि धुजा धुराय मेघन मतंग पीठ बाजत ये मदन महीप के नगारे हैं ॥ २३६ ॥

संयोगी यथा ।

स्याम असमानो स्याम भयो असमानो तैसो लखि असमानो सुख सजि असमानो री । सब अहिरानो दुख सहि अहिरानी फूले फिरैं अहिरानो संग हरि अहिरानो री ॥ गिरधरदास ताप मिथ्यो धुरवानो खण्ड उठे धुरवानो किये धीर धुरवानो री । सुखबर सानो रीझि लियो सरसानो री त्यों यह बर सानो रीति रस बरसानो री ॥ २३७ ॥

दोला क्रीड़ा ।

भौंरन को गूंजिबो बिहार बन कुञ्जन में मञ्जुल मलारन को गावनो लगत है । कहै पदमाकर गुमानहूँ ते मानहूँ ते प्रानहूँ ते प्यारो मनभावनो लगत है ॥ मोरन को सोर घनघोर चहुँओरन हिँडोरन को वृन्द छबि छावनो लगत है । नेह सरसावन में मेह बरसावन में सावन में झूलिबो सोहावनो लगत है ॥ २३८ ॥

तीर पर तरनितनूजा के तमाल तरे तीज की तयारी ताकि आई तखियान मे । कहै पदमाकर सु उमगि उमङ्ग उठे मेहँदी सुरंग की तरङ्ग नखियान मे ॥ प्रेमरंग बोरी गोरी नवलकिसोरी तहां झूलति हिँडोरे यों सोहाई सखि-

यान मे । काम झूले उर में उरोजन में दाम झूले स्याम झूले प्यारी की अन्यारी अँखियान मे ॥ २३९ ॥

फूलो फूल वेलीसी नवेली अलवेली बधू झूलति अकेली कामवेली सी बढ़ति है । कहै पदमाकर झमङ्क की झकोरन सों चारोओर सोर किङ्किनोन की कढ़ति है ॥ उर उचकाय मचकीन की मचामच सों लंकहि लचाय चाय चौगुनी चढ़ति है। रति बिपरीत को पुनीत परिपाटी सुतौ हौसनि हिँडोरे की सु पाटी पै पढ़ति है ॥ २४० ॥

दोऊ मखतूल झूल झूलैं मखतूल झूला लेत सुखमूल कहि तीख भरि बरसात । छूटि छूटि अलकैं कपोलन पै छहरात फहरात अञ्चल उरोज है उघर जात ॥ रहो रहो नाहीं नाहीं अब ना झुलाओ लाल बबा की सौं मेरी ये जुगल जानु थहरात। ज्यौंहीं ज्यों मचत लचत लचकीली लंक संकन मयंकमुखी अंकन लपटि जात ॥ २४१ ॥

फरस जरी को नग जूटन जटित चौक चाँदनी से फरस फनूस तमकत हैं । झूलत जराऊ हेम गगनहिँडोरे * चढ़ी पावस निसा के घन घूमि घमकत हैं। भनि पंजनेस हँसि हौसन झुलावे लाल तियन के तन दीप दाम दमकत हैं। महावीर मदन वनैत की बिसाल मानो बरत बनैठिन के चक्र चमकत हैं ॥ २४२ ॥

---

* चरखी ।

रहसि रहसि हँसि हँसि कै हिँडोरे चढ़ी लेति खरी पेंगैं छबि छाजै उकसन में । उड़त दुकूल उघरत भुजमूल बढ़ी सुखमा अतूल केस फूल की खसन मैं॥अति सुकमारि देख भये अनमेख स्याम रीझत बिसूर स्रम सीकर लसन में । ज्यों ज्यों लचकीलो लङ्क लचकत भावती को त्यों त्यों उत प्यारो गहै आँगुरी दसन में ॥ २४३ ॥

झूलत हिँडोरे बँधी प्रेम रंग डोरे मनिमाल उर डोलैं संग डोले मनिमाल के । छाये स्रम सीकर तुसार के हँसी कर मनोज के बसीकर लचत लंक बाल के॥भावन के राग भरी गावन लगी है राग कानन सोहान लागे कोकिल -रसाल के । पेन अति चञ्चल चलत चख चञ्चल ह्वै फहरत अंचल सुरंग पट लाल के ॥ २४४ ॥

साँवन की तीजैं पिया भीजैं बारि बुन्दन सों अंग अंग ओढ़नी सुरंग रंग बोरे की। गावत मलारैं धुरवान की धुकारैं कहूँ झिल्ली झनकारैं झनकरत झकोरे की॥ करत बिहार दोउ अतिही उदार भरे बीर कहै मन्द सोभा पौन के झकोरे की। झमक झरी की त्यों चमक चारु चपला की घमक घटा की तामें रमक हिँडोरे की ॥ २४५ ॥

सवैया ।

साँवन तीज सोहावन को सजि सोहैं दुकूल सबै सुख साधा । त्यों पद्माकर देखे बनै कहते न बनै अनुराग अ-

गाधा ॥ प्रेम के हेम हिँडोरन में सरसैं बरसैं रस रंग अगाधा। राधिका के हिये झूलत सांवरो सांवरे के हिये झूलति राधा ॥ २४६ ॥

कवित्त ।

फुह्‌ह २ बुन्द झरैं बीर बारि बाहनतें कुह्‌ह २ सब्द होत कीर कोकिलान को। ताही समै स्यामा स्याम झूलत हिँडोरे बैठे वारों छवि कोटिन मै रति पञ्चबान की ॥ कुण्डल लटक सोहै भृकुटी मटक मोहै अटक चटक पट पीत फहरान की। झूलत समै की सुधि भूलत न ढूलत री उझकनि झुकनि झकोरनि सुजान की ॥ २४७ ॥

दोहा ।

वल्लभ चित चातक सरिस घन सौ श्रीघनस्याम ।
तिहि पद जलकन परसि अब चाहत है बिसराम ॥२४८॥

इति पावस—अथ सरद ।

तालन पै ताल पै तमालन पै सालन पै बृन्दावन बीथिन बिहार बंसीबट पै। कहै पदमाकर अखण्ड रासमण्डल पै मण्डित उमण्ड महाकालिन्दी के तट पै ॥ छिति पर छान पर छज्जत छटान पर ललित लतान पर लाड़िली के लट पै। आई भले छाई यह सरद जुन्हाई जिहि पाई छवि आजही कन्हाई के मुकट पै ॥ २४९ ॥

आसपास पुहुमी प्रकास के पगार सोहैं बनन अगार दीठि ह्वै रही बिबर तें। पारावार पारद अपार सो दिसन बूड़ी चन्द सूर दोउ दिन रात बिधिबर तें॥ सरद जुन्हाई जन्हुजाई धार सहस सुधाई सोभा सिन्धु नभ सुभ्र गिरिवर तें। उमड़्यो परत जोति मण्डल अखण्ड सुधामण्डल मही तें विधुमण्डलविवर तें॥ २५०॥

आई रितु सरद गगन बिमलाई छाई खञ्जन की राजी कुञ्ज कुञ्जन बसै लगी। हरित हरित पथ पथिक सिधारे पथ अकथ सुरारि ओज जग बिलसै लगी॥ सुमन सरासन के सुमन सरासन तें छूटि के सुमन सर आलीहो गसै लगी। तालन कमल फूले कमल बितूले अलि अलि पर पीतमा पराग की लसै लगी॥ २५१॥

चन्द निसि ललना वदन लखि धाई किधौं पारद की खान फैल आई आसमान है। कैधौं सुख के प्रबोध सुखित सकल सुर लोकन के कलहास भासै भासमान है॥ मेरे जान मदन महोप सब जोति छिति ऊपर चढ़ायो कित करखा समान है। कैधौं तारागन मुकताहल के झूमकन चाँदनी न होय चारुताही को बितान है॥ २५२॥

विरहिनी।

हिलिमिलि जोखन में झाँकति झरोखन में हियरा में हिलकी दृगन अँसुवा रमै। कालिदास कहै आन कामिनी

कुरंगनैनी दामिनी ज्यों देखी जाति दसक दुआर में॥ जोन्ह में दहैगी दुख ऐसे क्यों सहैगी जैसे सीता पार सागर कै रघुबर बार में। नन्द के कुँअर कान्ह कैसे कहो पैहो जान छाड़ि वृषभान जू की कुँअरि कुआर में॥ २५३॥

देखिये पियारे कान्ह सरद सुधारे सुधा धाम उजियारे चौकी चामीकर दरसै। चोपैं चाँदी चमकैं चँदेवा गुहे मोतिन के झलकत झालरैं जुन्हाई ज्योति परसै॥ हीरा सी हँसन हीराहार सी लसन सोंधे सारी रहो सन कवि सोभ छवि सरसै। कोर कोर कला मुखचन्द तें सरस प्यारी बादला फरस रूप झलाझल बरसै॥ २५४॥

रासक्रीड़ा।

जमुना के पुलिन उजेरी निसि सरद की राका की छपाकर किरिन नभ चाल की। नन्द को लड़ैतो तहां गोपिका समूह लेके रची रासक्रीड़ा बजै बीना सुर ताल की॥ लहाछेह गतिन की कहो ना परत मोपै है है गोपिका के मध्य छवि नन्दलाल की। सोभा अभिराम अवलोकि कै अभिन्य कहै एकबार बोलो जै जै मदनगोपाल की॥२५५॥

खनक चुरोन की त्यों ठनक मृदंग की त्यों रुनुक झुनुक सुर नूपुर के जाल की। कहै पदमाकर त्यों बाँसुरी की धुनि मिलि रह्यो बँधि सरस सनाको एक ताल को॥ देखत बनत पै न कहत बनैरी कछू बिबिध बिलास यों हुलास

यह ख्याल को। चन्द छबिरास चाँदनी को परगास राधिका को मन्दहास रासमण्डल गोपाल को २५६ ॥

सरदनिसा में कान्ह बाँसुरी बजाई बेस जलथल व्योमचारी जीव प्रेम भरिगे। कहै ब्रजचन्द तजे ध्यानहूँ मुनीसन ने त्योंही मानिनोन के गुमान मद झरिगे॥ चकित सचीस रजनीसहू थकित भये तुरत स्वयम्भू मोहजाल बीच परिगे। सम्भुहू को भूली आधी अंग की बिराजी गौरि गौरिहू के गोद के गजानन बिसरिगे॥ २५७॥

भूल्यो गति मति चन्द चलत न एक पैंड़ प्रानप्यारे मुरली मधुर कलगान की। फूली कुसुमावलि बिविध नव कुञ्जन में सौरभ सुगन्धताई जात न बखान की॥ बाजत मृदंगताल झाँझ मुरचंग बीन उठत संगीत जहां अति गतितान की। आज रसरास में अनूप रूप दोऊ नचैं नन्दलाल लाड़िलो किसोरी बृषभान की॥ २५८॥

इति सरद—अथ हिमन्त।

अमल कमल दल लोचन ललित गति जरत समीर सीत भीत दोह दुख की। चन्द्रक न खायो जाय चन्दन न लायो जाय चन्द न निहारो जाय प्रकृति बपुख की॥ घट को घटत जात घटना घरीहू घरी छिन छिन छीन छबि रबि मुख सुख की। सीकर तुसार खेद सोहत हिमन्त रितु कैधौं केसोदास तिय पीतम बिमुख की॥ २५९॥

वायु वर्णन ।

बरसे तुसार बहै सीतल समीर नीर कम्पमान उर क्यौं हूँ धीर ना धरत है । राति ना सिराति सरसाति बिथा बिरह की मदन अराति जोर जोबन करत हैं ॥ सेनापति स्याम हौं अधीन हौं तिहारी सौंहँ मिलौ बिन मिले सीत पार ना सरत है । और की कहा है सविताहू सीत रितु जानि सीत के सताये धनरास में परत है ॥ २६० ॥

निवेदन ।

कामरी की खोही मोही गोपन की जाई बाल आई लाल पामरी रजाई परिहरि कै । कालिदास कहै पास भई है एकान्त कत लीजिये लपेट लपटाय अंक भरि कै ॥ रैन मे नगर घोस जन के बगर कीजै जगर मगर ब्रज भूमि केलि करि कै । पूस में कलाधर ये धन की न छोड़े संग तातें रंग कीजै हिये प्रेम ध्यान धरि कै ॥ २६१ ॥

उपचार—सवैया ।

सुन्दर मन्दिर अन्दर में बहु वन्दनवार बितान अडोलैं ।
हैं परदा मखतूलन के तिहि मूल बिछी गिलमै गुलगोलैं ॥
बल्लभ दीपत दीपित हैं मनि त्यों सुकसारिका के गन बोलैं ।
एरी हिमन्त में राधिका स्याम करैं बहुरंग उमंग कलोलैं ॥

कवित्त ।

अगर की धूप मृगमद की सुगन्ध बरबसन विसाल लाल अंग ढाकियतु है । कहै पदमाकर सुपौन को न गौन जहां ऐसे भौन उमगि उमंग छाकियतु है ॥ भोग औ सँयोग हित सुरति हिमन्तही में एते और सुखद सोहाये वाकियतु है । तान की तरंग तरुनापन तरनि तेज तेल तूल तरुनी तमोल ताकियतु है ॥ २६३ ॥

कन्दुक क्रीड़ा ।

उझकि झुकाय नेक लचकि लचाय लंक रसना कसकि दावि दसन अमोल जू । बदन विसाल श्रम सेद को ललित जाल डोलत कलित कच कुण्डल कपोल जू ॥ पण्डित प्रवीन हार दलत उरोज भार चञ्चल ह्वै अंचल को उघरि निचोल जू । धन्य धन्य गेंद तोहि गहते गुलाब कर खेलति नवेली करि केलि को कलोल जू ॥ २६४ ॥

विरहिनी यथा ।

परत तुसार भार काँपै हिय हार हार रजनी पहार दिन आगि जैसे फूस की । हार हार परदे परे हैं भरे तूलन के भीतर सँवारि धरे पलँग जलूस की ॥ राम कवि कहत छनत सीत अब तब आवरे सुजान तेरी छाती आबनूस की । जैसे तैसे कान्ह षटमास लों वितीत कखो निपट जवाल भई काल रैन पूस की ॥ २६५ ॥

इति हिमन्त—अथ सिसिर।

लोपि कसमीर तें चल्यो है दल साजि बीर धीर ना धरत गल गाजिबे को भीम है। सुन्न होत साँझही बजत दन्त आधीरात तीसरे पहर में दहल दै असीम है॥ कहै कवि गंग चौथे पहर सतावै आनि निपट निगोरो मुंहि जानि के अतीम है। बाढ़ी सीत संका काँपे उर ह्वै अटंका लघुसंका के लगे तें होत लंका की मुहीम है॥ २६६॥

सिसिर में ससि को सरूप पावै सविताहू घामहूँ में चाँदनी की दुति दमकति है। सेनापति सीतलता होति है सहस गुनी रजनी को झाँईं दिनहूँ में झमकति है॥ चाहत चकोर सर ओर दृग छोर करि चकवा की छाती तजि धीर धमकति है। चन्द के भरम मोह होत है कमोदिनि ससंवा संक पंकजिनी फूलि ना सकति है॥ २६७॥

वायु वर्णन।

नारी बिन होत नर नारी बिन होत नर राति सिय-राति उरू लाये पयोधर में। बेनी कवि सीतल समीर को सनाका सुनि सोवैं सब साँझही केवार दै सहर में॥ पच्छी पच्छ जोरे रहैं फूल फल थोरे रहैं पाला को प्रकास आस पास धराधर में। बसन लपेटे रहैं तऊ जानु फेटे रहैं सीत के ससेटे लोग लेटे रहैं घर में॥ २६८॥

उपचार यथा—सवैया।

राजत है इहि भांति बन्यो गृह बात न बाति जहां बिन काजैं। हैं हँसतो हँसतो चहुंघा अरु त्यों हँसती ब्रज-बाल बिराजैं॥ पानन को सनमान महा बहु तान तरंगन की धुनि गाजैं। वल्लभ राधिका स्याम तहां लखु सैसिर के सुख में अति भ्राजैं॥ २६९॥

कवित्त।

गुलगुली गिलमैं गलीचा हैं गुनीजन हैं चांदनी हैं चिक हैं चिराकन की माला हैं। कहै पदमाकर त्यों ग-जक गिजा हैं सजी सेज हैं सुराही हैं सुरा हैं और प्याला हैं॥ सिसिर के पाला को न व्यापत कसाला तिन्हें जिनके अधीन एते उदित मसाला हैं। तान तुक ताला हैं बिनोद के रसाला हैं सुबाला हैं दुसाला हैं बिसाला चित्रसाला हैं॥

मदन जन्मोत्सव।

खेलन को होरी चले प्रथमहिं स्यामा स्याम बोरे नव आंम फूली सरसो समन्त है। पंचमी बसन्त रति कन्त को जनमदिन फैली रितु कन्त जू की सुखमा अनन्त है॥ गिरधरदास करै कोकिला सरस सोर चारोंओर भौंरन की भोर दरसन्त है। फाग में बसन्त लाल पाग में बसन्त बाल राग में बसन्त बाग बाग में बसन्त है॥ २७१॥

चोरमिहीचनी क्रीड़ा—सवैया ।

चोर-मिहीचनी के मिसि मोहन मोहि ना पावै फिरै वसुधा ह्वै । देखे जु देव दुकूलन में मिलि फूलन में ह्वै रहै चहुंघा ह्वै । केसर चन्दन बन्दन में मिलि कुन्दन में तन मैन दुधां ह्वै । ह्वै मकरन्द रहै अरबिन्द में इन्दु के मन्दिर विन्दु-सुधा ह्वै ॥ २७२ ॥

होरी यथा—कवित्त ।

मच रहो फाग और सब सबही पै घालैं रंग औ गुलाल लाल ख्याल अवलोकौं मैं । मो पै तुही ठाकुर लगाये घात घूमे घेरि देखौं अब जात कित इत उत रोकौं मैं ॥ गहि लैहौं गाफिल कै छिन में छबीले छैल छेदि कै छली जू निज नैनन की नोकौं मैं । ओटैं ह्वै करत पिचकारिन की चोटैं कहा सौंहैं आव साँवरे सराहौं तब तोकौं मैं ॥२७३॥

फरस जरी को नगजूटित जटित मनि मण्डित बितान ब्रज फाग भोर भरिगो । कवि पजनेस क्रीट कुण्डल कपोल मुख मीड़त अबीर दृग धूँधर धुँधरिगो ॥ गोरी को गुलाल भरो कुँमकुँम लागो जागो बिथरि उरोजन अदा तें उन्नगरिगो । फोर तममण्डल ब्रह्मण्ड को अखण्ड मानो अरुन-उदोत हेमगिरि पै बगरिगो ॥ २७४ ॥

सवैया।

फाग रची वृषभान के द्वार पै गारिन ग्वारि चहूँदिसि कूकैं। आय जुरीं उपजावतीं जे मनमोहन के मन मैन की हूकैं॥ चातुर सम्भु कहावत पै ब्रजसुन्दरी सोहि रहीं जे भभूकैं। जानो न जाति मसाल औ बाल गुपाल गुलाल उड़ावत चूकैं *॥ २७४॥

इति होरी।

दोहा।

संग्रह कियो अजान यह रसग्रन्थन को सार।
छमिहौ चूक सुजान पुनि करिहौ लै परचार ॥२७५॥
सम्वत् गुन श्रुति अंक बिधु माधव पूरन इन्द।
यह मनोज की मञ्जरी बिकसी हेत मलिन्द॥ २७६॥

इति श्रीमनोजमञ्चर्य्यां द्वितीयकलिका समाप्ता।

---

* स्थानाभाव से होरी के उदाहरण यहां पर अधिक नहीं दिये गये, इसकी स्वतन्त्र पुस्तक "होरीगुलाल" नामक छप गई है जिसमें २०० उदाहरण देखनेही योग्य हैं।

ग्रन्थावली जिस्के द्वारा यह मञ्जरी सुगन्धित हुई है।

रसार्णव, रसप्रबोध, रसरत्नाकर, रसराज, रसिकमोहन, रसिकप्रिया, कविप्रिया, काव्यरसायन, काव्यनिर्णय, शृङ्गार-शिरोमणि, शृङ्गारलतिका सटीक, सुन्दरशृङ्गार, शृङ्गार-संग्रह, शिवसिंहसरोज, सुधासर, सार्ङ्गधरपद्धति, शब्दार्थ-भानु, व्यंग्यार्थकौमुदी, बिहारीसतसई, बरवैव्यंग्यबिलास, बलरामकथामृत, अङ्गरत्नाकर, अङ्गदर्पण, अनुरागबाग, दिग्विजयभूषण, बागबिलास, और जगतबिनोद इत्यादि। इन ग्रन्थों के अतिरिक्त कई उद्दण्ड कवियों से अपूर्व स्फुट कविता तथा मतभेद मिले हैं [जो किसी ग्रन्थ में नहीं दीखते] अतएव उक्त ग्रन्थकार तथा सहायक महाशयों को अनेकशः धन्यवाद है।

मनोजमंजरी ।

चतुर्थ कलिका ।

अर्थात्

नखसिख के अपूर्व कवित्तों का संग्रह ।

डुमरांवँ निवासी नकछेदी तिवारी उपनाम
अजान कवि द्वारा संग्रहीत ।



यह पुस्तक बनारस भारतजीवन प्रेस में मिलैगी ।

॥ काशी ॥

भारतजीवन यन्त्रालय में मुद्रित हुई ।

१८८९ ईस्वी ।

पहली बार १०००] [मूल्य ।)



मनोजमञ्जरी

मंगलाचरण सवैया।

छहरैं सिर पै छवि मोरपखा उनकी नथ के मुकुता थहरैं। फहरैं पियरो पट बेनी इतै उनकी चुनरी के झवा झहरैं॥ रस रंग भिरे अभिरे हैं तमाल दोऊ रस ख्याल चहैं लहरैं। नित ऐसे सनेह सों राधिकास्याम हमारे हिये में सदा ठहरैं॥ १॥

चरण वर्णन—कवित्त।

काम के तुनीर बिबि पल्लव पटीर कैधों बिद्रुम के पीठ पर बारिज बरन हैं। जानु जुग नाल फूले सुन्दर सरोज दोऊ अतिही सुदेश महा मन के हरन हैं॥ उन्नत अंगूठा नख आभा अंगुरीन पर चन्दकला आई कैधों राहु के डरन हैं। हौंहूं हेर हारी रीझे रसिकबिहारी हंस-गति अनुसारी कैधों प्यारी के चरन हैं॥ २॥

प्यारी के पगन पाई एती अरुनाई जामें सुगध बधून दिन सांझ करि भाख्यो है। बाग ह्वै कढ़त जाके सिसिर लतान हूं के किसलय तारिबे को मन अभिलाख्यो है॥ चिन्तामनि आये जाके चांदनी बिछौना पर लाल सख-

मल को बिछौना जनु भाख्यो है। चरन धरत जाके आं-
गन फ़टिक चन्द मानो लाल विद्रुम दलान बांधि राख्यो
है ॥ ३ ॥

कोमल अमलता की रंग भूमि कैधौं यह सोभियत
आंगन के सोभा के सदन को । अरुन दलनि पर कीनो
के तरनि कोप जील्यो कैधौं रजोगुन राजिव के गन को॥
पल पल प्रनय करत कैधौं केसोदास लागि रह्यो पूरवा-
नुराग पिय मन को। एरी वृषभान की दुलारी तेरे पाय
सोहैं जावक को रंग कै सोहाग सौतिजन को ॥ ४ ॥

बिम्ब में प्रवाल में न ईंगुर गुलाल में न चंपक र-
साल में न नैसुक निहारे में । दाड़िम प्रसून में न सून
धरा तून में न इन्द्र की बधून में न गुंजा अधिकारे में ॥
कुसुम सुरंग में न किंसुक सुरंग मै न जावक मजीठ कंज
पुंज वारि डारे में । राधा जू तिहारे पग अरुन समान
ताको हेरि हारे कविता न आवत हमारे में ॥ ५ ॥

सवैया ।

टेव गलीचा मोलायम ऊपर सूजनी चिक्कन चारु
बिछावन। तापर पुंज पर्यो परसून को घूठनलौं गरकाप
सोहावन ॥ तापर श्रीवृषभानकुमारि महा सुकुमारि चलै
हस आवन । आली डरै उमड़ै औ अड़ै कि गड़ै ना गु-
लाव की पांखुरी पावन ॥ ६ ॥

पादांगुली वर्णन—कवित्त ।

अरुन कमल पग पांखुरी की पांति लसै सरस सघन सोभा मन के हरन की। दीरघ न लघुताई पातरी सोहावती है देखे दुति होत जात बिद्रुम वरन की ॥ नख की निकाई नीकी आरसी सी सोहति है जामे देखी जाति सोभा सौति के सरन की । भरमी सुकबि कहि आवति न मेरी मति पांगुरी भई है लखि आंगुरी चरन की ॥ ७ ॥

पद नख ।

गुरुजन हूं में राधे एकै तक ताक करि प्रेम परिपाक कै न कबहू डगी रहै । 'गुरुदत्त' भूपर उदोत जग मग जोति कबिता चकोरन की ओरन जगी रहै ॥ भूलि सुधि पलकी अनूप अंशुजालन मै रूपही के लालच मैं पुलक पगी रहै । तेरे पदनख शशिमण्डल मै बंक छबि सांवरे की नजर कलंक सी लगी रहै ॥ ८ ॥

बिछिया वर्णन ।

गोरी गोरी आंगुरीन ऊपर अनूप छबि देखिये दिनेस दुति तनक तनक की। बीच बीच बीजन के उठे हैं बलूला कैधों रूप की नदी में रुचि राजति बनक की ॥ मोहनी सी सबै मनमोहन के मोहिवे को सूधे चितए तें सुधि

रहै ना सनक की । करत कलोलैं जब लाला संग डोलैं यह झनक मनक बोलैं बिछिया कनक की ॥ ९ ॥

सवैया ।

चंपकली दलहू तें भली पद अंगुली बालकी रूप रसे हैं। सोभ सुदेस लसैं नख यों जनु पीतम के दृग देव बसे हैं ॥ बांक अनोट बनी बिछियानि बिभूषित जोति जराय गसे हैं । केसव सोम सरोजन ऊपर कोपि मनो तन चान कसे हैं ॥ १० ॥

गुल्फ वर्णन कबित्त ।

चरन कमल करि हाटक की सोभा देत पूरी सनि मानो लट नागिनी उलफ की । रंभातरु उलट कपूर पूर राखिवे की कोठी सी जुगल काम कामके कुलफ की ॥ साजत सुदेश गांठ गिरी है दिनेस कैधों रेसम रसे की रूप भूप के सुलफ की । एड़िन सों आड़ राजे पायन दुहूं बिराजे अति छवि छाजे लाल गोरी के गुलफ की ॥११॥

जेहरि बर्णन ।

कैधौं रति पति रची गति गजराज पै ये हेम की अँ-वारी-समाधान सो विचारि के । कैधों तनमंदिर में आभा चढ़िवे की सीढ़ी कीनी काम कारीगर कंचन सुढ़ारि के ॥ छूरति बनी है तेरे पगसे झमक सोभा कहां लों बखानों कहि जात ना उचारि के । जेहरि सकल जगमोहन कहा-वत हैं तेहरि तो रीझे हेरी जेहरि निहार के ॥ १२ ॥

कैधों रति रानी उर हार पीत फूलन को कैधों कदली के अंग कंचन की वेलि है। कैधों कमला के गेह बांधी अति सोभित है पीतमति तोरन छठत छबि रेल है॥ सूरति सुकबि छबि कहा लौं बखानों नेक देखत हियेरी मन सबको सकेल है। तेरे पाय पर ये न पायजेब आली कैधों गति गजराज गरै हेम की हसेल है॥१३॥

जंघ वर्णन।

कोमल अमलमुखी तेरे ये जुगल जानु मेरे वलवीर जू के मनको हरत हैं। सौरभ सुहाय सुभरंभा को सदन अरु केसव करभहू की सोभा निदरत हैं॥ कोटि रतिराज सिरताज ब्रजराज की सौं देखि २ गजराज लाजनि मरत हैं। मोच २ मद रुचि सकल सकोच सोच सुधि आए सुंडन की कुंडली करत हैं॥ १४॥

मोहन के मन अवलंब यह आली लखि चित्र में लिखे न जात चकित चितेरे हैं। कंचन के खंभन के दंभ दूर करिवे कों कीने करतार ऐसे कहूं नाहुं हेरे हैं॥ रूपही की ईंडुरी है पींडुरी दिनेस जामें लघु न विसाल लाल चाहि भए चेरे हैं। सूख गई सौति सब सोचन सकोचन तें सोच मदमोचन जुगल जानु तेरे हैं॥ १५॥

रतिहू की मति पतिहू की ललचात अति मैनहू के नैन देखि लालच भरति है। सुन्दर सरस रस सुभ सौरभ

सहज सोहै करकस जानि करी कर निदरति है ॥ सुभित सुभग कोऊ चोप घनकर तेरे जघन जुगल मनि कंठ नी हरति है। भाय के उतारी कैधों सोभा सांचे ढारी छवि कनक के कदली की बदली परति है ॥ १६ ॥

रूप रस आसन के काम के सिंघासन हैं केलिकला कौतुक की जीत मन आनिये ॥ सौतिन को गरब गयो है देखि २ जिन्हे कदली के खंभ दोऊ उलटे प्रमानिये ॥ भरमी सुकबि गज सुंड सकुचन लागी सौगुनी करभहू तें सोभा सरसानिये। सुघर सुढार ये संवारी हैं बिरंचि कैधौं जंघ अलबेली के अनूप जुग जानिये ॥ १७ ॥

नितम्ब वर्णन ।

अंगनि में कैधौं जंघ अजब अनंग रचे गांठ कुचगिर हित हेत मद चालके । कटि रथ चक्र की अकृति में सु पाइयत केलि कला बैठक ये रसिक रसाल के ॥ बिपरीत मंडित जघन खंभ निम्ब कैधौं लाह को गिरद गादी मैन महिपाल के। अमृत सों सानी कैधौं सोने की सरस पिंडी सोहत हैं सुन्दर सुभग श्रोनी बाल के ॥ १८ ॥

लाले रंगवारे घेरवारे घाघरे सो घिरे नेक न उघारे भारे सुखमा चमू लहै । जगजीत वारे पति प्रीति रीति वारे कैधौं काम के नगारे उलटारे झपे झूल हैं ॥ उपमा

अतूल पाय छोड़ि मति भूल बैन मनसा कहे तें करे कविन कबूल हैं। निरखे नितम्ब नीके वा नितम्बिनी के मानो जंघ जुग कदली के थंभ थूल मूल हैं॥ १९॥

चहूँओर चित चोर चाक चक्र चक्रमनि सुन्दर सुदरसन दरसन हीने हैं। दिति सुख सुखनि घटायवेको सुख रुख सुरनि बढ़ायवेको केसव प्रवीने हैं। सबही के मननि हरनि करि हरिहू के मन मथिवे को मनमथ हाथ लीने हैं। रुचि सुचि सकुचि सकेलि कै तरुनि तेरे काह्न नए चतुर नितम्ब चक्र कीने हैं॥ २०॥

कटि वर्णन।

तारसो तपासो वार लींक सी लुकंजन सी जादू कैसो छंद कहिवे में छलियत है। चितै ना परत चौंकि जात है चितौन जहां नैनन को गति को गुमान दलियत है॥ पगन धरत धरकत हियो बलभद्र डगन धरत डग डग हलियत है। कुच कुचभार चीर हीरन के भारी भार ऐवे खीने लाँक पै निसांक चलियत है॥ २१॥

सुमन में बास जैसे सुमन लैं आवे कैसे नाहीं कहू होत नाहीं हां कहे चहत है। सुरसरि सूर जामें सरस्वति सोहै जैसे वेद के बचन बांचे सांचे उचरत है॥ परिवा के इन्दु की कला ज्यों बसे अम्बरमें परवाको अच्छ परतच्छ ना लहत है। जैसे अनुमान के प्रमान पर ब्रह्म जैसे कामिनी कटि कवि मीरन कहत है॥ २२॥

कोऊ कहै बार सी सेवार सी कहत कोऊ कोऊ कं-जतार सी बतावत निसंक है। मेरे जान सिरिफ लोनाई की लपेट लागी ताही की लहन औ लचक होत बंक है। तोखनिधि जो पै वेषधार को बहम बाढ़े तो पै परतच्छ को प्रमान कौन रंक है। जैसे भूमि अंबर के मध्य में न खंभ कोऊ तैसे लोललोचनी के अंक में न लंक है॥ २३॥

दोहा।

सुनियत कटि सुच्छम निपट निकट न देखत नैन।
देह भये यों जानिये ज्यों रसना में बैन॥ २४॥
सुच्छम कटि वा बाल की कहौं कवन परकार।
जाके ओर चितौतहीं परत दृगन में बार॥ २५॥

किंकिणी वर्णन—कवित्त।

कैधौं छुद्र घंटिका रतन की ललित संधु राजत झ-लझलात राधिका के धर पर। बावरी मढ़ी के पर किं-किनी कनक की कलस तर लसै कैधौं रूप रूप घर पर॥ चलत हलत कैधौं पौन ते झुलत तातें बोल २ उचिती हैं आय आप अर पर। पींजरे जराऊ टगीं बुलबुल जल मानो झरलाय राखी है निकट नाभी सर पर॥ २५॥

रागन की मंडली रची है कामदेव कैधौं रागिनी समेत रचना है चित चोरी की। कैधौं नाभी कूप पे र-

छूट धरी रूप भरी ढरी अनढरी है बिचित्र भांति भोरी की ॥ कैधौं है दिनेस अलिवेस कोऊ मोहनी को मोहन को मोहे मन वैस धुनि थोरी की। कैधौं वर बाजत बिराजत नितम्ब ढिग छाजति छबीली छुद्रघंटिका किसोरी की ॥ २६ ॥

नाभि वर्णन ।

सुख की नदी में कैधौं परत गंभीर भौंर धरा को लखत पिय लोचन अरथ को। कैधौं वरखा में रोम राजी रहै पन्नग की कैधौं खानि खुली है जवाहिर के गथ की॥ घासीराम कैधौं सौति लखन की भाकसीसी मान भई खिरकी उरज गढ़ पथ की। एरी मेरी बीर तेरी नाभी रसभरी कैधौं दौत करता की कै मथानी मनमथ की ॥२७॥

राजत गंभीर रोमराजी बन तीर मन तीर पहुंचे तें भूले त्रिवली डवर सें। भूर भीर भारी छवि छलक सिंगार पानी कालिदास देखत भंवर क्यौंन भरमें ॥ जबी नेकही में डूबि गई लरिकाई तामे रही ये छपाय सखी बाहिर नगर में। चंचल गोपाल खेलै गोकुल की गली बीच बड़ी करवर तेरे नाभी सरवर में ॥ २८ ॥

रोमराजी वर्णन ।

कैधौं यह पान पै बसीकर को मंत्र लिख्यो देखि छवि मोहै कोऊ बिद्या पंचसर की। हृदय सरोवर सिंगार

जल भर्यो कैधौं उमड़ि चल्यो है नाभि कुंडिका गह्वर की। छोटे २ आखरन अवला लिखाए एतो आपनी सवलताई सूरत समर की। जिन्हें देखे नैनन की गति मति भाजी यह तेरी रोमराजी कैधौं बाजी बाजीगर की॥२६॥

जोबन सरोवर में अलक झलक कैधौं नेह नववेली नाभि कूपतें बिराजो है। खंजन नयन हरि बांधिवे की वह्री कैधौं राजत सुदेस महावाकी छवि छाजी है॥ उदर अभूत निकसत स्याम सूत सुख महा अभिराम काम कीनी किधौं बाजी है। राखी अवरेख हिये मोहनी दिनेस देखि रोम २ राजी तातें नाम रोमराजी है॥३०॥

त्रिवली वर्णन।

कैधौं मैन भूपति के रथ के सुचक्र चले तिनहीं की लीकैं उर भूपै जान तौन है। कैधौं मन ठग की ये गली है भली ठगवे की कैधौं रुप नदी ह्वै तिधारा कियो गौन है॥ ऐसी छवि देखि एरी मोहे मनमोहन जू तातें मैंहूं जानी येई मोहिवे को भौन है। एक बली सबही को बस करि राखत है त्रिबली जो करै बस अचरज कौन है॥३१॥

अमल अनंग के अनन्द की उदित भूमि जीति पिय वाजी दगा बाजी सी पसारी है। कनक के पान से उदर में उदित दुति त्रिवली तिहारी में तिहारी मति हारी है॥ रूप गुन चातुरी सो सुरनर नागिन को जीते

मनि कंठ विधि सोहै रेखसारी है। सौति सुख उतरे को पिय प्रेम चढ़िवे को कुन्दन की प्यारी पैरकारी सी संवारी है ॥ ३२ ॥

उदर वर्णन ।

कोमल अमल दल कमल नवल कैधौं कीनी है बि-रंचि सब छवि को सहेट है। उदित प्रकार की दुति आन छाई कैधौं चमकत चारु खात लोचन रपेट है ॥ सुन्दर थली है भली मदन बिराजिवे को जाकी सम कौने होत उपमा तरेट है । चीकने परम मखमल तें नरम ऐसो प्यारी जू को पेट लेत मनको लपेट है ॥ ३३ ॥

कोमल बिमल काम भूप की सुरंग भूमि पान को सो दल चल दल कोसो पात है। मोहन के मन की म-नोरथ की मोहनी कै सौति के सताइबे को सोभा सर-सात है ॥ नाभि रस कूप की सुघाट मिलि सीढ़ी डाली टरत न दीठ नीठ २ दरसात है । भरमी सुकवि रोम राजी की बिराजी छवि उदर अनूप ऐसो सुभग सोहात है ॥ ३४ ॥

कुच वर्णन ।

कैधौं रतिजंग के सुभट जुगराज सोहैं कंचुकी सुरंग कसे उन्नत अमाने हैं। दृग कमनैत के कटाच्छ सर छा-ड़िबे को मानो ये विरंचि रचे रुचिर निसाने हैं ॥ कैधौं

है कालिन्दी कूल कोक सुभ सोभ कीधौं उरज उतंग लखि कान्ह मन माने हैं। जोबन महीप अंग आगम सुगम जानि मदन फरास कैधौं तंबू जुग ताने हैं ॥ ३५ ॥

मंगल कलस भरे मकरन्द बलिभद्र कैधौं सम दुन्दुभी सहोदर समर के। कैधौं रहे संकि सूरसुता के सरन सोचि चकवा के सावक सताए ससि कर के ॥ मैन के मवास मन मोहिबे को मोदक कै श्रीफल विमल हैं कि फल सोभा तर के। ओपे बिन कामिनी पयोधर की आवै ओप ऐपन सो मांड़े आड़े पिय धौरहर के ॥३६॥

कैसे रतिरानी के सिंधोरा कवि श्रीपति जू जैसे कलधौत के सरोरुह सवारे हैं। कैसे कलधौत के सरोरुह संवारे कहि जैसे रूप नट के बटा से छवि धारे हैं ॥ कैसे रूप नट के वटा से छवि धारे कहि जैसे काम भूपति के उलटे नगारे हैं। कैसे काम भूपति के उलटे नगारे भारे जैसे प्रानप्यारी ऊंचे उरज तिहारे हैं ॥३७॥

कुण्डलिया।

कैधौं कुच कंदुक किधौं कुम्भ कलस कमनीय। काम कंज कूजि किधौं कोक सोक समनीय ॥ कोक सोक समनीय हीय सुख श्रीफल कैसे। संपुट संभु सुमेर हेम गुम्बज गोले से। औंधे ताल अछिद्र धरे विवि दुन्दुभि हैधौं। बरने कवि रसरंग धौरहर माधो कैधौं ॥ ३८ ॥

चले न भक बक बुद्धि को लखि उर उरज उतान ।
ताजगंज मीनार को कीनो पस्त गुमान ॥ कीनो पस्त गुमान आन को कौन चलावै। सैल शृङ्ग उत्तंग दंग ह्वै कै रहि जावै ॥ खरे खंभ आकास सहारे कै हैं अलले। ऊंचे निरखि उरोजन अचले मुनि मन मचले ॥ ३९ ॥

कुच लालिमा बर्णन ।

सरद के घनमें ज्यों अरून उदोत दुति सतोगुन माझ रूप राजस के छल के। फटिक पहारन में सन्ध्या सी झलक रही सुरसरि माह सोभा सारद के जल के ॥ झीनी सेत कंचुकी में अरुन उरोज आभा जाहि देखि पूखी मन लालन को ललकैं ॥ कैधौं हास अन्तर अनूप अनुराग राजे कैधौं सेत सारी में कुसुंभ रंग झलकै ॥ ४० ॥

कैधौं उदयाचल उदोत राका जोवन को अस्ता चस्त कैधौं सिसुताई भानुगति है। अंतर को राग किधौं बाहर प्रगट भयो कैधौं सुख राग की झलक झलकति है ॥ कैधौं बंद वंदन की बंदन गयन्द कुंभ कैधौं उभै भाल राजे सिवकी सकति है । कैधौं बलभद्र नामी मूरि है सजीवन की ऐसी कुच अग्रता की लालिमा लसति है ॥४१॥

कुच स्यामता वर्णन ।

संकर के सुख में हलाहल को डरी मानो करि कुंभ मधु हेत भौंर लपटानो है। सोने के बटा में स्याम मनि

की जरी है मानो जोवन बुरज पै सिंगार कैसो घानो है। नील कौल पांखुरी को रंचक सुभग भाग सुख चकवाल के सनेह करि भानो है। तेरे कुच अग्र ऐसी स्यामता लसति नीकी सिखर सुमेरु पयमन को निसानो है॥४२॥

अवलंब अलिन नलिनहीं के कोरिका की अमी कुंभ ऊपर अनंग छाप दीनी है। कैधों सितकंठ कंठ राजति गरल दुति कनक गिरिन मनि मंजरी नवीनी है॥ सिसुता की तनुता तनक तन धरि तन तामस की रीति तें तरुनि तेज कीनी है। स्यामा के अनूप कुच अग्रन की स्यामताई कैधों बलभद्र रसराज छबि छीनी है॥ ४३॥

कैधों हेम सैल शृंग जुग पै सिसिटि राजे घन की घटा पाय पटली सुरोज की। कैधों पोखराज के सोहाग के सिंधोरे नग नीलम जटित सोभा घति चितचोज की॥ श्रीकवि धीं मंजुल मलिन्द मत्त सोए आन पलिका बिछाय मृदु कलिका सरोज की। दीरघ दृगी के उच्च कुच पै चुचुक कैधों कैधों सुधाकुम्भ मुख मोहर मनोज की॥४४॥

कैधों गिरिराज के सोहाये विवि शृंग कैधों सुधा के कलस भरे कांचन के रंग के। कैधों संभुराज फूले श्रीफल ललित कैधों ऐंठे मद गलित सिपाही रति जंग के॥ कैधों प्यारी कुचन पै स्यामता लसत कैधों मरकत मनिके कलस ऊंचे शृंग के। कैधों कंज मंजु पै मधुप आय अरे कैधों सर आर गड़े भटू लटू ह्वै अनंग के॥ ४५॥

कंचुकीयुत कुच वर्णन।

कैधों सिसुताई के पयाने सामियाने ताने सुन्दर सुधार पट कुटिका है लाज की। कौकसाला रूप की कि काम ही की सुखसाला बलभद्र कोमल कुलह बाज काम की। मोहनी की डारी है अंध्यारी मनमथ मानो ऐसिही विराजै धौं जोबन गजराज की। गोरे २ गोल कुच तेरे नील कंचुकी में पहिरे सिलह रति रन के समाज की ॥ ४६ ॥

कोऊ कहै लाजन तें कंचुकी में कुच मूदे कोऊ कहै बांधि राखे बट्टा है मलय के। कोऊ कहै कुंभिन के कुंभ पै अंध्यारी डारी संभुराज भारी जे अवधि हैं बलय के॥ कंचन के संपुटन मूदे हर कहै कोऊ पहिरे सिलाह कैधौं भट हैं दलय के। जैसे शिव तीजो भाल नैन राख्यो मेरे जान तैसे काम मूदे विधि लोचन प्रलय के ॥ ४७ ॥

आई जल केलि के नवेली रति रंग भरी अंग २ भूखन अनंग रंग रस तें। कहत किसोर सुख धोय पोंछि आंचर सों ठाढ़ी भई तीर पै छबीली उर जस तें। भुज उलटाय कै कँधा पर ह्वै आंगीबंद गहि रहि गई देखि लाल लाज बस तें। सनमुख सबल बिलोकि रनधीर मानो खैंचत सुभट बीर तीर तरकस तें ॥ ४८ ॥

प्यारी सुकुमारी ताके उरज बढ़त आवें सुख सरसावें सुकुमार जलजत्ता के। कंचुकी कसत तैसी सुखमा लसत तातें कहै कवि तोष घनस्याम मनरत्ता के ॥ नीके हैं बरोरू बड़े नाहक सरोरू तन अतिही कठोर हैं बंधैया काम कत्ता के। मिसुता गनीम के निकारिवे को काज आए टोपीदार एलची सुजोवन चकत्ता के ॥ ४९ ॥

सिसकत सांसे भरै वीधे बांह पासे भरै रस भरे रसिक रसीली चित चोज की । कहै पद्माकर सु दोज बिपरीत मांह महमही मोजे मंजु मंजुल मनोज की ॥ रंग रस भीनो झीनी कंचुकी सबुज फोरि निकरि लसी है अनी जुगल उरोज की । मानो रूप सागर में उन्नत अनोखी स्वच्छ आई कढ़ि काई फोरि कलिका सरोज की ॥

दोहा ।

नील कंचुकी में लसत यों तिय कुच की छांह ।
मानो केसर रँग भरे मरकत सीसी मांह ॥ ५१ ॥
बिधुवदनी तुव कुचन की पाय कनक सी जोति ।
रँगी सुरंगी कंचुकी नारंगी सी होति ॥ ५२ ॥
जाली अंगिया बीच यों चमक कुचन की होति ।
झिझिया के तुम्बन लसे ज्यों दीपक की जोति ॥ ५३ ॥

भुज वर्णन—कवित्त ।

केसोदास गोरे गोरे गोल काम सूल हर भामिनी के भुज मूल भाव से उतारे हैं । सोभा सुख बरसत माखन

से परसत दरसत कंचन से कठिन सुधारे हैं । वलयव-
लित बाहु देखि रीझे हरि ताह मानो मन पासिवे को
पासी यों बिचारे हैं । मलिन मृनाल मुख पंक में दुराए
दुख देख्यो जाय कातिन में छेद करि डारे हैं ॥ ५४ ॥

तन तरुवर की उभय साखा बलिभद्र सुन्दर सुढार
अति गोल समतूल हैं । सांचे भरि ढारे विधि दामिनी के
दोऊ टूक दमकत दुति नाहीं दुरत दुकूल हैं ॥ सुख के
सरोवर के पोखे हैं मृनाल मानो फूले कर अग्र कोकनद
कैसे फूल हैं । काम कुन्द हेरे भाय कुन्दन कनक दंड
कैधों भोरी भामिनी के गोरे भुजमूल हैं ॥ ५५ ॥

कर वर्णन ।

पावै जो परस ताको होत है सरस भाग पावन द-
रस जाको जानो अनुसार है । रमनीय वेखन की लीला
धर पेखन की ललित सुरेखन की प्रगटी पसार है । वहि
क्रम बूढ़ी करि चिन्ता चित गूढ़ी करि रचनाऊँ ढूंढ़ी
विधि बिविध बिचार है । कथन कथेरी लोक चौदहो
मथेरी पर तेरी या हथेरी की न पाई अनुहार है ॥ ५६ ॥

नूतन्ह के नूतन सरस सुकुमार पात जात हैं लजात
जे वे निपट उपर के । को सम की को सम करत किस
लय कहा होत ना बराबरी नवीन पात बर के ॥ कहै
संभुराज दूजो सम को न देख्यो और पेखि २ रेखा

सुललित प्यारी कर कै। जावक सरस विधि पारसी ह-
रफ लिखे कंज के दलन में प्रबंध पंचसर के ॥ ५७ ॥

लाल करतल कर गहि कै नवेली के सु देखति सहेली
कोऊ परम सयानी है। कालिदास कौन सकै सुजस ब-
खानि कर इन्दिरा की खानि सुतौ हम पहचानी है ॥
पति को न गेह लिख्यो स्याम सो सनेह सुनि सखी के
वचन विधुमुखी मुसुकानी है। एरी ठकुराइन सुतेरी या
हथेरी वीच सौति चेरी लिखी सब रेखन तें जानी है ॥

देखे अन देखे हरि तजत न अंक तेरो बिमल मयंक-
मुखी मोहे कोटि निवलों। कालिदास रीझ २ करत
सराह प्यारी क्यों न यह छबि लागे बैरिन को बिख लों॥
लाल कुरबिन्द अरबिन्द इन्द्रबधू वारों विद्रुम ललाई
नीचे करि राखी इख लों। तेरे करनख की बनक को
बिलोकि उठे सौतिन को अनख की आग नख सिख लों॥

ओज करि आपनो पयोज पृथिवी पै रोज रोज ही
सरोजन को ओज हरिबो करै। बारि निधि बसि कै क-
पाली सीस लसि कै प्रदच्छिना सुमेर आस पास भरिबो
करै। छोटो २ ह्वै कै वढ़े खोड़स कला लों फेरि नीके
बुन्द अमल अमीके झरिबो करै। वृन्दावन चन्द नख चन्द
समता के हेत मन्द यह चन्द कोटि छन्द करिबो करै॥

पीठ वर्णन।

कैधों यह केस भेस रस को नरेस वाके देस की सु-
देस भूमि सोभा रस भीनी है। कैधों यह मदन की पाटी
मंत्र पढ़िबे की सूरति सुकवि बनी हाटक नवीनी है॥
जोबन के मन्दिर की भीति है सुढार कैधों रान रति राज
रुचि सो बनाय कीनी है। एरी बीर तेरी यह पीठ नेक
दीठ परी देखतहीं ईठ सबही को पीठ दीनी है॥ ६१॥

जोबन महीपति के सेवक मदन तोहि तिय तन ब-
सिबे को जगह बनाई है। चिन्तामनि जानत सो नन्द
के कुमार जातें भई अंग अंग में अनंग की दोहाई है॥
रूप की सँवारी चारु राधिका की पीठ पत्र तातें बेनी
बर बरनावली लिखाई है। दुहूं ओर वाके ढिग पारस
रहत तातें मेरे जान सोने की सोहाई दरसाई है॥६२॥

सांचे तें निकारी भरि प्यारी की ललित पीठ नीठ
बिध ईठ की सुधार कर गढ़ी है। कैधों तोख पुरट की
पाटी है अनूप जामें परम प्रवीनताई पंचबान पढ़ी है॥
तैसी छबि बरनी न जात सुख करनी के हरनी नयन
पर जेती छबि बढ़ी है। तैसी सुख देनी बेनी भली है
रली सनेह मानो नाग लली कदली के दल चढ़ी है॥६३॥

दोहा।

इक तरु दुइ दल होत हैं यह अचरज की बात।
दुइ तरु कदली जंघ में पीठ एकही पात॥ ६४॥

जोरि रूप सुवरन रची बिधि रचि पचि तुव पीठ ।
कीन्हीं रखवारी तहां वेनी व्याली दीठ ॥ ६५ ॥
नहीं पनारी पीठ तुव कीन्ही दीठ बिचार ।
धसक गई यह भारतें वेनी के सुकुमार ॥ ६६ ॥

ग्रीवा वर्णन ।

सुख को सदन देखि मदन मुदित होत वारिज बरन सुभनाल सो बिसेखिये । चारो रीति नवो रस हाव भाव की प्रतीत छविसों लपेटि हेम पिंडी के उरेखिये ॥ कैधों मनि कंठ तीन लोक की तरुनि जीत दुति तेही भांति २ तीनों रेख लेखिये । कनक के कंबु कमनीय ताके अम्बु भेटे आनद की सीव कै अमोल ग्रीव देखिये ॥ ६७ ॥

सुंदर सुडौल आछी भांति सों सुधारि करी हरिकार कंबु सोभा वारि फेरि डारिये । कोकिल औ पारावत करि न सकत सरि जग में न और उपमान सो बिचारिये ॥ सोभा कोसी सींव नूर कहि बरनत भेव रातो दिन पीतम रहत चित धारिये । जाके कंठ मध्य पीक दुति ऐसी सो हियत जैसे सीसी माह रंग जावक को ढारिये ॥ ६८ ॥

तेरे सुख गावत गुपाल जू के गुन गन सारदाहू हरति है उर में उरेखिये । जिनके वे मंडन फटिक मालहार हास हिये परतेई वे सिंगार करि लेखिये ॥ तेरे नेक बोल साती सुर को सोहाग कोऊ मीठे राग सुनि रीझ२

करि तेखिये। तोरि डारी तीनों तांति मेरे जानबीन की तैं प्यारी तेरे गरमै वे तीनों रेख रेखिये॥ ७६ ॥

सुरनर प्राक्षत कवित्त रीत आरभटी सात्विकी सुभारती की भारती यों भोरी की। कैधों कैसो दास कलगानता सुजानता निसंकता सों वचन बिचित्रता की सोरी की। बीना वेनु पिक सुर सोभाको निरेख सचि मन वच क्रमन कि पिय मन चोरी की। अम्बुसाई कीसों मोहै अम्बिकाज देखि २ अम्बुज नयन कंबु ग्रीव गोल गोरी की॥ ७० ॥

सवैया ।

किधौं रूप सरोवर में तें कढ्यो लसै कंबु भयो सुर सात को है। किधों सांवरे जू गुन रावरे के या कपोत फंद्यो बड़ी जात को है॥ सुमिरेस जू कैधों सुकोकिला को सुर साधि धर्यो बिधि हात को है। वर कंठ में गोरी के कंठा लसै सु कतारन तारन कांत को है॥ ७१ ॥

चिबुक वर्णन ।

कानक बरन कोकनद के बरन और झलकत झांईं तामे बसन रदन की। कीनी चतुरानन चतुर ऐसी रचि पचि अलप सी चौकी चारु आसन मदन की॥ अंगुल से बान उपमान की अवधि सब सुमिल सुपान मानो पिय के सदन की। सुन्दर सुढार है चिबुक नव नायिका की मानो बलभद्र बादसाही है बदन की॥ ७२ ॥

कैधों अरविन्द मकरन्द रस पान माते ढिग अलि-पार रहै कैधों अरसाय कै । कैधों पिय प्रेम को पिऊष भरी नारंगी में ढेंटी स्याम सुमन निसान सी बनाय कै॥ कैधों है सिंगार रस मगन मनोज मन लालच ललक मनि कंठ लाग्यो आय कै । सौतिन के बिरह सोहाग सोहै गोदना के लेत चित चारु तेरो चिबुक चोराय कै ॥

चिबुक तिल वर्णन ।

कंचन के खाने में जटित नीलमनि कैधों संपुट में सुच्छद सरूप स्याम लोना है। सुमुख सुखेत रस बीज बोई होना कैधों केलि समै काम जू को खुलत खिलौना है ॥ राम कहै तिय मन मोहन के मोहिवे को कठिन कुहू में पढ़ि राख्यो ठीक टोना है। कमल कली पै चढ़ि बैठ्यो अलि छौना किधौं कामिनी तिहारे चारु चिवुक ढि-ठौना है ॥ ७४ ॥

सोभन सिंगार रस की सी छीट सोहै फोंक काम सर की सी कही जुगतनि जोरि जोरि । राहु कैसो र-हन रह्यो है छुभि चन्द्र माहिं तमी को सोहाग किधौं डारो त्रन तोरि तोरि । चतुर बिहारी जू के चित सो बिहूटि रह्यो चितये तें केसोदास लेत चित चोरि चोरि । तमक चिवुक तिल तेरे पर मेरी सखी वारीं डारि तरुनी तिलोत्तमा सी कोरि कोरि । ७५ ॥

सवैया ।

काहू कही की गुलाब कली पर भौंर को चेटुआ आनि अर्यो है । सोन डवा पै जवाहिरी मैन मनो नग नीलम चारु जर्यो है ॥ प्यारी के ठोढ़ी बिराजि रह्यो तिल देखि विचार यहै मैं कर्यो है । भौंहें बनावत मानो बिरंचि के लेखनी तें मसि बिन्दु भर्यो है ॥ ७६ ॥

आरसी अंकुर नोक सिंगार सी बीच रही परकार निसानी । के बिरहीन के हाय को दाग अहै बर नील-कनी अनुमानी ॥ बीज के बुन्द में है छल छन्द कलिन्दजा बुन्द लसै दरसानी । नेह मई तिल ठोढ़ी के गाड़ में पेरि दई मनो प्रेम की बानी ॥ ७७ ॥

प्यारी के ठोढ़ी को बिन्दु दिनेस किधौं बिसराय गो-बिन्द के जी को । चारु चुभ्यो कनिका मनिनील को कैधौं जमाव जम्यो रजनी को ॥ कैधौं अनंग सिंगार को रंग लिख्यो बर मंत्र बसीकर पी को । फूले सरोज में भौंरी बसी किधौं फूल ससी में लग्यो अरसी को ॥ ७८ ॥

दोहा ।

गोरे मुख पै तिल लसत मैं जान्यौं यह हेत ।
रूप खजाने को मनो हबसी चौकी देत ॥ ७९ ॥
चिबुक कूप रसरी अलक तिल सुचरस दृग बैल ।
बारी बार सिंगार की सींचत मनमथ छैल ॥ ८० ॥

अधर वर्णन ।

अमल अरुन अरविन्द बिम्ब आभा दैत सहज सुवास रीझै माधुरी समर है । सौति को तिवारी पिय मति मतवारी होत पूजे तब बारी सो संवारी सोभा धर है ॥ मनिकंठ सुच्छम सुरेख है बँधूक फूल बसनी के चिन्ह पिय लोचन डगर हैं । कैधौं लीक सी सुगति दीने बिधु कोक कला सुन्दरी सुलोचनी के सोभित अधर हैं ॥ ८१ ॥

जाकी मधुराई लै सुधाई सुरलोक रूपी जख को छिप्यो है री पिजष अधरनि में । देखतहीं विद्रुम भये हैं जड़ रूप अरु विम्ब मतिहीन भये जिनके डरनि में ॥ पान अंग पातरो भयो है तबही तें पेखि एरी ब्रजनारी अब रहैं को सरनि में । सूरति सुक तिनैं सकै को बरनि प्यारी तेरे अधरन की न उपमा धरनि में ॥ ८२ ॥

दोहा ।

लिखन चहत रसलीन जब तुव अधरन की बात ।
लेखनि की बिवि जीभ वंधि मधुराई तें जात ॥ ८३ ॥

जो भा अधरन तरुनि के सोभा धरत न कोय ।
याही विधि इनको पर्यो नाम अधर विधि जोय ॥ ८४ ॥

तेस दुतिया दुहुन मिलि एक रूप निज ठानि ।
भोर सांझ गहि अरुनई भये अधर तुव आनि ॥ ८५ ॥

लाल बाल के अधर ढिग लाल बात जनि चाल ।
लाल बात सुनि श्रुति मुकुत करत बात में लाल ॥ ८६ ॥

दसन वर्णन।

सुच्छम सुवेष सूधी सुमन बतीसी मानो लच्छन बतीसह्न की मूरति विसेखिये। राती है रतीक रुचि सेत सब कैधों ससि मण्डल में सुरन की सभा अवरेखिये॥ कैधों पिय जुगति अखंडता के खंडिवे को खंडन कै केसव तरक कुल लेखिये। दीनी दूनी कला विधि तेरे मुखचन्द को सुन्यायही अकासचन्द मन्दद्युति देखिये॥८७॥

कैधों सातो मंडल के मंडन मयंक मध्य बीजुरी के बीज सुधा सींचि के उगाये हैं। कैधों अलबेली के चमेली की चमक चौक कैधों कीर कमल में दाड़िम दुराये हैं॥ कैधों मुकुताहल महावर में राखे रंगि कैधों मनिमुकर में सुवर सोहाये हैं। केसोदास प्यारी के बदन में रदन छबि सोरह कला को काटि बत्तिस बनाये हैं॥ ८८॥

कैधों मित्र मित्र में बसाई हैं किरनि तातें फूलोई रहत अनुमान यह आयो है। कैधों ससिमंडल में झांई उड़ु मंडल की कैधों हासरस निज नगर बसायो है॥ दसन की पांति कुन्द कलिन की भांति आछी सोहति है कांति गुन कोविदन गायो है॥ मानहु विरंचि तेरी बानी को चतुर रानी दालर के मोतिन को हार पहिरायो है॥ ८९॥

फूली फूलवारी रही उपमा न जात कही, कहा धौं

सराहौं तातें जोति अधिकानी है । आलम कहत है री मोतिन की पांति खरी हीरन की कांति छबि देखि के लजानी है ॥ दाड़िम दरकि गए इनके सम न भए रबि के किरन कैसी चमक बखानी है । तनिक हँसन में दसन ऐसे देखियत दीपत नछत्र मानो दामिनी दुरानी है ॥९०॥

कैधौं मुकताहल हैं कहल के आबदार जावक रंगाए अरबिन्द मुख भरे हैं । कैधौं लाल बिद्रुम अमोल मनि मानिक के दामन जवाहिरी छवा से खोलि धरे हैं ॥ दाड़िम के बीच कैधौं सुधा में सिराए हंस सुन्दर सुधा कर के मंदिर में भरे हैं । राधे को रदन कैधौं काम के सदन साझ जरिया मदन लै जवाहिर से जरे हैं ॥ ९१ ॥

कैधौं कुन्द कलिका की अवली अनूप रूप बानी की विपंच की सुधार धरी सार है । ससि के सदन ससि सिसु आये चित्र काज कैधौं मुख बारिज की बार बर बार है ॥ झलकत रुचिर बतीस बज्र बलभद्र चमकत चारु बिजुरी की अनुहार है । अमृत के कुण्डन पै धनि को बिमल मन कैधौं ये रदन चन्द बदन मझार है ॥९२॥

सवैया ।

को बरनै उपमा कबिगंग सुतोही में है गुन जाप ब-सीके । जा दिन तें दरसो मुसुकात सुकान्ह भये बस तेरे हँसीके ॥ चन्द से आनन पै तिल राजत ऐसे बिराजत

दांत मिसी के। फूलन के फुलवारिन में मनो खेलत हैं लरिका हबसी के ॥ ९३ ॥

बारिज में बिलसै अलिपांति किधौं अलि अच्छर मंत्र बसी के। मैन महीप सिंगारपुरी निज बांह बसाई है मध्य ससी के ॥ आनद सों दरसी दसनावलि स्याम मिसी मिलि ऐसी लसी के। फूलन की फुलवारिन में मनो खेलत हैं लरिका हबसी के ॥ ९२ ॥

दोहा।

मोल लेन को जगत जिय बिधि जौहरी प्रवीन।
राखे बिद्रुम के डबा लै द्विज मुक्त नवीन ॥ ९४ ॥
दसन झलक में अरुनता लखि आवत मन मांह।
परी रदन पै आय के अधर रंग की छांह ॥ ९५ ॥
स्याम दसन अधरान मधि सोहत हैं इहि भांति।
कमल बीच बैठी मनो अलि छौनन की पांति ॥९६॥

रसना बर्णन।

गूढ़ गुन ग्रन्थ के प्रकाश के करन हारी झूठ सांच कहे देति सब के मनस की। नाद वेद भेद के उचारि देत आखरनि कोमल रसाल जात बसुधा के बस की॥ भरमी सुकवि पिय मन को हरनहारी सुधा सों सुधारी जानी गान हारी जस की। रसना की उपमा न होत कोटि रसना तें मन की सचौटी कै कसौटी षटरस की॥

कमल बदन मांझ कमला के काज छबि राखी है कमल दल तलप संवारी है । कैधौं बलभद्र खट तंत्रन की लेखी यहै कैधौं षट खादन को परखनहारी है ॥ ललित तमोर रंगगुन की कसौटी मानो मंत्रन की मूरि परमारथ की थारी है। रसिक रसीली प्यारी तेरी मृदु रसना कै पदपद हरन की रसानंद कारी है ॥ ६७ ॥

वाणी बर्णन ।

सुधा के समुद्र की लहर सी कढ़त रहै याही की सुनाय लाल कीने ते अधीन है । बन उपबन बैठि आप को दुरावै याते मेरे जान यहै कालकंठी कंठ हीन है ॥ बलदेव ऐसी ना रची है ना रचैगी विधि सौतिन की उपमा करन लागी छीन है । कमल के कोष पैठि गुंजरत भौंरे कैधौं बानी मांझ बानी जू बजायो आनि बीन है ॥ ६८ ॥

सहज झरोखा मांझ बोलत रसीले तेरे सुधा कैसी धार धौराहर मैं धसति है। नीचे खरे सुनत प्रवीन लोग बीन जानि कहत गवैले यहां कोकिल बसति है ॥ कालिदास मुखतें दरन मुकताहल मे निसरत जवे रसरंग बरसति है। ऐरी मेरी रानी हरि जू के मन मोहिबे को नेह की निसानी तेरी बानी बिलसति है ॥ ६९ ॥

जाके एक अंस हंसबाहिनी प्रसंसति है किन्नरी सु

कौन जाकी नाहीं सरि करिहै । और कोकिला सी को-कलाहू एक जानै नाहिं सूरति सुकवि गनती में कौन धरि है । बीना बेनु तबलो बजाय लीजै प्यारे लाल फेरि तुमै उनहूं को चरचा बिसरि है । सुधि बुधि सकल हिराय जैहै जानो यह जबै मेरी रानी जू की बानी कान परिहै ॥ १०० ॥

ऐसो नीको बोलिबो सिखायो सखी कौनै याहि सीखबे को होत सरसुतीहू की मति है । कुबरी कुहुका सब होतें सरकस पिक पर्यो बरकस करकस इतराति है ॥ केकी कोक कलरव लागति विकल रव अलि अलखोहैं धुनि सुनि भए अति है । एरी मेरी रानी रीझ सोहै दधिदानी तेरे बानी आगे बीना हूं कमीना सी लगति है ॥

काम की दोहाई कि सोहाई सखी माधुरी कि इन्दिरा के मंदिर में झांई उपजत है । सुरन की सुरी कैधों मोदहू की सोदरी कि चातुरी की मातु ऐसी बातन सजति है ॥ राग राजधानी अनुरागन की ठकुरानी सोहै दधिदानी कैसो कोकिला लजति है । एरी मेरी ब्रजरानी तेरी बरबानी किधों बानी हीं की बीन सुख मुख में बजति है ॥ १०२ ॥

मुखराग वर्णन ।

केसोदास राग रागिनीन को सुअंगराग कैधों हिज

सेवत हैं संध्या भली भोर की। अरुन रदन बहु रतन की खानि कैधौं तिनकी झलक छलकनि चहुंओर की। कैधौं रेखा भूखन के मनिन के चाक चक्र चोर लेत चित्त चाल तेरे चितचोर की। लागि रह्यो अनुराग कैधौं पिय नैनन को कैधौं रुचि राची तेरे तरुनी तमोर की॥

कैधौं कमला के गेह कमल की लाल माल दिवाकर ताकी ताकी झलकत रंग है। कैधौं अनुराग रह्यो फैल बानी रानी जू को जब काहू काहू प्रति करत प्रसंग है॥ कैधौं आली तेरे लाल ओठन की लाली छाई मनभाई मेरे बनमाली जू के संग है। मोहन अनंग कैधौं सोभा को सुभग अंग कैधौं प्यारी तेरे मुख पानको सुरंग है॥

कैधौ अनुराग राग राजस को रूप निज कैधौं प्रान पंकज पराग द्विज न्हाए हैं। तन तरुनाई की अरुनता उदोत कैधौं श्री के गेह सिरीखंड कुसुम बिछाए हैं॥ सोभाही तें सोभियत देखि मन मोहियत तीनौं लोक नारिन निरखि नैन नाए हैं। तिय तेरे कृष्ण तमोल रुचिराची कैधौं वलभद्र बानी को बसन पहिराये हैं १०५

मुखवास वर्णन।

कैधौं भयो उदित अनंग जूको अंग उर सुरभित अंग राग दाहैं देह दुखको। कैधौं चित चातुरी चमेली चारु

फूलि रही फैल्यो वास केसव प्रकास कर सुखको। कैधौं परिमल प्रेम पूरनावतंसन को कैधौं बरवानी बनमाली के वपुख को। कैधौं पाय प्रान पति हृदय कमल फूल्यो ताको गंध बंधु कै सुगंध सुख मुख को॥ १०६॥

पूरि परिमल मलयाचल उरोजन को गिज निरहारी है कमल पद्पानि को। धुनि २ तपत है गंध फली नासिका को अधिक अमोद रद कुंद कलि कान को॥ धूपते अनूप आवै बोलें ते वदन वास बलभद्र दई तें म-धुप सुख दानि को। सोंधे भीजी भारती गुलाब से प्रसेद कन तेरो मुख दीपत सुगंधनि की खानि को॥ १०७॥

याही मुख वास कमलनि की प्रतीत देत याही मुख वास केतकी सो मधुमन्त है। याही मुखवास वेलि मा-लती को मारै मान याही मुखवास कामी होत जन संत है॥ याही मुख वासन नवेली तन कैसी फली याही मुख वास सखी सोहति अनंत है। तेरे मुख वासही सों सकल सुवास भयो बारहो महीना भौंर मानत वसंत है॥१०८॥

दोहा।

अगर अतर के नगर में कहूं रही नहिं चाह।
वगर २ सब डगर में तुव मुख वास प्रवाह॥१०९॥
नथ मुकतन के झलक में मो मन लह्यो प्रकास।
करत नाकवासी मुकुत आसु तिया मुखवास॥११०॥

मुसक्यान वर्णन—कवित्त ।

गुल गुलकंद के सुमंद करि दाखन को देखोरी दुचंद कलाकंद की कमाई सी। कहै पद्माकर त्यों साहिवी सुधाकी सबै वृज वसुधा में तें कहा धों परी पाई सी॥ स्वरक खरी की मधुहू की माधुरी की सुभ सरदा सिरी की मिसरी की लूट ल्याई सी। सांवरी सलोनी के सलोने अधरान में सुमंद मुसकान भरी मंजुल मिठाई सी॥१११॥

रसना ललित कलवानी जूको आसन है दसन ल-सन कौन सकत वखानि है। कालिदास लाल अधरन पर वारों लाल लसत अमोल मृदु बोलन की वानि है॥ सुघर गोविन्द के रिझायवे को इन्दुमुखी रची एक रचना अनंग विधि आनि है। कैसी मुख माहँ खुली सुखमा की खानि जहां महामोह मई निरमई मुसकानि है॥११२॥

शिव सिर गंग जैसे जल की तरंग जैसे उड़गन भंग जैसे करत पयान है। मोतिन की माल जैसे दामिन की धार जैसे ओपी तरवार जैसे तजत मियान है॥ दीपक की माल जैसे पावक की ज्वाल जैसे मोहिवे को लाल मन निपट सयान है। तार जरजरी कैसे फूल झरझरी कैसे जुगुनू ज्यों जरी तैसे तेरी मुसकान है॥११३॥

मदन महीपति की कैधों जय कीरति है कैधों पिय प्रेम तरु अंकुर की सीचिका। कैधों सुखचन्द्र चारु चंद्रिका

प्रकाशमान कैधों रूप कुंडल के रसकी उलीचिका ॥ कैधों अति चारु सुधारस के सरोवर की जोबन समीर के परस मृदु बीचिका । भारती बसन सुख रास बिलसन सुखराजे मंद हसन सु दसन मरीचिका ॥ ११४ ॥

हास वर्णन ।

कोकनद कली जैसे खिलत बयारि लागे मंद मुसकान उसकान है चमेली की ॥ आरसी में भानु के प्रकाश को उजास होत जैसे दीप माल दीपै दीपति हवेली की॥ भरमी सुकवि दुति दामिनि सी कौंधति है चांदनी सी चहूं ओर बातमें सहेली की । चंदकी चमक चकचौंधति दसन दुति पियमन बसन हसन अलबेली की ॥ ११५ ॥

कोमल कमल कोस कमला बसन ताके भूखन की जोति कैधों जगत प्रकासी है । कैधो चपला के चखचौंधने को दयानिधि कीनी तुव नैनन जुगति अति खासी है ॥ कैधों सचि मोहिनी के मोहिवे को मोहमई चतुर विरंचि नई चातुरी निकासी है । काम की सुधासी चल चित्तन की फांसी कैधों एरी प्रानप्यारी या मधुर तुव हासी है ॥ ११६ ॥

दोहा ।

ललन कपट सौतिन गरब हास कियो सब नास ।
चंदहास सम भासई चंदमुखी को हास ॥ ११७ ॥

दंत कथा वा दसन की और कही नहिं जात।
फूल झरीसी छूटत जब हंसि २ बोलत बात ॥११८॥

कपोल वर्णन—कवित्त।

चपला के ऐसे चारु चमके हैं छवि पुंज छेदि निसरत झीने घघट निचोल हैं। कालिदास आस पास तरल तरौनन की जोति किरनावली ललित अति लोल हैं॥ कान्ह अवलोकत बदन प्रतिबिम्ब निज कनक सरूप मानो मुकुर अमोल हैं। लेत मन मोल कहैं दृगन की तोल ऐसे गोरे २ गोल बने प्यारी के कपोल हैं। ११९॥

कैधों नैन नटुआ के नाचिवेकी रंग भूमि सोभा ग्रह आंगन अनंग अंग लोल हैं। कैधौं है अनंग अंग बेलि के विसद खेत देखे सुख देत दुति अमल अमोल हैं॥ पिय मन मानके अखारे कैधौं नीलके उजारे जिन ऊपर मुकुर गोरे गोल हैं। कैधौं कौलमुखी मोह मंत्र तें कलित और भूषन फलित तेरे ललित कपोल हैं॥ १२०॥

केसर कपूर कंद कीन्हे दुतिमंद अति आनन्द के कंद होत चंदहूं तें जंग हैं। अमल कमल दलहू ते अति कोमल जे राजे बीच २ इन्दु गोप कैसे रंग हैं। प्रेम सों रहत नित पुलकित मुलकित झलकत छलकत छबिस्रुति संग है। गोरी तेरे लाल २ ललित कपोल तामें लाल सेत पीत बहुरंग के तरंग हैं॥ १२१॥

कैधौं रूप धरती में राजत जुगल खंड कैधौं मीनके-तन की आरसी सुढ़ारी हैं। कैधौं हरि लोचन तुरंगन के लीला थल कैधौं सरसीरुह के दल द्वै निहारे हैं। परसराम कोमल मधुकन से चंपक से चारु चन्द्र चन्द्रमा को कोटि के निकारे हैं। प्यारी गोल २ अति ललित कपोल तेरे नीर २ रचिके विधाता कर भारे हैं॥ १२२॥

कपोल तिल वर्णन।

वदन सरोरुह के संगही जनम जाको अंजन सुरंग सम जान परसत है। महा रूखे मुनिन को मन चिकनाय जाय सेनापति पाई जब नेक दरसत है। रूप सरसावै औ रसिक मन भावै मीठो नेह उपजावै पै न आप विनसत है। आली बनमाली मन फूलमें वसायो तेरे तिल है कपोल सों अमोल बिलसत है॥ १२३॥

फूले वारिजात में लखात हैं मधुप कैधौं सुखमा सरोवर में रसराज पैठो है। रतिके मुकुट पै धरी है नील मनि कैधौं कामनी के वदन परम छवि जैठो है। श्रीपति रसिकराज सुन्दर गुलाब बीच मृग मद बिन्दु रूप परम परैठो है। ललित कपोलन में तिल छवि देत मानो पूरन मयंक में निसंक सनि वैठो है॥ १२४॥

कैधौं रूपरासि में सिंगार रस अंकुरित कंकुरित

कैधों तम तड़ित जुन्हाई मैं। कहै पद्माकर किधौं यों काम कारीगर तुकता कियो है हेम फरद सुहाई में॥ कैधो अरविन्द में मलिन्द सुत सोयो आनि कैधों तिल सो छत कपोल की लुनाई में। कैधों पर्यो इन्दु में कलिन्दी जल बिन्दु कैधों गरक गोबिन्दभयो गोरी की गोराई में।

कपोल गाड़ वर्णन।

भँवर परत जल जोबन के जोर कैधों जामे छबि बूड़त सकल प्रेम दान की। निकसि सको न बल कर हारे बलभद्र नैन नाग नाथिबे की ओदी विधि बानकी। उदित नवीन होत रचित भरत मानो रूप को निवास कैधों कूंड़ी सुख दान की। पिय मन पारद अटकिबे की गाड़ कैधों गाड़ गंडमंडलनि मंद मुसकान की॥ १२६॥

श्रवण वर्णन।

पिय गुन आसन सरोज के सिंहासन हैं कैधों बिबि बासन सनेह रस भरे हैं। सांच झूठ तौलिबे को तुला के पला हैं कैधों किंसुक के पात से लपटि पाछे परे हैं। कैधों बिबि चक्र सह चक्र के सुधारे कैधों कुंडल कलाकी निधि विधि करि धरे हैं। करन के छिद्र के अछिद्र छबि ताये कवि कंचन की सीप मानो मुकता सों भरे हैं॥१२७॥

जटित जराय जगमगत सहस कर बलिभद्र रूप की कुंवार काके भान है। धरत निधार है अपार खत नेजन

के तीरचा अनंग आन रोप्यों खरसान है ॥ उपमा अनंत मनरंजन विड़ारो रती तांडव के तार जिन्हें जानत सु· जान हैं । चंद रथ चरन की काम चक्रवे के चक्र कैधों तिय तरल तरौना तेरे कान हैं ॥ १२८ ॥

कैधों सुर पंडित असुर गुरु दोउ दिसि ससि के स्र- वन लागि मंत्र मतकात है । कैधों कल्पद्रुम के सुमन स- मेट आभा सुन्दर कपोल पर कला कतरात है ॥ कैधों रवि छील सुधाबुन्द दे जसाए कैधों कवि के कमल कैधों नवल सोहात है । कैधों मनभावन की साखी ले करन राखी प्यारी के करनफूल कीनो मन मात है ॥ १२९ ॥

कानन में कुन्दन के नगन जटित सोहै अंबर छपाए बहु तोल मढ़ा गथ के । कालिदास ललित कपोलन के जोग लसै कैसे बरनत घनश्याम सहु जथ के ॥ पाछे परे राहु तातें छपे हैं कुरंग दृग अनुमान होत हिये अनुमान पथ के । छवि आई आननि में कानन तरौना वाके सो- हत सोहाए मनो चाक चन्द रथ के ॥ १३० ॥

नासिका वर्णन ।

केसव सुगन्ध स्वास सिद्धन की गुफा कैधौं परम प्र· सिद्ध सुभ सोभन सुवासिका । कैधौं मनमथ मन मीन की कुबेनी कैधौं कुन्दन की सींव लोल लोचन बिला· सिका ॥ मुकुता मनिन की है मुकुतपुरी सी कोधौं कैधौं

सुर सेवत हैं कासी की प्रकाशिका । त्रिभुवन रूप ताको तुंग तोप निधि ताके तोप की तरंग कै तरुनि तेरी नासिका ॥ १३१ ॥

सोभा को सकेलि ऊंची बेलि बांधी बलभद्र राख्यो सम लोचन कुरंगन को रोस है । दीपति को दीप मुख दीप को सुमेर यह मृदु मुख सारस को सिफा कन्द जोस है ॥ कलप तरोवर की कलिका सुगंध फूली उपमा अनूपम की त्रिविध निसोस है । तिल को सुमन है कै नासिका तरुनि तेरी सुरन की सरन कै सौरभ को कोस है॥

नासिका वेध वर्णन ।

सोभा सुख सदन को वातायन बलभद्र मानो महा मोहनी पपीलका को गेह है । मैन पंचबान को छबीलो छिद्र छाजत है देखिबे को देह में अदेह जू को देह है ॥ पिय मन रोकिवे को निडर किलो को रंध्र सुखमा मधुर को रुचिर जासो नेह है । मैन के मवास में धनुर्धर को मोर चाहै कैधों वाम नासिका में वेसर को वेह है १३२

सुनि चित चहै जाके कांकन की झनकार करत है सोई बात होत जो विदेह की । सेख भनै आज है सुकालि नाहीं कान्ह जैसी निकसी है राधे की निकाई कछू नेह की । फूल की सी आभा सब सोभा लै सकेलि

धरी फूलि ऐहो लाल भूलि जैहो सुधि गेह की। कोटि छवि पचै तऊ बरनी बनै न फवि बेसर उतारे छबि वे-सर के वेह की ॥ १२४ ॥

नासिका भूषण वर्णन।

कोऊ कहै नाक हांसी कोऊ मनमथ फांसी कोऊ कहै देवमाया चक्र सो बनायो है। मुक्ता अनूपलाल चूनी छबि रूप नथ कंचन को तार कैधों सुघर गढ़ायो है। दीपजीत सुकजीत पंचक कली को जीत नासिका विजय जय कवि पै पढ़ायो है। सील को सुजस तीन लोक को सोहाग निज नैन मैं पिरोय सैन भूखन दि-खायो है ॥ १२५ ॥

कैधों पिय नेह मनि कीरति हँसन लैके भूले हेम झूले भूले ध्यान समरथ के। कैधों मीन मन खग फन्दा तामै मित्र वस बैठि कवि कुज सोम थापे मनमथ के ॥ ऐसी भांति देखि एरी मोहे मनमोहन जू सूरति बखान करौं कहा लौं अकथ के। भूले ज्ञान गथ कै औ लोक लाज पथ के सो कौन नैन न थके निहारे तेरे नथ के ॥

नथ मोती वर्णन।

वदन सुराही में छबीली छबि छाक्यो मद अधर पियाले छिन २ में गहत है। अलसाय पौढ़त कपोल पर

अंक पर कबहूं गजक जानि चखन चहत है ॥ प्रेम नग साथी एतो सदा रहै अंक भरै छकोई रहत कोऊ कछू ना कहत है । झुकि परै बात के कहै तें अनखात न्यारो बेसर को मोती मतवारोई रहत है ॥ १३७ ॥

छाड्यो जल सागर बिधायो तन आप आय अधर के बीच रह्यो और ना चहत है । बिधि के संजोग बस आनि पर खोए सर बन्यो है बनाव मनि कंचन सहित है ॥ पूरब प्रताप चन्द पायो है मुखारबिन्द एतो कहा लहै कन्त जैतो तू लहत है । प्यारी के बदन पै मदन जू को मद पिये मोती मतवारो सदा झूमत रहत है ॥ १३८ ॥

लोचन वर्णन ।

पिय मन दूत कैधौं प्रेम रथ सूत कैधौं भँवर अभूत वपु बास के सुरंग है । चितवत चहूं ओर पीतम के चित्त चोर चन्द के चकोर किधौं केसव कुरंग है ॥ बात मद भंजन हैं खीलिबे के खंजन कि रंजन कुंवर कामदेव के तुरंग है । सोभा सर लीन मीन कुवल परस भीन नलिन नवीन किधौं नैन बहु रंग है ॥ १३९ ॥

दीरघ ढरारे तहां डोरे रतनारे लगे कारे तहां तारे अति भारे जे सुरंग हैं । कहै गुनि गंग जनु दूध ही सो धोए पुनि कोए बिकसत सित असित दुरंग हैं ॥ पारद

सरस चार थिर से थिरकि जात तिर में चलत मानो कूदत कुरंग हैं। खैंचे ना रहत अनुराग हूं के बाग बर मानिनी के नैन कैधौं मैन के कुरंग हैं ॥ १४० ॥

मृग कैसे मीन कैसे खंजन प्रवीन कैसे अंजन सहित सित असित जलद से। चर से चकोर से कि चोखे खांड़ कोर से कि मदन मरोर से कि माते राते मद से ॥ नवी कवि नैना से कि और नैना वैना से कि सी पड़े सलोना मध्य राखे मृगमद से। पय से पयोध से कि और सोधे सोध से कि कारे भौंर कैसे अनियारे कोकनद से १४१

झूमत झुकत भरे मद के अरुन नैन मानो मैन तून है कढ़त जातें सर है। हाव किल किंचित सरूप धरे नाथ कैधौं मोहन बसीकरन उचाट के असर है ॥ कैधौं मीन पैरत सहाब के सरोवर में मानिक जटित भूमि खंजन सुढर हैं। कैधौं अनुराग की लपेटि के सिंगार बैठ्यो कैधौं कौल पाखुरी में डोलत भँवर है ॥ १४२ ॥

मीन ह्वै कमीने परे पानी में निहारे हारे हारि के चकोर ते वे चुनत अंगारे हैं। भनत कविन्द अलि कंजन के खंजन के गंजन गरब गारि डारे ते निहारे हैं ॥ डोरे रतनारे कारे तारे और सारे सेज उपमा सितासित तरंगन तें भारे हैं। प्यारी तेरे मान के दृगन पर सान वारे कैयर कसीसे ले कमान वारे वारे हैं ॥ १४३ ॥

पानिप के पानिप सुघरताई के सदन सोभा के समुद्र सावधान मान मौज के । लाजन के बोहित पुरोहित प्रमोदन के नेह के नकीब चक्रवर्ती चित चोज के ॥ दया के दिवान पतिव्रत के प्रधान जुग नैन ये मुबारक विधान नव रोज के । सफरी के सिरताज मृगनके महाराज साहिब सरोज के मोसाहिब मनोज के ॥ १४४ ॥

पाटल नयन कोकनद कैसे दल दोउ बलभद्र बासर उन नीदी देखी बाल मैं । सोभा के समुद्र माझ आभा बड़वानल की देव धुनि भारती मिली है पुन्य काल मे ॥ काम कह वतँ कैधौं नासिका उड़प बैठी खेलत सिकार तरुनीके रूप ताल में । लोचन सितासित में लोहित लकीर मानो बांधे जुग मीन लाल रेसम के जाल में ॥ १४५ ॥

कैधौं रूप सागर में आंच बड़वानल की बिरह बिसाल ज्वाल जा मधि बिकासी है । कैधौं दल पंकज के ऊपर अरुन रेखें कैधौं नेह दीपक की अरुन सिखासी है गोरी तेरे नैनन के बीच लाल देखें तेती रेखें अनुरागही की प्रगट प्रकाशी है ॥ कैधौं अनियारे अति कारे बटपारे इन तारन की फांसी पिय जिय की निकासी है ॥१४६॥

हरिन निहार जकि रहे हिये हारि मानि बारिचर बारिज की बानक बिकानी है । छाती होति तिया प-

छताती कर छाती दै दै धीर मनरंजन के खंजन जमाती है। दैवे को समान उपमान आन दृगन की कबिन के मन की उकति अधिकाती है। प्यारी के अनोखे अनियारे ईछनन छ्वै छ्वै तीछन कटाच्छन तें कटि २ जाती है ॥ १४७ ॥

सिपर सुपूतरी कृपान काल कज्जल त्यों दल बरुनीन के छबीले छैल छाजे हैं। कहै पद्माकर न जानी जाति कौन पैधों भौंहन के धनुख चितौन सर साजे हैं ॥ घेरदार घूँघट घटा के छांहगीर तरे मदन वजीर के लियेई मंजु माजे हैं। बखत बुलन्द सुखचन्द के तखत पर चारु चख चंचल चकत्ता ह्वै बिराजे हैं ॥ १४८ ॥

भारे कजरारे दोऊ काजर से लाल डोरे सेंदुर सों चीते अति राजत सुपथ के। मान कवि कहै पाय बरुनी जंजीर डारि करत कटाच्छ गति डोल हूल नथ के ॥ पूतरी महावत बिराजे आड़ नासिका सों पीतम के प्यारे हैं लिवैया जग गथ के ॥ मोहन के मोहन हैं सोहैं तीखे लरिबे को नैना तेरे दोऊ हाथी माते मनमथ के ॥१४९॥

जोबन प्रवाह तामें छबि की तरंगे उठैं भौंह की मरोरन सों भौंर मतवारे हैं ॥ बालम की मूरति मलाई लाज बैठ रही छूटे लाल डोरे तेई गुन रतनारे हैं ॥ पूतरी इलन तेई पतवारी ऊधोराम लाज बादवान चंपू

बरुनी सवारे हैं। रूप के सरोवर में तीर तीर डोलत हैं अखिया न होय येतो काम के नवारे हैं ॥ १५० ॥

कैधों रूप सागर के रतन जुगल कैधों भूप मीन केतन के केतन सुजस के। नेह भरे मदन सदन के प्रदीप कैधों रसराज चाखिवे को चखक सरस के ॥ सुनत सुदेस के सुवेस से महीप कैधों बस कीने काज इन्दिरीन विसि दस के । लगे हिय ऐनक सकत दिन रैन कैधों प्यारी तेरे नैनतीर मैन तरकस के ॥ १५१ ॥

ऐसे नैन मैन के न देखे ऐन सैन के जगैया दिनरैन के जितैया सौति सीन के । कमल कुलीनन के मुकुली करनहार कानन की कोरन लों कोरन रंगीन के ॥ भनत कविन्द भावती के नैन सायक से देखे मैन पायक से नायक नवीन के। सींचे हैं अमीन के असीन मानो मीन के बखाने को मृगीन के खगीन पन्नगीन के ॥ १५२ ॥

जमी सी रहति अरविन्दन की आभा महबूबी मृग छौनन की छाम करियतु है । खूबी बन वीथिन चकोर चारुताई मन सूबी तुरगन की तमाम करियत है । डूबी जल जोरन सो मीन बरजोरी सोभ औौर मगरुरी बदनाम करियत है। देखि देखि तेरी अंखियान की अजूबी प्यारी खूबी खंजरीटन की खाम करियतु है। १५३ ॥

प्रेम रगमगे जग मगे जागे जामिनी के जोबन की

जोति जगि जोर उमगत हैं। मदन के माते मतवारे ऐसे घूमत हैं झूमत झुकत झपि २ उघरत हैं॥ चाहत हैं उड़िवे को देखत मयंकमुख जानत हैं रैनि तातें ताही में रहत हैं। कहै कवि आलम निकाई इन नैनन की पांखुरी पदुम पै भवर थिरकत हैं॥ १५४॥

सुखमा मलिन्द के अलिंग अरबिन्द हैं कविन्द हैं नरिन्द के लगे हैं वर जस के। श्रीपति प्रवीन रूपसर के ललित मीन हरिन नवीन नेह कानन सरस के॥ एरी मेरी प्रानप्यारी लोचन तिहारे प्यारे सुरन सुखारे पिय विरह तमस के। रति रनवीर हैं सिंगार गुनधीर हैं संवारे आछे तीर हैं मदन तरकस के॥ १५५॥

दोहा।

अमी हलाहल मद भरे सेत स्याम रतनार।
जियत मरत झुकि झुकि परत जिहि चितवत इक बार।
कारे कजरारे अमल पानिप ढारे ऐन।
मतवारे प्यारे चपल तुव ढुरवारे नैन॥ १५७॥
तन सुबरन के कसत यों लसत पूतरी स्याम।
मनो नगीना फटिक में जरी कसौटी काम॥ १५७॥

खंजन वर्णन कवित्त।

कैधों रस राजरस रसित असित कैधों ललित बि-

सिख लिख वलित सुभाल के। कैधों जग जीतिवे को राजा रति नाथ हाथ बाहन बनाए केसोदास चल चाल के॥ हृत घात पातक कि चित्त चोरिवे को तम देखिवे को नंदलाल लालि करै काल के। लागि रही लोक लाज खंजन नयनि किधों पियमन रंजन को अंजन हैं बालके॥

दोहा।

दृग दारा तकि ज्यों लह्यो दीपक जातक भाय।
जग के घातक पायके लागत पातक धाय॥ १५९॥
रे मन रीति विचित्र यह तिय नैनन की चेत।
विष काजर निज खायके जिय औरन को लेत॥१६०॥
राते डोरन ते लसत चख चंचल इहि भाय।
मनु विधि पूना अरुन में खंजन बांध्यों आय॥ १६१॥

वरुनी वर्णन कवित्त।

कुवतहीं कोमल सिरिस की सी पांखुरी हैं छिन २ खरी खरकति जाती छाती हैं। निपट अन्यारी नेक होतिना हिये तें न्यारी अजौ नटमाल की अनीसी इठाती हैं॥ मंडल तिलोकी असि काजर करोकी अति अंकुर सिंगार की जड़ै सी उलहाती हैं। नैन मैन तीरन की फोकसी तरेरी तीखी तरुनी की वरुनी वे बरनी न जाती हैं॥ १६२॥

नजर परैतैं उलहत उर आनद है लसत समूल सो कटाच्छन सवेद है। कालिदास लोचन पियाले श्रय लोकतहीं पीतम के अंग२ परसत सेद है॥ दोऊ हितकारी करि मोहत मुरारी जी को छकेई रहत लखे बिरति अखेद है। चरन में एक गुन भेद नातो तरुनी की बरुनी में वारुनी में और कछू भेद है॥ १६३॥

कैधों दृग सागर के श्रास पास स्यामताई ताही के ये अंकुर उलहि दुति वाढ़े हैं। कैधों प्रेम क्यारी जुग ताकेये चहूंघा रची नील मनि सरनि की बारि दुखडाढ़े हैं॥ सूरति सुकबि तरुनी की बरुनी न होवे मेरे मन श्रावे ये बिचार चित गाढ़े हैं। जेई जे निहारे मन तिन के पकरिवे को देखो इन नेनन हजार हाथ काढ़े हैं॥

लिख्यो मन नायक बनाव रसराज मसी कैधौं महामोहनी के मंत्र के बरन हैं। कैधौं नैन चोरन के हाथ की अनूप असी कैधौं स्याम रंगन के अंगन के कन हैं॥ कैधौं ये पचास टूक सीवन की सार सुई कैधौं कारे तारन के किरन के गन हैं। कैधौं रूप पंकज के ऊपर ये पंकरेखैं कैधौं नैन तरुनी के बरुनी सघन हैं॥ १६५॥

दोहा।

कारे अनियारे खरे कटकारे के भाव।
झपकारे बरुनी करत झप २ कारे घाव॥ १६६॥

पलक वर्णन ।

यों तारे तिय दृगन के सोहत पकलन साथ ।
मनो मदन हिय सीस विधु धरे लाज के हाथ ॥ १६७ ॥

भृकुटी वर्णन कवित्त ।

कैधौं लागी पंकज के अंक पंक लीक किधौं केसव मयंक अंक अंकित सुभाय को । जंत्र है सोहाग को कि मंत्र अनुराग को कि मंत्रन को बीज अध उरध अभाय को । आसन सिंगार को कि काम को सरासन है सासन लिखो है प्रेम पूरन प्रभाय को । राख रुख वेख बिख बिषम पिजष में सुभामिनी की भौंहै किधौं भौन हावभाय को ॥ १६८ ॥

जे बिन पनच बिन करकी कसीस बिन चलत इसारे यह जिनको प्रमान है । आंखिन उड़त्ता आय उर में करत घाय परत न देखी पीर करत अमान हैं ॥ वंक अवलोकन की बानि औरई बिधान कज्जल कलित जामें जहर समान हैं । तासों बरबस वेधें मेरे चित चंचल को प्यारी तेरी भौंहैं कैसी कहर कमान हैं ॥ १६९ ॥

सौरभ सुगंध स्वास चंपकली नासिका की कैधौं अलि उरध तें भ्रमन करत हैं । कैधौं मुखचंद धर्यो वाहन कुरंग कंध जुवा मरकतन को मनहीं हरत हैं ॥ कैधौं बल

भद्र भाल कंचन के भाजन में दीप जुग नैनन को काजर परत हैं। भामिनी की भौंहैं किधौं काम की कमान सो हैं जिन्हें देखि सौतिन के प्रान निसरत हैं ॥ १७० ॥

कैधौं रतिनायक की कुटिल कृपान कैधौं बिरह भुजंगम के अंकुस विमल हैं। कैधौं बाल अलिन की अवली ललित लसै रंग रस भयो पिये आनन अमल है ॥ कैधौं नैन चातक पै ऊनी घटा अंबुद की लाल मन छलिवे को कैधौं छलबल हैं। कैधौं भोरी भामिनी की भृकुटी विराजै बंक कैधौं ये सिंगार बेलिही के दोउ दल हैं॥ १७१ ॥

अमल कमल पर गुंजत भँवर जुग प्रेम की तुलाकी सुभ डांड़ी जोहियत है। तनक मयंकअंक लोचन चपल रति जरध को अञ्जन की आड़ रहियत है॥ कैधौं मनि कण्ठ हाव भाव के वकील ये हैं काम की कमान पिय मन मोहियत हैं। सोभा रस भासन सिंगार रस आसन की कैधौं मन भावती की भौंहे सोहियत हैं ॥ १७२ ॥

भाल वर्णन।

केसव असोक किधौं सुन्दर सिंगार लोक कनक के द्वार किधौं आनद के कंद को। सोभा को सुभाव किधौं प्रभा को प्रभाव देखि मोहे हरि राव सखि नन्दन सुनंद को॥ चमकत चारु रुचि गंगा को पुलन मानो चकचौंध

चित मति मंदहू अमंद को । सेज है सोहाग की कि भाग की सभा सुभाग भामिनी को भाल किधौं भाग चारु चन्द को ॥ १७३ ॥

रूप की नदी में पार पाइवे को पारो है कि काम को अखारो है कि रति को भंडार है । लाज को महल प्यारे मंडन के आंखिन के पैठिवे को पैंड़ो है कि प्रेमरस सार है ॥ राहु जानि बारन के भारन डेरानो यातें चंद्रमा को मानो अध खंड अवतार है । जोबन को हार के नि-काई को निकार भोरी गोरी को लिलार कैधौं सोभा को सिंगार है ॥ १७४ ॥

बेनी भानु तखत के रूप को बखत यह संभु राज लखत भंडार काम माल को । आनद को कन्द कैधौं सरद को चन्द लसै दामिनी अमंद कै किनारो सुधा ताल को ॥ मोहिवे को जंत्र कैधौं कामरू को मंत्र विधि रच्यो है स्वतंत्र मनहरन गोपाल को । अतिही बिसाल कैधौं जोतिन को जाल यह प्यारी तेरो भाल है हरैया लाल साल को ॥ १७५ ॥

करत उचाट पाट मंत्रन को मंत्र मनो ललित लि-लाट तेरो हरत हियान है । कालिदास बिलसत सेंदुर को विन्दु चारु सुन्दर गोविन्द मन मोहन जियान है ॥ सोने तें सलोने भाल अलक में सुन्दरी के जगमग दियो

लै तिलक सखियान है। राहु पै चलायो है मयङ्क जम-
धर सो तो रहि गयो मेरे जान उर में मियान है ॥१७६॥

थापी कैधों जस की जनमभूमि ससिवत उपजत
जहां सब सुकृत को जाल है। तिलक तरोवर की छाया
सु कलप तरु रस के अगारन को अजिर रसाल है ॥ भाग
के सो वासन सोहाग कैसो आसन है मोहनी को सासन
कढ्यो तें बस लाल है। काम के तुरंगन की धाइ को ध-
रनि यहै कैधों बलभद्र भोरी भामिनी को भाल है॥१७७॥

भालविन्दु वर्णन।

वपु वच्छ तें लगायो भयो गुरु बंधु जानि भुव सुत
भेटे तकि उड़प नरिन्दु है। कैधों रवि सारथी कुरंग रथ
सारथी भो कैधों निज नारी उर पर धरे इन्दु है ॥ सौतिन
को गर्व दहिवे को दै दहन कन बलभद्र सबै सुख दैन
दुख निन्दु है। राग पिय मन को पराग मुख पंकज को
भामिनी के भाल कैधों केसर को विन्दु है॥ १७८॥

आज मुखचन्द पर राजत रुचिर विन्दु सोई ब्रजचन्द
को बिकावन सिताव को। छाजति छबीली छवि बरनि
न जाय मो पै हरनी हितूजन के हिय को हिताव को ॥
रति को न रंभा को न सची उरबसी को न बारि २
डारियत उपमा किताव को। गालिब गुलाब को न पं-
कज के आब को रही न आफताब को न ताव माहताव
को॥ १७९॥

सवैया।

आज गईं सिगरी मुदिवैं जे रहीं गूंथि मोतिन जोसिन जाल में। कंकन किंकिनि छाप छरा हरा हेम हमेल परे मते चाल में॥ टोनो पढ्यो कछू बेनी प्रवीन सलोनो सरूप लखे किते बाल में। इन्दु जित्यो अरविन्द जित्यो तू गोविन्द जित्यो इक विन्दु दै भाल में॥ १८०॥

बाल के भाल विसाल दये मृग के मद को लसै विन्दु सलोना। लागि न जाय कुदीठ कहूं यह हेत दियो मनो नील दिठौना॥ भाखत है विजयानन्द जू अपने मन की यह टोतवा होना। कंज से नैन खिले दुहूं देखि ये लालची बीच अयो अलि छौना॥ १८१॥

सीतलादाग वर्णन—कवित्त।

पूरन मयङ्क कैधौं मेटिके कलंक बैठो अंक में समेटि के नखत बड़ भाग है। कैधौं रंगरेज मैन बांधनू विचित्र बांध्यो कैधौं रूप सागर में झलकत झाग है॥ कैधौं नये सीमा के बये हैं बीज रचि २ कंचन की भूमि पै जटित पुष्प राग है। नाथ अनुराग है कि फूल्यो मैन बाग है कि सौति को सोहाग है कै सीतला को दाग है॥१८२॥

साधि सुभ लगन मुहूरत अवधि बांधि त्रिभुवन जीतबे को मन उपजाये हैं। कैधौं पांत लालन की लागी विधुमण्डल में मण्डल अखण्डल के तन मन भाये हैं।

जोबन दिनेस के उदै में खुल्यो कंज नाथ तापै मानो ओप के कनूका बिथराये हैं । मोहन बसीकर कै जंत्र लिखि राखे कैधों दाग सीतला के मुख ऊपर सोहाये हैं ॥ १८३ ॥

कंचन बदन तेरो तामें दाग सीतला के कैधों मैनं जटिया ने चूनी जरि धरी हैं । कोमल कपोल कैधों श्रम के पसीजे भीजे आनद कनक कैधों छवि छोटें परी हैं ॥ वारि डारौं रति बलिहारि डारौं रति पति मुख की घटा तें मानो प्रेम बुन्दें करी हैं । छोटी छोटी गोटी तेरे मुख पै सुघर प्यारी मानो लेवा लाखन नखत जोति हरी हैं ॥ १८४ ॥

भाग भरे आनन अनूप दाग सीतला के देव अनुराग भिभिया से झमकत हैं । नजर निगोड़िन की गड़ि गड़ि गाड़े परे आड़े करि पैन दीठ लोभ लपकत हैं । जोबन किसान मुख खेत रूप बीज बोयो बीज भरे बुन्दन अमोल हैं । बदन के बेझे पै मदन कमनैती के चोटारे टन चटा से चमकत हैं ॥ १८५ ॥

केश वर्णन ।

ज अमल चल चीकने चिकुर चारु चितये तें चौंधियत केसोदास । सुनहु छबीली राधा छूटे छवान कारे सटकारे हैं सुभाव ही सदा सुबास ।

सुनि के प्रकास उपहास निसि बासर को कीनो है सुकेसव सुबास जाय के अकास । यदपि अनेक चन्द्र साथ मोरपच्छ तऊ जीत्यो एक चन्द्रमुख रूप तेरे केस पास ॥

कालिन्दी की धार निरधार है अधर मन अलि के धरत या निकाई के नरेस हैं। जीते अहिराज खंडि डारे हैं सिखंड घन इन्द्र नील किरिन कराई ना हमेस हैं ॥ एडिन लगत सेना हिय को हरख करैं देखत हरत रवि कन्त को कलेस हैं । चीकने सघन अँधियारे तें अधिक कारे लसत लछारे सटकारे तेरे केस हैं ॥ १८७ ॥

कोमल कुटिल नीलमनि के सिखर चल बिमल बिसाल चारु चीकने न सरि के । सुन्दर उदार कच नूपुर तें आय लागें उतर सघन मानो सुखमा सुभरि के ॥ जोहन के काज लागे गोहन गोपाल डोलें सोहन दिनेस मन मोहन हैं हरि के । भौंरन के हार मखतूल कैसे तार देखि होत निसतार छूटे बार ये कुंवरि के ॥ १८८ ॥

कारे सटकारे फटकारे चटकारे नेक धूप दै संवारे सुखमा समूह बसि गो । कोकिला कुहूको मोहू को कियो मैलो मन कासीराम भौंरन को भाव नीको नसि गो । सावन के घन बन सघन तमाल तरु तरनि तनूजा ताहि हेरि हिये हंसि गो । तेरे तन रूप की तरंगिनी नरुनि मन पैर बार पारन सेवारन में फंसि गो ॥१८९॥

जीवन सरोवर के कोमल सेवार मूल काम तनु तूल मखतूल कैसे तार हैं। पंच सर सिंधुर के स्याह चौंर भौंर कैधों कैधों सीस सहज सिंगार रस सार है ॥ माथे मार मरकत मनि की मयूखें कैधों कैधों धरे चन्द को तिमिर पर वार हैं । लामें २ जामें जोत लता के बितान कैधों कैधों स्याम वरन छबीली छूटे बार हैं ॥ १९० ॥

लामे लहकारे सटकारे सुकुमारें कारे मृगमद धारे मखतूल के से तार हैं । तमके निवास कैधों तामस प्रकास के सिंगार के सरोवर में सुथरे सेवार हैं ॥ मार सिर मौर के सुबारक ये भौंर कैधों चातुरी के चौंर मन में चक के सार हैं। ससि के समीप कैधों राहु की रसन सी है नागिन के वार के सोहागिन के वार हैं ॥ १९१ ॥

लट वर्णन ।

देखे सुख चन्द दुति मन्द सी लगति अति लोचन बिलोके मृगसावक सरफ है । सोने कैसे पात गात देखत लजात जात मेनका न कही जात रूपऊ तरफ है ॥ मोती मोर बेसर को लसै लाल ओठन पै जैसे मनि बिम्ब ढिग बुन्दन बरफ है। नेह भीनी लट वाकी लपटी कपोलन पै मानो मैन आरसी में फारसी हरफ हैं ॥ १९२ ॥

निकसी कलंकित कलंक रेख छीन ह्वै के बदन ससी में दृग देखे अटकत है । कैधों अलि बाल पांति चलि

थकी कंज ढिग अधर अमीको नागिनी सी छटकत है। पति मिलिवे को भुज जामिनी पसार्यो एक सौति चित चाह को चटक चटकत है। नैन नट नागर लकुट मनि कंठ कैधों कारी सटकारी प्यारी लट लटकत है ॥१८३॥

छोटी २ जुलफैं द्वै ओरन मरोर राखी कैधों मुख कंज में मधुप अरुझाने हैं। कैधों चन्द मण्डल पै पीवन पियूख आए नागिनि के छौना मृगमद लपटाने हैं ॥ कैधों काम कुंजर के अंकुस सुभग बने भूमि कै धरे हैं रतिराज पहिचाने हैं। कैधों सिसु स्याम के सिपाही दोऊ ऐन खूनी खैंच २ खंजर ये कौन ऐ खिसाने हैं ॥

दृग मीन बाझिवे को बंसी यह सची कैधों नागिनि की बची पीवै अमृत अमन्द है। प्रेम के कपाट खोलिवे की आंकुसी है कैधों कैधों ये प्रसाद मन फासिवे को फन्द है। रूप के जहाज बीच लंगर लग्यो है कैधों मोहनी महल पर लसत कमन्द है। चन्द की चटक पै सुराहु की सटक परी लटकि रहे हैं लट साहब पसन्द है॥

पाटी वर्णन।

कैधों बेनी पन्नगी के फन दुहूं ओर कैधों मृग दृग रोकिवे को रूप भूप घाटी है। मुख बिधु तान के बितान जुग मेरे जान कमल के ऊपर सेवारन की टाटी है। कैधों करतब रसराज राखे माथे दोऊ दीपत दि-

मेस तातें ललित लिलाटी है । एरी आगी मोहन मयूर से निरखि नाचें सघन के घन पटली की परि पाटी है ॥ राती सेत फूलन की उलही ललित पांति कैधों चारु जोबन महीपति की बांटी है । कालिदास आस पास बिलसै सलोनी स्याम कैधों काम कुटिल बहेलिया की टाटी है । एरी मृगनैनी हरि मन अटकायबे को कैधों पाट पूरी बेनी घाटही की घाटी है । प्रेम रस पाटी सोहै प्यारी तेरी पाटी कैधों चार वर मंत्र बीज बोयबे की वाटी है ॥ १८७ ॥

कैधौं रसनायक बिहंगम के जुग पच्छ कैधौं प्रति-पच्छ सौति जन के समोद के । कैधों तम पूरि है कला धर तें छप्यो आय कैधौं विप्र बालक दिवाकर के गोद के ॥ परसराम कैधों स्याम वेद के अनूप खंड कैधौं काम नट के खिलौना मन मोद के । पाटी के बिभाग सोहै पिय के अटल भाग नीर भरे मानो चारु पटल पयोद के॥

दरस दरस को परस होत बलिभद्र कैधौं है सरस सलासन सुर भान की । रसराज पच्छी कैसे उभै खंड कैसे सोहै ढाकि बैठो छपाकर मंचक बितान की ॥ तम के पटल लपटाने हैं मुकुट सों कि सरस कदंबिनी क-सौटी पंच बान की । पाटी तेरी तरुनी जुगल ऐसी राजे मानो जामी जुग जमुना सिखा रतन सान की ॥१८८॥

मांग वर्णन ।

पहिलेही ललना नवेली अलबेली रची रचना सिमन्त की सहेलिन को संग है । कालिदास कैसी पाटी पाटत बनी है घनी अलकैं अनूप बनी बन्दन को रंग है ॥ देखि मन सुन्दर गोविन्द को मगन भयो कैसी बनि आई मन मोहनी की मंग है । लै चल्यो दुसाखा सुनि दीपक जगायवे को जोवन महीपति के आगे ह्वै अनंग है ॥ २०० ॥

तम के विपिन में सरल पंथ सत्विक को कैधों नीलगिरि पर गंगा जू की धार है । कैधों बनवारी बीच राजत रजत रेख कैधों चन्द कीनो अन्धकार को प्रहार है ॥ नापति सिंगार भूमि डोरी हासरस कैधों बलभद्र कीरति की लीक सुकुमार है । पय की है सार घनसार की असार मांग अमृत की आपगा उपाई करतार है ॥२०१॥

दोहा ।

लाल मांग पटिया नहीं मदन जगत को मार ।
असित फरी पै लै धरी रकत भरी तरवार ॥ २०२ ॥

वेणी वर्णन—कवित्त ।

पीठ तन ताकतही दीठ तन डस लेती फैल के विरह बिख रोम २ धावती । छिनक में केतिन के केतो उतपात होतो एतो कोऊ गारुड़ी कहा तें ढूंढ़ि ल्यावती ॥ ईश्वर

दोहाई जो पै होती ऐसी ब्याली तो पै काली को नथैया कान्ह कैसे कै कहावतो । मृदु मुसकान मंत्र जानती न राधे तो पै वेनी के डसन ह्वज वसन न पावतो ॥ २०३ ॥

लांबी लहकारी अति कारी सुकुमारी सखिश्रान ने सुधारी मत्त मधुप की सेनी है । डारत कलंकहि कला-निधि निचोरि कैधौं कैधौं मन धीरज विदारिवे की छेनी है ॥ नागरि सनाल सुखकंज तें लगी है कैधौं कैधौं कारी नागिनी निपट सुख देनी है । कीनो तम पान कै तमी-पति के पाछे परी कैधौं अंधकार धार कैधौं यह वेनी है ॥ २०४ ॥

कंचन की सांटी पर कानर की धार मानो रूपमाल पर अलि माल लटकत है । श्रीपति भनत कैधौं केसर के खंभ पै सदंभ एक मरकत लरी चटकत है ॥ कैधौं रति नायक के पाट पै सिंगार लीक देखि कवितान की सु मति भटकत है । कारी सटकारी वेनी पीठ पै सजत कैधौं रंगी रंग पाटी पै भुजंगी सटकत है ॥ २०५ ॥

वेनी नव बाल की बनाय गुही बलभद्र कुसुम अरुन पाट मन मोहियत है । कारी सटकारी नीकी राजति नितंब नीचे पन्नग की नारिन को देह दोहियत है ॥ सात्विक सिताई असिताई तेज तामस की राज सरताई मिलि रूप रोहियत है । धरत तिगुन वपु त्रिभुवन जीतवे को मानो महा माया को सरीर सोहियत है ॥ २०६ ॥

लामी लहकारी बड़ पेचन की भारी भी गरक सोंधें सारी न्यारी अतिसय झौंक की । बरनों कहालों भोप मदन की धोप कैधों इन्द्र करि कोप तरवानी एक ओक की । नटुआ की सांटी कैधों आलम सधापने को कहा लों बखानों हों पर्यो न विधि कोंक की । नागिन के तिमिर छपाकर में छाय रही कटि पर बेनी कै निसेनी सुरलोक की ॥ २०७ ॥

रैन की उनीदी राधे सोवति सकारे भये झीनी पट तानि परी पायन लों मुख तें । सीस तें उलट बेनी कंठ ह्वैके उर ह्वैके जानु ह्वै छवान कुं के लागी सूधे नखतें । सुरति समर रति जोबन के महा जोर जीति भगवन्त अरसाव राखी सुख तें । हर को हराय मानो माल मधुकरन की राखी है उतारि मैन चंपा के धनुखतें ॥१०८॥

जूरा वर्णन ।

अचरज कला वालाधर धरि राखी पीछे कैधों सुरभानजा निकर बेर कांध्यो है । कैधों अहिकारे लहकारे ते लहरवारे सुधाकर जानि के नवीन नेह नाध्यो है ॥ कैधों कंज कोस ढिग अलि पुंज गुंजत हैं मंजुल मनोज मग जानि सर साध्यो है । चीकने चिकुर चारु चह चहे जूरी स्याम ऐंठ गैंठ लटनि लपेट मन बांध्यो है ॥२०९॥

कैधौं सांप पीडुरी है फन उकसाय बैठो कैधौं काम आंकुस सँवारिवे को पूरा है । कंचन की गुटिका सों पाटी पारिवे को राख्यो कैधौं सालगाम को सरूप रूप सूरा है । कैधौं सती करत तपस्या तीर कालिन्दी के हृन्दा कैसो फल देखियत मन रूरा है । चीकने चटक मटकत कारे स्यामहू तें ऐसो सीस प्यारी के बिराजमान जूरा है ॥ २१० ॥

सीस फूल वर्णन ।

जगर मगर होत जमुना को जल कैधौं कोकनद कमनीय पूरन प्रभनि को । सुकवि रतन कैधौं राजत रतन वर कारी कुण्डलीस फनि ऊपर फवनि को । कैधौं सुरभान परभान भोरही को कैधौं उग्यो भौमतर दे तनूभव तरनि को । कैधौं प्रान प्यारी की सँवारी पारी पाटिन में सोहत सुभग सीस फूल लाल मनि को ॥ २११ ॥

अंग २ भूखन जराव के जगमगात चौकी चमकत छवि छाजे भाल गंड की । सारी जरतारी की किनारी सुकुमारि की है पसरी किरिन रुचि राजत प्रचंड की ॥ भाल के लखत बेंदी सोहत सोहाग ताको छत्र है छबीली लट लागी दुति दंड की । सीस फूल सीस दे विराजत दिनेस कैधौं सघन घन ऊपर उदै है मारतंड की ॥ २१२ ॥

सर्वाङ्ग वर्णन ।

चन्द कैसो भाग भाल भृगुटी कमान ऐसी मैन कैसे पैने सर नैननि बिलास है । नासिका सरोज गंध बाह से सुगंध बाह दाख्यो से दसन कैसो बीजुरी सो हास है। भाई ऐसी ग्रीवा भुज पान से उदर अरु पंकज से पाय गति हंस कैसे जास हैं। देखी है गोपाल एक गोपिका मैं देवता सी सोने सो सरीर सब सोंधे कीसी वास है॥२१३॥

कंज से चरन देवगढ़ी से गुलुफ सुभ कदली से जंघ कटि सिंह पहुंचत है। नाभी हैं गंभीर व्याल रोमावली कुंभ कुच भुज ग्रीव भाप कैसी ठोढ़ी बिलसत है ॥ सुख-चन्द बिम्बाधर चौंका चारु सुक नाक खंज मीन नैनन वंकाई अधिकत है। भाल आधो विधु भाग करन अमृत कूप वेनी पिकबैनी जू की भूमि परसत है॥२१४॥

अहिन खिजावत हैं मृगन लरावत हैं सुकन पढ़ा-वत हैं नेक ना टरत हैं। कबहू के संख पूरि संभु जू की सेवा करैं कबहूं के कुंड बूड़ि सिंहन धरत हैं॥ कबहूं के कदली के खंभ सो लपेटि जंघ कबहूं के कंज माथे राखि बहरत हैं । जा दिन तें न्हात चार आंख भई ता दिन तें भावरी सो भांति २ भावना करत है ॥ २१५ ॥

भूखन जराइन के पायन अनौट ओट कंचन अनूप रूप सांचेही की ढारी सी। घुघूरू पायल पर जेहर बि-

राजे और छाजे छुद्र घंटिका निहारि मति हारी सी। कंठ कंठमाल माथे बेंदी लाल लाल की है भाल की दिनेस दुति देखे लगे तारी सी। मनिमय प्यारी नख-सिख उजियारी निसिकारी नील सारी जगमगति दिवारी सी॥ २१६॥

दोहा।

मुख छबि निरखि चकोर अरु तन पानिप लखि मीन।
पद पंकज देखत भँवर होत नयन रस लीन॥ २१७॥

अंग सुगंध वर्णन—कवित्त।

कमल बदन कर नवन चरण कुच पूरण कुरंग मद दृगनि बिलास है। भृगुटी कुटिल कच मेचक सुगंध मई कुंद कलिका से दंत चंदन सो हास है॥ कुंकुम सरीर कुमकुमा नीको स्वेद नीर अम्बर को केसोदास अम्बर बिकास है। मन के रखन बिबि कैधौं इष्ट देवता अदृष्ट गति दूतिका कि सहज सुबास है॥ २१८॥

फूले है न सरद सरोज इहि समै कहूं फूले है न फूल फैली सौरभ कहाते हो। चंपक थलीन मिली मालतीन अवलीन केसर परसि पौन आयो ना तहांते हो॥ ओल्यो है न घनसार खोल्यो न कुरंगसार सौरभ अपार पारावार को जहां ते हो। मकम रसिक हम जानी लपटानी रानी आई रंगमहल तें मिलन उहां ते हो॥ २१९॥

जमुना के आगमन मारग में मारुतन भौरन की भीर लिपटे से लखि पाये हैं। संतन सुकवि सुख खानि पद्‌मिनि तेरे रूप के तरंगनि अनंग दरसाये हैं। बाहर कढ़न कहै तोसों है अयानी कौन लैहै बदनामी घेर घर २ छाये है। पटकी लपट लपटति ता दिना तें आज मानो उन गलिन गुलाब छिरकाये हैं॥ २२०॥

सुकुमारता वर्णन।

कंज दल बांवड़े पै कसकि धरति पाय जो पै कहीं जानो जात आग अंगनाई को। ताहि तुम कहत सु क्यौंन ल्याई कुंजन मे घरही में माने हर भौंर की अथाई को॥ और गुन कढ़ि कहां लौं कहौं लाल वाके वारने भयो है दिया गात की गोराई को। जहां २ मंजुल बदन बिकसात वाको तहां २ जान्यो जात जनम जुन्हाई को॥

सोरह शृङ्गार वर्णन।

मोतिन सों भरी माग सीस फूल टीको दिये वेसर तरौना छवि सारी जरतारी की। मोतिन को हार माल फूल के हमेल हैम कंकन जराउ छवि आरसी निहारी की॥ भरमी सुकवि कटि किंकिनी रसाल बाजे जेहर औ पायजेब सोभा सुखकारी की। बिछिया अनौट राजे सोरह सिंगार साजे मोह्यो मन मोहन को देखि दुति प्यारी की॥ २२२॥

बिछिया अनौट बांके घुघुरू जराय जरी जेहरि छबीली छुद्र घंटिका की जालिका । मुंदरी उदार पौंची कंकन और चूरी चारु कंठ कठमाल हार पहिरे गोपालिका ॥ बेनी फूल सीस फूल मांग फूल कर्नफूल खुटिला तिलक नीको मोती सोहै बालिका । केसोदास नील बास जोति जगमगि रही देह धरे स्याम संग मानो दीपमालिका ॥ २२३ ॥

कैधों यह केसव सिंगार को है सिद्धि किधौं भाग की सहेली कै सोहाग को सुहाव है । लाल २ भांतिन के प्रीतिही की अभिलाख पहिरे बनाय किधौं सोभा को सुभाव है ॥ जोबन की जाया किधौं माया मन मोहिबे की छाया किधौं लाज की कि लाज ही को भाव है । सारी जरतारी जगमगत सरीर कैधों भूखन जरावही की जोति को जराव है ॥ २२४ ॥

दोहा ।

संग्रह कियो अजान यह, रस ग्रंथन लै सार ।
छमिहो चूक सुजान पुनि, करिहो लै परचार ॥ २२५ ॥
संवत् जुग जुग अंक महि फागुन आनन्दकान्द ।
यह मनोज की मंजरी बिकसी हित मलिन्द ॥ २२६ ॥

इति श्री मनोजमंजर्य्यांचतुर्थ कलिका समाप्ता ।

घड़ियां बहुत बढ़ियां।

विदित हो कि अमेरिका की बनी हुई घड़ियां हमारे पास बिक्री के लिये मौजूद है हमारे कार्यालय में 'नेलसन' कम्पनी के घड़िये हैं जिन की मज़बूती और चाल की दुरुस्ती जगत में प्रसिद्ध है, इन में सेकण्ड की सूई भी रहती और सूइयों के चलाने की कल भी है तथा हर घड़ी के साथ एक कमानी और एक शीशा अधिक दिया जाता है कि टूटने फूटने पर काम आवे। घड़ी का केस भी बहुत उत्तम और मज़बूत बना है. मूल्य केवल १०) डाक महसूल और मनीआर्डर ॥) अर्थात् वेल्यूपेयेबल में १०॥) बैठगा दूसरे प्रकार की जेबी घड़ियां ७), ८) की भी हैं, ये भी चाल की उत्तम और मज़बूत हैं। जो महाशय घड़ी के साथ चेन भी चाहें स्पष्ट लिख भेजें कि रूपहला चाहिये या सोनहला, दाम ।) से १) तक है।

[illegible]